श्री सीमंधरस्वामीने वीनति रुपे

कागळ हुंडी पेठ परपेठ

अने

मेझर नामुं.



ले मुनि ज्ञानसुंदर

प्रकाशक,
श्री रत्न प्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला,
मु फलोधी, जि जोधपुर, मारवाड

भूमिका.



शासनप्रेमी अने वीरपुत्रो !

आजे हु हार्दिक रहस्य आपनी सन्मुख जाहेर करु छु जे महाशयो ! सूर, वीर, धीर थई विचारशो. लगभग घणा समयथी आपणा पोताना घरमा हानि थवा माडी. घरना चोरज चोरी करवा लाग्या घरफाटे घर जाय, एवुं नाटक थवा लाग्यु. तेनी साथेज बरोबर सावधान पुरुषो पण कटिबद्ध थई पोकार करता आव्या छे खूब जोर शोरथी आपणा समाजना सुधारको चेताव्या करे छे परतु घरना चोरो घरमाज गोंधाई रह्या छे एटले सर्वांशे निर्भय बनी शकातु नथी तो पण घणे भागे दीवो हाथमा लईने उभा रेवाथी घरना चोरनु जोर चाली शके नहि एटला माटेज आ साथे कागळ, हुडी, पेठ परपेठ अने मेजरनामु लखी दीवा जेवु अजवाणु करवाथी घरमा लुंट थती अटके छे अने श्री सीमधर स्वामी भगवान्ने आपणी खबर आपीने मनने शात करु छुं आपणा घरमा मुनिम–गुमास्ताओए परस्पर लडी जगडा करी अनेक उपद्रव करी नाख्या छे, शासनने चारणीनी पेठे चाळी नाख्यु छे, मूळ मार्गने घणी तरेहथी हानि करी नवा नवा रीवाजो दाखल करी खरी बाबतमा गुचवाडा उभा करी दीधा छे सत्यने भेळशेळ करी सामान्य प्रजामा कोलाहल मचावी दीधो छे, घणा समजु जीवोथी पण खुलासा न नीकळी

शके एवी प्रवृत्तिओ अने परपरा उभी करी छे, आ बधी भागगट सर्वांशे सुधारवी कठीन थई पडी छे घणा भव्य जीवो आवा गोटाळाथी कटाळी गया छे अने हवे शु करवु केम तरी पार थशु एवा धर्म सकटमा मुझाया करे छे मारी पण एवी स्थिति थई छे अने तेथीज आ विनीत पक्ष स्वीकारी विनती रुपे मारा विचारो सीमधर प्रभुनी सन्मुख उभा रही हाथ जोडी अत्यत नम्रभावे जाहेर रीते जणावी दीधा छे तेमा कोईनी साथे अभाव अप्रीतिनु कारण नथी. जे भला पुरुषो हशे ते सर्वे मारे माननीय छे अने जे भलाईथी वेगळा हशे ते सर्वनी साथे समभावे उपेक्षा राखु छु आ ग्रथ साद्यत वाची विचारी अपक्षपात दृष्टिथी दरेक भला पुरुषोए निर्णय करी लेवा प्रार्थना छे —लेखक

पुष्पांजली.

हे प्रभो दीनोद्धारक ! मारी शी दशा थई त्हारी पासे जन्म्यो नहि तेम चोथा आरामा त्हारो मार्ग मल्यो नहि अरेरे ! हे स्वामिनाथ ! आवा पाचमा आरामा भयकर कलिकाळमा मारो जन्म तेमा कुगुरु समागम त्याथी भागी त्हारा शुद्ध शासनमा दाखल थयो अने आगमशैली तपासी जोई तो जुदी जुदी समाचारी अने गच्छागच्छ मतामत जोई, हे स्वामिनाथ ! क्या त्हारो लोकोत्तर मार्ग अने क्या आ लौकिक प्रवाह—गाडरीओ प्रवाह ? हे करुणासागर ! क्या त्हारी वीतराग वाणी अने क्यां आ धर्म

वरनी वाणी ? हे मला भगवान् ! क्या पुन्यानुबंधीनी जैन शैली अने क्या आजे अनतानुबंधीनी प्रवृत्तिओ ? हे कृपानाथ ! दीनबन्धो ! हु खरेखर खेद पाम्यो मने बीजो कोई उपाय न सूझयो हे जगतारक ! में म्हारा आत्माने समजाववा माटे आपना पवित्र चरणकमळमा कागळ, हुडी, पेठ, परपेठ अने मेझरनामाथी प्रार्थना करी छे हे सर्वज्ञ भगवान् ! आप आप सर्व जाणो छो–देखो छो, तो पण हु एक अर्जदार तरीके अरजी करी म्हारा आखनां आसुओ रेडी पुष्पांजलि आपना चरणकमळमा शरणे रही म्हारु परम कल्याण करवा चाहु छु. हे अनाथना नाथ ! दीनबन्धो ! भक्तवत्सल भगवान् ! म्हारी अरजी स्वीकारी मने पवित्र करो–निर्भय करो ! शुद्ध श्रद्धा आपो ! सम्यक्‌दृष्टि, सम्यक् ज्ञान–दर्शन–चारित्र आपो. हे श्री सीमंधर भगवान् ! अधमोद्धारक ! जगत्तारक ! परम दयालो ! हवे कृपा करो मुजने तारो पार उतारो. अरजी स्वीकारो जयदेव ! जयनाथ ! जय वीतराग ! जय ! जय ! जय श्री सीमन्धर भगवान् ! जयविहरमान भगवान् जय ! जय !

त्वमेव सरणंदेव ! त्वमेव सरणं मम.
त्वमेव सरणं नाथ ! त्वमेव सरणं प्रभो !

—लेखक

मारा विचारो



अधमोद्धारक श्री सीमधर स्वामीने आ वीनतीरूपे कागळ-हुंडी–पेठ–परपेठ अने मेजरनामु बनावीने में मारा हृदयना विचारो रजु कर्या. अने तेमा (२०२) ठेकाणे आगम पाठना प्रमाण दाखल करी मारी दलीलो मजबूत करी मे शासनसेवा बजावी छे, सत्य अने असत्य ए बे भेळशेळ न थई जाय, ए खास ख्यालमा राखी आ प्रवृत्ति करी छे. आ एक बाबत भूलवा जेवी नथी के, भस्मग्रहनी मीठी असरथी शासनमा बे हजार वर्ष पर्यंत घणी हानि थई छे अने ते हानिमाथी घणा भाग्यशाली जैनाचार्यो बची गया छे छता पण केटलाक एवा पण शिथिलाचारी चैत्यवासी आचार्यो थया छे के जे शासनमा काटा खीला समान थया छे जेनी प्रवृत्तिओ जैन समाजने घणी खटके छे ते दूर करता पण पार आवतो नथी पेली काळी बीलाडीनी वार्ता अने " हारिततात्र भाजनम् " जेम घणी बीलाडीओ पेठी छे अने सत्य शोधवु मुशकील थयु छे आ प्रकरणमा मात्र मुखनी वातो नथी पण सिद्धातना पाठथी सत्य समजाववा कोशीश करी छे आराधक थोडा अने विराधक जीवो घणा होय छे तेथी घणानी देखादेखीमा बिचारा भोळा भद्रिक प्राणी घणी वखत फसाई जाय छे अने खोळने गोळ सरखा मानी पाछळथी जरुर पस्ताय छे अने केटलाक पासत्थाओ एम समझावे छे के आ दुढियामाथी अ वेला छे तेने

उत्सर्ग, अपवाद, परपरा, गुरुगम क्याथी होय एम ऊपनमा पाना सुधीनी कुयुक्तियो समळावी दे छे परिणाम शु आवे छे ते हवे फरीथी केवानु नथी. घणा कोलाहल करनारने जगत हवे बराबर पीछाणी शके छे हमेशां सत्यज बहार तरी आवे छे अने लोको बराबर मानी शके छे. लोको खाली वातोने अने कोरा पडितोने मानवाना नथी. ए तो हवे चारित्रने मान आपे छे कदाच एकाद प्रसगमा भूलथाप खाई जशे, परतु बीजी वार ठगाशे नहि

अमारी पक्की श्रद्धा छे के शासननो पुनरुद्धार मुनि महाराजो थीज थवानो छे अने तेवा मुनिराजो भारतभूमि उपर विचरे छे रत्न अने काचना टुकडा साथेज पड्या होय तो जोनारने सादी नजरे सरखा देखाय पण झीणी नजरे जेवाथी खरी वस्तुओ मळी शके छे–ओळखी शकाय छे. बाह्याडबरना चमकाथी काचना ककडा झवेरीओ सन्मुख हमेशां नापास थाय छे रग, ढग, चाल, चल्गत, चाळा, चेष्टा, टापटीप, वडे ढोगी, धर्मधुर्त जरुर जुदोज पडी जाय छे अने साचा सत पुरुषो खरी कसोटी उपर दीपी नीकळे छे

एक वात समजवा जेवी छे ते आ छे के, आगमोमा जे बाबतनु नामनीशान न होय अने पछीना ग्रथोमा आग्रह–कदाग्रह रुपे तथा गच्छ व्यवहार रुपे घर घालीने बेठा . होय तेवा दाखलाओ मळी शके छे तीन थूई, चार थूई, पाच कल्याणिक, छ कल्याणिक–चोमासामा अधिक मास ने पर्युशणा–लोकिक टीपणा मुजब अर्धु मानवु ने अर्धु न मानवु करेमीभते त्रणवार, एकवार, पेला के पछी

श्रावकोने मुहपत्ति चरवले, जुदा जुदा गच्छोनी जोगविधि–उपधान विधि तथा प्रतिष्टा विधि, अजनशलाका, देवद्रव्य–सातक्षेत्र द्रव्य, मुपना पारणा, गोठी, पूजारी, देवकी दुकानो, तीर्थोनी पेढी, मुहुपत्ति बाधवी तथा वखाण वखते काने चडाववी इत्यादि अनेक प्रवृत्तिओ दाखल थई छे के जे भव्य जीवोने खास विचारवा जेवी छे मोक्षनी लुटालुट, अने दुकानदारी वधती जाय छे साधुओ एक बीजाने जुठा मानवा लाग्या एक बीजाना बापदादाने गालो भाडवा लाग्या "शकिए निस्संकति निस्संकिए सकति" ज्या शका जेवुं देखाय त्या नि शकपणे करवा लाग्या ज्या नि शक छे त्या अनेक शकाओ काढवा लाग्या परिणामे आ बाबतोनो छेवटनो सरवाळो गुचाई गएला सूतरना कोकडा पेठे, काढवो उदरने खोदवो डुगर– व्यर्थ पाणी वलोवा जेवु निष्फळ देखाय छे श्रीमान् उपाध्यायजी यशोविजयजी महाराज तथा प सत्यविजयजी गणिए घणो प्रयत्न कर्यो छे, अने तेथी परिणाम घणु सारु आव्यु छता पण पाछळथी भेळसेळ पेसती गई आ प्रसगे एक सूचना करवानी छे के–एक क्रियाउद्धारक मुनि मडल स्थपाय, जैन महा सभा स्थपाय, जैन विश्वविद्यालय स्थपाय, जैन सुलेह कमीटी सभा स्थपाय, जैन जाति मदद फड कायम थाय तो केवु सारु

शासनदेवता सद्बुद्धि आपो.

आ तमाम प्रकरणो आदिथी अंत सुधी वाची विचारी मनन करो कई पण विरुद्ध विवेचन थयु होय तो मिच्छामि दुक्कड आपी क्षमा चाहु छु —

लेखक

प्रार्थना

आ विनति लखवामा मारो हेतु ए नथी के हालमा भरत क्षेत्रमा कोइ साधु नथी. तेमज कोइने हलका पाडवानी कोशिष नथी. मारी मान्यता छे के शासननो आधार मुनिमडळी उपर छे, तथा समाजनी लाभ हानिनी जोखमदारी पण मुनिमडळी उपर रहेली छे चालु समयमा भारत भूमिमा अनेक मुनिमतगजो विचरे छे तेओना पवित्र उपदेश द्वारा समयानुसार अनेक सुधारा थया छे, थाय छे अने थता रहेशे श्री वीर शासन एकवीश हजार वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न स्वरूपे चालशे ते महा मुनिमंडलना प्रतापेज.

सखेद लखवु पडे छे के रत्न बहु कीमती छता पण काचना टुकडाओ साथे भेळसेळ थवाथी झवेरी शिवाय कोइ कींमत करी शकता नथी बाकी साधारण जनसमुह तो बधाने काचनो देखाव दे छे एटला माटेज काच अने रत्नो जुदा पाडवानी जरुर छे. कह्यु छे, के—"मणिर्लुठति पादाग्रे, काचः शिरसि धार्यते; क्रयविक्रय वेलायां, काचः काचो मणिर्मणिः । मतलब के रत्न पगे रोळाता होय अने काच माथे बाध्यो होय परतु परीक्षक पासे काच ते काचज बनवाना अने रत्न ते रत्न वस्तुज छे—एक अमूल्य चीज छे बन्ने ज्यासुधी अलग अलग बतावामां न आवे त्यासुधी भाद्रिक माणसोनी रत्न तरफ आदरभावना—सत्कारबुद्धि

न थाय. केटलाएक बनावटी रत्नो पण लोकोमा जोवामा आवे छे. उपरथी सारी टापटीप करी मखमलना चळकदार कपडामा लपेटी लोकोने रत्नना नग बतावबामा आवे छे जे खरी रीते साचा रत्ननी मश्करी करवा जेवु थाय छे—साचानी प्रतीत उठाडवा जेवु बने छे रत्न अने काच बन्ने साथेज रह्या होय तो समाजनुं भलु करी शके नहि, जैन समाजमा परीक्षको गण्या गाठ्याज होय छे काचना ककडाओ दृष्टिरागी अने लालचु लोकोने जेम तेम समजावी पैसा एकठा करावे. कदाच एकाद दावपेचमां आवी जाय, परतु तेरलाख जैन जीवोनु कल्याण करावी न शके समाजमा अत करणनी धर्म लागणी—धर्म तत्वज्ञान—विषय कषायथी निवृत्ति—जिनाज्ञा आराधक ए तो घणा दूरज समजवा. ज्यारे जिनाज्ञा तरफ दृष्टि करशु तो भले मोटा मोटा नामधारक व्याख्यानमा—उपदेशमा कथनी कथता होय, परतु पोताना ज मडळमा सुखसयम यात्रामा शुभ प्रवृत्ति न होय, तो पछी समाजनी सुधारणा कयाथी करी शकाय! पोथीमाना रींगणा जेवु धर्मोपदेशो जन रजनाय। बीजाने कहे खोटो संसार, पोते चाटे वारवार आवा काचना टुकडाओथी समाजने घणु सहन करवु पडे छे, अने तेवाओथी चेतीने चालवु हितकर छे

लेखक



प्रार्थना

आ विनति लखवामा मारो हेतु ए नथी के हालमा मर
क्षेत्रमा कोइ साधु नथी, तेमज कोइने हलका पाडवानी कोशि
नथी. मारी मान्यता छे के शासननो आधार मुनिमंडळी उपर
तथा समाजनी लाभ हानिनी जोखमदारी पण मुनिमंडळी उ
रहेली छे चालु समयमा भारत भूमिमा अनेक मुनिमतगजो वि
छे तेओना पवित्र उपदेश द्वारा समयानुसार अनेक सुध
थया छे, थाय छे अने थता रहेशे. श्री वीर शासन ए
वीश हजार वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न स्वरूपे चालशे ते
मुनिमंडलना प्रतापेज.

सखेद लखवु पडे छे के रत्न बहु कीमती छता पण का
टुकडाओ साथे भेळसेळ थवाथी झवेरी शिवाय कोइ कींमत
शकता नथी बाकी साधारण जनसमुह तो बधाने काचनो दे
दे छे एटला माटेज काच अने रत्नो जुदा पाडवानी जरुर
कह्यु छे, के—"मणिर्लुठति पादाग्रे, काचः शिरसि धा
क्रयविक्रय वेलायां, काचः काचो मणिर्मणिः । मतलब के
पगे रोळाता होय अने काच माथे बाध्यो होय परतु प
पासे काच ते काचज बनवाना अने रत्न ते रत्न वस्तुज छे-
अमूल्य चीज छे बन्ने ज्यासुधी अलग अलग बतावामां न
त्यासुधी भाद्रिक माणसोनी रत्न तरफ आदरभावना—सत्व

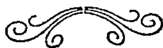
मेजरनामानी अनुक्रमणिका



आ विनतिरुप कागळ, हुंडी, पैठ, परपैठ अने मेझरनामानी अंदर आगमोना प्रमाण नीचे प्रमाणे छे.



संख्या	आगमना नाम	ढाळ	गाथा.
१	श्री उववाइजी सूत्र	२	५
२	श्री महानिशीथ सूत्र	३	
३	श्री बृहत्कल्प सूत्र	४	१
४	श्री व्यवहार सूत्र	४	५
५	श्री आवश्यक सूत्र	४	६
६	श्री दशाश्रुत स्कंध सूत्र	४	६
७	श्री व्यवहार सूत्र	४	११
८	श्री निशीथ सूत्र	४	११
९	श्री व्यवहार सूत्र	४	१३
१०	श्री निशीथ सूत्र	५	४
११	श्री स्थानांग सूत्र	५	११
१२	श्री व्यवहार सूत्र	५	११
१३	श्री सूयगडांग सूत्र	६	१
१४	श्री महानिशीथ ,,	६	१
१५	श्री अगचुलिया ,,	६	१
१६	श्री उत्तराध्ययन ,,	६	१
१७	श्री भगवती ,,	६	२



४२	श्री दशवैकालिक	,,	९	१
४३	श्री भगवती	,,	९	२
४४	श्री भगवती	,,	९	४
४५	श्री समवायाग	,,	९	५
४६	श्री पिंडनिर्युक्ति	,,	९	५
४७	श्री सूयगडाङ्ग	,,	९	६
४८	श्री निशीथ	,,	९	७
४९	श्री स्थानाङ्ग	,,	९	९
५०	श्री स्थानाङ्ग	,,	९	१०
५१	श्री दशवैकालिक	,,	९	१५
५२	श्री उत्तराध्ययन	,,	९	१५
५३	श्री दशवैकालिक	,,	९	१८
५४	श्री कल्प	,,	९	१८
५५	श्री उत्तराध्ययन	,,	९	१९
५६	श्री आचाराग	,,	९	२४
५७	श्री भगवती	,,	९	२६
५८	श्री आवश्यक	,,	९	२८
५९	श्री दशवैकालिक	,,	९	३१
६०	श्री दशवैकालिक	,,	९	३२
६१	श्री निशीथ	,,	१०	१
६२	श्री दशवैकालिक	,,	१०	१
६३	श्री बृहत्कल्प	,,	१०	१
६४	श्री निशीथ	,,	१०	४
६५	श्री दशवैकालिक	,,	१०	५

१८	श्री पन्नवणा	,,	६	२
१९	श्री नंदि	,,	६	३
२०	श्री व्यवहार	,,	६	९
२१	श्री भगवती	,,	६	१०
२२	श्री अणुत्तरोववाइ	,,	६	१०
२३	श्री अणुत्तरोववाइ	,,	६	१०
२४	श्री व्यवहार	,,	६	११
२५	श्री भगवती	,,	६	१२
२६	श्री समवायाग	,,	६	१९
२७	श्री अन्तगढदशाग	,,	६	२०
२८	श्री बृहत्कल्प	,,	६	२३
२९	श्री व्यवहार	,,	६	२५
३०	श्री व्यवहार	,,	६	२७
३१	श्री महानिशीथ	,,	७	८
३२	श्री सूयगडाङ्ग	,,	७	
३३	श्री दशवैकालिक	,,	७	
३४	श्री महानिशीथ	,,	७	
३५	श्री स्थानाग	,,	८	१
३६	श्री बृहत्कल्प	,,	८	१
३७	श्री उत्तराध्ययन	,,	८	२
३८	श्री स्थानाग	,,	८	८
३९	श्री दशवैकालिक	,,	८	८
४०	श्री ज्ञाता	,,	८	१५
४१	श्री कर्मग्रंथ	,,	८	२५

९०	श्री निशीथ	,,	१२	१०
९१	श्री सूयगडाङ्ग	,,	१२	१२
९२	श्री भगवती	,,	१२	१७
९३	श्री उत्तराध्ययन	,,	१२	२८
९४	श्री आचाराग	,,	१२	२८
९५	श्री दशवैकालिक	,,	१२	३०
९६	श्री आचाराग	,,	१३	१
९७	श्री आचाराग	,,	१३	३
९८	श्री बृहत्कल्प	,,	१३	३
९९	श्री उत्तराध्ययन	,,	१३	७
१००	श्री आचाराग	,,	१३	१०
१०१	श्री दशवैकालिक	,,	१३	१४
१०२	श्री समवायांग	,,	१३	१४
१०३	श्री निशीथ	,,	१३	१४
१०४	श्री ज्ञाता	,,	१४	१
१०५	श्री स्थानाङ्ग	,,	१४	२
१०६	श्री निशीथ	,,	१४	३
१०७	श्री बृहत्कल्प	,,	१४	४
१०८	श्री निशीथ	,,	१४	५
१०९	श्री बृहत्कल्प	,,	१४	८
११०	श्री व्यवहार	,,	१४	८
१११	श्री व्यवहार	,,	१४	१४
११२	श्री आवश्यक	,,	१४	१५
११३	श्री प्रश्नव्याकरण	,,	१५	२

६६	श्री निशीथ	,,	१०	५
६७	श्री दशवैकालिक	,,	१०	५
६८	श्री आवश्यक	,,	१०	७
६९	श्री कल्प	,,	११	१
७०	श्री गच्छाचार पयन्ना	,,	११	१
७१	श्री आचाराग	,,	११	१
७२	श्री निशीथ	,,	११	१
७३	श्री बृहत्कल्प	,,	११	२
७४	श्री उत्तराध्ययन	,,	११	२
७५	श्री दशवैकालिक	,,	११	३
७६	श्री निशीथ	,,	११	४
७७	श्री पन्नवणा	,,	११	४
७८	श्री निशीथ	,,	११	१०
७९	श्री प्रश्नव्याकरण	,,	११	१०
८०	श्री निशीथ	,,	११	१२
८१	श्री आचारांग	,,	११	१३
८२	श्री अनुयोगद्वार	,,	११	१७
८३	श्री निशीथ	,,	११	२४
८४	श्री ओघनिर्युक्ति	,,	११	२८
८५	श्री आचाराग	,,	११	३३
८६	श्री निशीथ	,,	११	३३
८७	श्री आचाराग	,,	१२	३
८८	श्री महानिशीथ	,,	१२	९
८९	श्री आचारांग[1]	,,	१२	१०

९०	श्री निशीथ	,,	१२	१०
९१	श्री सुयगडाङ्ग	,,	१२	१२
९२	श्री भगवती	,,	१२	१७
९३	श्री उत्तराध्ययन	,,	१२	२८
९४	श्री आचाराग	,,	१२	२८
९५	श्री दशवैकालिक	,,	१२	३०
९६	श्री आचाराग	,,	१३	१
९७	श्री आचाराग	,,	१३	३
९८	श्री बृहत्कल्प	,,	१३	३
९९	श्री उत्तराध्ययन	,,	१३	७
१००	श्री आचाराग	,,	१३	१०
१०१	श्री दशवैकालिक	,,	१३	१४
१०२	श्री समवायाग	,,	१३	१४
१०३	श्री निशीथ	,,	१३	१४
१०४	श्री ज्ञाता	,,	१४	१
१०५	श्री स्थानाङ्ग	,,	१४	२
१०६	श्री निशीथ	,,	१४	३
१०७	श्री बृहत्कल्प	,,	१४	४
१०८	श्री निशीथ	,,	१४	५
१०९	श्री बृहत्कल्प	,,	१४	८
११०	श्री व्यवहार	,,	१४	८
१११	श्री व्यवहार	,,	१४	१४
११२	श्री आवश्यक	,,	१४	१५
११३	श्री प्रश्नव्याकरण	,,	१५	२

अर्थनी दिये देशना, ओलवे धर्मना ग्रन्थ रे;
परम पुरुषना प्रगट चोर थी, किम वहे धर्मनो पंथ रे.
कुगुरुनी वासना पासमां, हिरण परे जे पड्या लोक रे***
ज्ञान दर्शन चरण गुण विना, जे करावे कुलाचार रे;
लूटे तेने जन देखतां, किहां करे लोक पोकार रे.
जे नवी भव तर्या निर्गुणी, तारसे कीण परे तेह रे;
दोकडे कुगुरु ते दाखवे, शुं थयुं ए जग शल रे ++।×
विषय रसमा गृही माचीया, नाचीया, कुगुरु मदपूर रे ॥
धूम धामे धमा धम चली, ज्ञान मारग रह्यो दूर रे ॥
कलहकारी कदाग्रह भर्या, थापता आपणा बोल रे
जिन वचन अन्यथा दाखवे, आज तो वाजते ढोलरे ॥

अरे आ उपाध्यायजी एटलाथीज शान्त न थया हता, पण तेओनी पोकार अत्रे कोईए न सामळी त्यारे तेओश्रीने साडा त्रण सो गाथानी हुन्डी श्री सीमधर स्वामी उपर लखवी पडी हती, तथा सवासो गाथानु स्तवन लखवु पड्यु हतु अने एक स्वाध्याय तो बापाजीए एवी लखी हती के ते वाचता रुवाटा उभा थई जाय, ते शु महात्मा कोईनी निन्दा करता हता एम कही सकाय ? नहीं नहीं शासननी पडती दशा तेओश्रीथी जोवाई नहीं अने तेओने ज्यारे घणाज कांटा लग्या हशे, त्यारेज एवा उद्गारो निकळ्या होय एम जणाय छे, अने आ उद्गारोथी दुराचारीओनो दुराचार दूर करी शासनने लागतु कलंक अटकावानोज तेमनो हेतु होवो जोईए। अरे महेरबान!

अने उदारता थी कहवा दो के परमात्मा वीरप्रभु पण दुराचारी-ओना पक्का शत्रूज हता, आ वात तेओ श्रीना सिद्धान्तथी झलकी आवे छे. जुवो सुयगडाग आदि सूत्र.

सज्जनो ! दुराचारनु खडन करवु आ कोईनी निन्दा नथी, पण सदाचारनु मंडनज छे, दुराचारनु खडन अने सदाचारनु मडन आज काल थतु नथी, पण आ प्रवृत्ति पूर्व महाऋषि-ओथीज चाली आवे छे, एटले नवीन नथी.

आत्मबधुओ ! आपणे अत्यार सुधी एम मानता हता के—खरा हो के खोटा पण आपणा गुरुदेव छे तेओना दुराचार ज्ञाहेरमा मुकवाथी आपणीज हासी थशे आ आपणा विचारो मोटा भूल भरेला हता अने आवा खोटा विचारोथी आपणे आज सुधी केटला मोटा नुकसानमा उतरी पड्या छीये.

आजे लोको घरमा गाममा समाजमा के देशमा कचरोके सडो होय ते बाहर फेंकी देवा सीखी गया छे अने एज तेओनो खरो उन्नतिनो मार्ग छे, त्यारे जैनोए एवी गभीर भूल करी अग्निने रूमा शामाटे संघरी राख्या हशे ?

केटलाक अज्ञान लोको पासत्थाओना लपेटामा आवेला अने रूढीना गुलामो बनी एम कहे छे के आपणा गुरु देवोना दोषो गमे तेटला नुकसानकारी होय तो पण प्रकाशमा नज लाववा जोईये, अने जो ते दोषो प्रगट करशो तो शासननो उच्छेद थशे, धर्मनो ध्वस थसे, अने तेथी गुरुना अभावे धर्मोपदेश कोई संभला

जशे नहि, ते शिवाय विचारी भोली बेनो उपधानादि क्रिया कोनी पासे करशे ? एटले भाई चुपचाप बेसी रहो !

महानुभावो ! आवा दुराचारी गुरुओथी नथी रहेतु शासन के नथी रहेतो धर्म, अने आवा झघडाचारीओ के पोते रागद्वेषना कीचडमा खुचेलाना उपदेशथी समाजनो सुधारो थवानो नथी अगर खुल्ला दिलथी कहो तो जैन समाजने क्लेश, कदाग्रह, धर्मभेद, अने पुरुषार्थहीन बनाववामा अग्रेसर कारण होय तो आ दुषित गुरुओज छे बन्धुओ ! आजे पोप, पादरी, मठधारी, महान्त के भट्टारकोने दूर मुकवाथीज लोको उन्नति एवो शब्द काने सामलवा सीख्या छे

कदाच आपणे आपणा गुरुओना छता दोषोने रत्ननी पेठे तीजोरीमा मुकीये, पण ज्यारे अन्य समाजना लोको प्रसिद्ध पेपरोमा "एक जैनाचार्यनो अत्याचार" एवा लेखो लखे तेने हजारो नहि पण लाखो विद्वानो वाचे त्यारे शु जैनोने सरमावा जेवु नथी ? एक नहीं पण एवा गामो गाम हजारो दाखला तैयार छे, ज्यारे जैन पत्र अने जैन धर्म प्रकासक जेवा महत्त्ववाला पेपरो वखतो वखत पोकार कर्या करे छे के—आज काल साधुओने परिग्रहना पोटला वधी पड्या छे, अने ग्रहस्थीओने त्या मुकवानो प्रचार घणो वधी पड्यो छे इत्यादि, त्यार पछी एवा सडेला थामलाओने मकानना आधारभूत कहेवा ? नाहिज कहेवा, माटे एवा थामला ओने अज्ञान के दृष्टि रागथी निर्ग्रन्थ कहेवा ते महा मोहनु कारण

गई छे तेवा अनाचारिओ थी हजार हाथ दूरज रहेवुं कल्याणकारी माने छे, तेमज जे महान पुरुषो पोतानु जीवन समाज हितार्थे अर्पण करेछे ते सदाचारीओने माटे विद्वानोनी श्रद्धा मजबूत थती जाय छे

आ वात स्वभाविक छे के चोरोने चादणु गमतु नथी, तेमज दुराचारिओने सदाचारनु व्याख्यान केवी रीते गमे ? ज्यारे एमज छे त्यारे मेजरनामुं तो दुराचारीओने माटे एक मोटो कुहाडोज छे, तो पछी बिचारा पासत्थाओ कलकलता कालजाथी पोक पाडे तेमा नवाई शी अने पासत्थाओना पक्षकार खोटा २ लेख लखी कोलाहल मचावीने पासत्थाओना उतरता आसुने लुछे अथवा दाजता हृदयने शान्त पाडे तो भले-

हु छाती ठोकीने कहीश के ज्यासुधी अमारा मेजरनामामा आवेला (२०३) आगमोना प्रमाण ते असत्य करी न बतावे त्या सुधी कोईपण विद्वान् मेझरनामाने असत्य न मानी शके !

पाठको ! जरा ध्यान राखशो के वस्तु गमे तेवी होय पण पोतानी मर्यादामा होय त्यासुधीज सारी कहेवाय छे, तेमज लेखक पण गमे तेवा होय तो पण पोतानी मर्यादामा रहीनेज लेख लखे त्यारेज दुनिया तेनी कीमत आकी शके छे, अत्रे अमे एटलुज कहीशु के मेजरनामु अने तेना प्रतिपक्षीओना लेखोने - [illegible] खरे खरु लखाण जणाई आवशे

मेजरनामामा मुख्य २ [illegible]

आगमोना प्रम[illegible]

चालती धमालथी थतु शासनने नुकशान ने तेना कारण दर्शाव्याछे, तेनी साथेज अमे पण वारवार ख्याल राखता आव्या छीए के अमारा लेखथी पासत्थाओने पुष्टि न मळे, तेमज छती क्रियानुं निषेध पण न थाय, एटलुंज नहीं पण उत्सर्ग, अपवाद, अने समयानुसारना दाखला पण साथेना साथेज आपता आव्या छीये आटलु, छता आ मेजरनामुं पासत्थाओने वज्रपात जेवुं शा माटे थई पडयु हशे, ते अमे समजी शक्ता नथी

मेझरनामाना प्रतिपक्षमा पडदा पाछल रही त्रण निर्नामा लेख बाहर पड्या छे (१) जैनपत्रना अंकमा "मेझरनामा नामजूर" (२) श्री श्रेयस्कर मडल तरफथी हेन्डबील (३) एक ३२ पृष्ठनी चोपडी तेना योजक केशवलाल डी शाह अमदावाद थी निकल्यु छे आ त्रणे लेखोना लेखक गृहस्थ होय के कोई भेषधारी होय ते तपासवानी अमारे जरुरत नथी, परन्तु ते लेखना अन्दर जे गीत गाया छे तेज जोवाना छे आ त्रणे लेखोमा वधारे महत्ववाळो बीषय तो आ छे के तमे मेझरनामु लखवा बाहर पड्या छो परन्तु तमे ढूंढीयामा केना शिष्य हता ? संवेगी मा क्यारे आव्या ? दीक्षा कोनी पासे लीधी ? तमारु नाम ज्ञान सुन्दर कोणे आप्यु ? इत्यादि

लेखक लखेछे के आ प्रश्नो नो पहेला उत्तर आपो अने पछीज बीजाना उपर लेख लखनो, अर्थात् पछी मेझरनामु लखनो

अहो ! आ केवु आश्चर्य ? विद्वानो विचार करी शके छे के

आ पुछेला प्रश्नोंने अने मेझरनामाने शुं सबंध छे ? अगर एमज होय तो धारा सभामा एक आवो कायदो पसार कराववो जोईये के अमुक दुनीयामाथी आवेलो होय, अमुक दिवसे आव्यो होय, अमुकनी पासे दीक्षा लीधी होय, अमुक व्यक्ती ए नाम आप्यु होय, अमुक रंगमां होय, केटलो लांबो पहोलो होय, साधु होय के गृहस्थ होय अने अमुकनी रजा होय तोज सत्य वात लखी शके.

याद राखशो के ज्या सुधी आवो कायदो जैनोमां प्रसार न थाय त्या सुधी आ स्वतत्र विचार वाला विद्वानो सत्य वात दुनीयानी सन्मुख जाहेर करवामा कदी पण पाछा हटशेज नहि.

महाशयो ! ध्यानमा राखसो हवे एवो जमानो नथी के एक बीजाना विचारोने कोई दबावी शके अथवा आडा अवला प्रश्नो करीने एक बीजा ने हलको पाडी शके ज्यारे अमारी उपर मोटा २ आचार्यो, पन्यासो अने साधुओना कागल मोटा मोटा विशेपणो वाला थोकबन्ध आव्या, ते वखते उक्त प्रश्नो केम नथी पूछ्या,तेमज हुं ज्यारे साथमा रहेतो हतो त्यारे पण आ प्रश्नो पुछवामा नथी आव्या, त्यारे आ ढोल जेटली पोल खोलवा वालु मेझरनामु वाचीनेज आ प्रश्नो पुछवामा आव्या छे ? तेनो अर्थ विद्वानो पोतानी मेलेज समझी सकशे, परन्तु एटलु तो याद राखसो के हुं तमारा चोपडामा साधु तरीके नाम मढावा आवु त्यारेज तमारे तेवा प्रश्नो करवानो हक्क छे. ज्यारे हु एक शासन सेवक तरीके ओलखाववा चारु छु

महीना सुधी पेपरो द्वारा चर्चा चलावी छे, तथा आज सुधी ७६००० चोपडीयो देशोदेशमा शासन सेवा बजावी रही छे तथा म्हारी दीक्षा अने म्हारु नाम कई व्यक्तीथी छानु छे के तमने प्रश्न करवो पड्यो ?

दरेक लेखकने भूलवु न जोईये के आज गमे तेवा विचारो पब्लीकमा कोई पण व्यक्ती मुकी शके छे पछी सत्यासत्यनो निर्णय करवो विद्वानोनी विचारश्रेणी परज छे, तो पछी एवा नबलाईना प्रश्नो करी पोते हासीना पात्र शा माटे बनो छो !

हवे बीजा मडलना हॅन्डबिल तर्फ जोई शु ! तो जे मडलनो नाम श्रेयस्कर राखवामा आव्युं तेमा केटली योग्यता छे अने तेना साथेज मडलनु हैन्डबिल जोतामा आवे तो ते मंडलनी केटली कींमत मुंकाय ते अमे कही सक्ता नथी।

मंडले जे प्रश्नो कर्या छे तेमा पण तेज गीत गाया छे के दूढीया मार्गी आवेल छे अने कोना पासे दीक्षा लीधी इत्यादि तेना उत्तरमा अमे उपर लखी आल्या छीये अने विस्तारथी जोवु होय तो मेझरनामानी ढाल ३० मी जुवो.

हु पूछु छु के आ हॅन्डबिल पहेला मेझरनामु बाहर पडी गयु हतु अने हॅन्डबिलना तमाम प्रश्नोना उत्तर-सविस्तारथी तेमा आवेला होवा छना आ कागलीया शा माटे काला करवामा आल्या हशे ?

आ पुछेला प्रश्नोने अने मेझरनामाने शु सबंध छे ? अगर एमज होय तो मारा सभामा एक आवो कायदो पसार कराववो जोईये के अमुक ढूंढीयामाथी आवेलो होय, अमुक दिवसे आव्यो होय, अमुकनी पासे दीक्षा लीधी होय, अमुक व्यक्ती ए नाम आप्यु होय, अमुक रगमों होय, केटलो लाबो पहोलो होय, साधु होय के गृहस्थ होय अने अमुकनी रजा होय तोज सत्य वात लखी शके.

याद राखशो के ज्या सुधी आवो कायदो जैनोमा प्रसार न थाय त्यां सुधी आ स्वतत्र विचार वाला विद्वानो सत्य वात दुनीयानी सन्मुख जाहेर करवामा कदी पण पाछा हटशेज नहि.

महाशयो ! ध्यानमा राखसो हवे एवो जमानो नथी के एक बीजाना विचारोने कोई दबावी शके अथवा आडा अवला प्रश्नो करीने एक बीजा ने हलको पाडी शके ज्यारे अमारी उपर मोटा २ आचार्यो, पन्यासो अने साधुओना कागल मोटा मोटा विशेषणो वाला थोकबन्ध आव्या, ते वखते उक्त प्रश्नो केम नथी पूछ्या, तेमज हुं ज्यारे सायमा रहेतो हतो त्यारे पण आ प्रश्नो पुछवामा नथी आव्या, त्यारे आ ढोल जेटली पोल खोलता चालु मेझरनामु वाचीनेज आ प्रश्नो पुछवामा आव्या छे ? तेनो अर्थ विद्वानो पोतानी मेलेज समझी सकशे, परन्तु एटलु तो याद राखसो के हु तमारा चोपडामा साधु तरीके नाम मढावा आवु त्यारेज तमारे एवा प्रश्नो करवानो हक छे. ज्यारे हु एक शासन सेवक तरीके ओळखावबा चाहु छु

महीना सुधी पेपरो द्वारा चर्चा चलावी छे, तथा आज सुधी ७६००० चोपडीयो देशोदेशमां शासन सेवा बजावी रही छे. तथा म्हारी दीक्षा अने म्हारु नाम कई व्यक्तीथी छानु छे के तमने प्रश्न करवो पड्यो ?

दरेक लेखकने भूलवु न जोईये के आज गमे तेवा विचारो पब्लीकमा कोई पण व्यक्ती मुकी शके छे पछी सत्यासत्यनो निर्णय करवो विद्वानोनी विचारश्रेणी परज छे, तो पछी एवा नबलाईना प्रश्नो करी पोते हासीना पात्र शा माटे बनो छो !

हवे बीजा मडलना हॅन्डबिल तर्फ जोई शु ! तो जे मडलनो नाम श्रेयस्कर राखवामा आव्युं तेमा केटली योग्यता छे अने तेना सायेज मडलनु हैन्डबिल जोवामा आवे तो ते मंडलनी केटली कीमत मुकाय ते अमे कही सक्ता नथी

मंडले जे प्रश्नो कर्या छे तेमा पण तेज गीत गाया छे के ढूंढीया मार्थी आवेल छे अने कोना पासे दीक्षा लीधी इत्यादि तेना उत्तरमा अमे उपर लखी आव्या छीये अने विस्तारथी जोवु होय तो मेझरनामानी ढाल ३० मी जुवो

हु पूछु छु के आ हॅन्डबिल पहेला मेझरनामु बाहर पडी गयु हतुं अने हॅन्डबिलना तमाम प्रश्नोना उत्तर-सविस्तारथी तेमा आवेला होवा छता आ कागलीया शा माटे काला करवामा आव्या हशे

तपतेलादि करावी पैसा लेवा, उजमणाना माल लेवा, साधुओन उपाश्रयमा अठाई महोत्सव करावबा, रात्रे दीवा राखवा, आचार्योने मूर्तिओ जिन चैत्योमा स्थापवी, अने पोत पोताना जुदा २ उपाश्रयम पेटी पटारा अने पोतानो सिक्का इत्यादि राखवु ते आगमवादी पं महाव्रतधारी मुनि मतगजोनी क्रिया नथी, परन्तु निगमवादी, चैत्यवासी शिथिलाचारी, सुखशिलीयाओनीज क्रिया छे एने माटे अमे अत्रे वधा विवेचन नथी करता, कारण अमोए थोडा दिवसोमाज ए

प्रपंच नामुं

लखवानु धार्यु छे, अने जे मेझरनामानी अन्दर केटलीक वातें मूलथी लखीज नथी, तेमज केटलीक सूचना मात्र लखी छे, तेओनी सारी टीका, टीपणी, नाम, गाम, साल, सम्मत सविस्तार लखवामा आवसे, तेथी आपनी जिज्ञासा पुरी थशे माटे अमे अमारा पाठकोने थोडा दिवसना माटे धैर्य राखवानु निवेदन करीये छीए, बनता सुधी कार्य शीघ्र करवामा आवसे.

अमे त्रणे निर्नामा लेखोना लेखकोने सचोट सूचना ... छीए के हवे पडदा पाछळ रहेवानो जमानो नथी, मेदानमा आ... अने सत्यासत्यनो निर्णय करी स्व अने परनुं कल्याण करो.

इत्यलम्.

लेखक,
ज्ञानसुन्दर.



श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ।

श्री सीमंधर परमात्माने वीनती रुपे कागल, हुंडी, पैठ, परपैठ

अने

मेझर नामो.

प्रथम कागल

(संक्षेप मुद्दासर वातो)

सुणो चदाजी, ए देशी ।

सुणो करुणानिधि, कागळ आ लखी भेजु तेने वाचो,
जे प्रेम धरी, भरतक्षेत्रनी वातो, हृदये जाचो–ए देशी.

महा विदेह क्षेत्र अति भारी छे, पुष्कळावती विजया सारी छे,
पुंडरीगिणी नगरी थारी छे, धणी अमारो केवल धारी छे. सुणो० १
भरतनी वदना लेजोजी, कागळ पर चित्त देजोजी,
सुर भक्तिमा मत रीझोजी, उपकार गरीब पर कीजोजी. सुणो० २
चउ संघ गुणनी खाणो छे, पण भरतनी वातो जाणो छे,
शुं लखुं नहीं परिमाणो छे, थोडामा घणु ए पीछाणो छो. सुणो० ३
दुकानें आपनी चाले छे, चोरें चारे दिशि महाले छे;
दिन दिन घाटो घाले छे, पण हजु काम काइ थाळे छे. सुणो० ४
पोलीस मालें उठावे छे, वळी चोर चोर करी धावे छे,
वाडं क्षेत्रने खावे छे, ए न्याय भरतमा पावे छे सुणो० ५
मुनिमें गुमास्ता तेवा छे, ते पण चोरो जेवा छे,
छोडी दुकाननी सेवा छे, ते खाय माल नित्य मेवा छे सुणो० ६
वरमां पुरो तोटो छे, माथे खरचो अति मोटो छे,
पुरुपार्थतणो पण खोटो छे, तेथी पुण्य अहींथी छेटो छे. सुणो०
श्वेतावर दिगबरना, झवडा गच्छ मतांतरना,
स्थानकवासी ढुढकना, वळी भीखम तेरा पथीना. सुणो०

१ शासन २ कुदर्शनी, कुलिगी, पासत्था, मायाचारी ३ आचार्यादि उपदेशक अनेक क्लेश झघडा फेलाववाना उपदेश करे छे ४ क्षेत्र ते शासन अने वाड ते समाजना आगेवानो पदवीधर आचार्य उपाध्याय पन्यास विगेरे ५ साधुसमाज, श्रावक वर्ग ६ रोज रोज जैनोनी सख्या घटे छे

परपेठ.

(पेठनो उत्तर न आववाथी परपेठ लखाय छे.

(दान कहे जग हुं वडो, मुज सरखो न कोय ललना–ए देशी

कागळ हुंडी पेठने, केम न सीकारी नाथ ललना,
हवे परपेठ सीकारजो, जो तमे जगना तात ललना— का०
कागळ हुंडी पेठमा, अहींआना हाल विचार, ल०
शेष लखु परपेंठमा, भरतना सहु समाचार. ल० का०
पहेली आडत बाधतां, करवो जोइए विचार; ल०
हवे अधवचमां भरतने, किम छोडो निरधार ल० का०
भला माणस समारमा, करे न विश्वासघात; ल०
तु साहेब त्रिभुवन धणी, भली कीधी आ वात. ल० का०
एवा कपटी अमे नहीं, नाणा राखी लखीए पेठ, ल०
समाचार दुकानना, तेहनी लखु परपेंठ. ल० का०
साध्य रोगनी औषधि, होवे जीव विशुद्ध, ल०
रोग मोटो असाध्यनो, दवाथी न थाये शुद्ध ल० का०
एक कनक अने कामिनी, वश कर्यो सौ ससार, ल०
प्रवेश कर्यो शासन विषे, सुणीये ते समाचार ल० का०
अर्थ (द्रव्य) नी दीये देशना, लेवे ज्ञानने नाम, ल०
ऊजमणा उपधानमा, काढयु पेदाशनु काम ल० का०
महिला परिचय अति घणो, भविष्यमा वधशे रोग, ल०
वळी सुनो पन्यासनी, भूंठा माटया जोग ल० का०

पहाड रचना करावता, लूंटे जीवोना प्राण, ल०
आरभथी शंके नहीं, उची धरी तुज आण. ल० का० १०
कदी तमारा मनने विषे, एवो हशे विश्वास, ल०
श्रावकवाड शासन तणी, वारण करशे तास. (तेनी)ल० का० ११
सुणो श्रावकनी धारता, देवद्रव्य पोते खाय ल०
गच्छ तणा झघडा करे, केटलु लख्युं हवे जाय ल० का० १२
बाध्या ते दृष्टि रागमा, न करे हृदये विचार, ल०
ध्वजा पताका सारीखा, फरी जाय वायु लार
(पठवाडे) ल० का० १३
साधुने श्रावक तणो एकज जाणो ढग, ल०
काण रही नहीं कोईनी, नहीं रह्यो शासन रग ल० का० १४
रोग वैरी अग्नि तणो, वळे शीतळ आचार, ल०
वध्याथी व्याधी करे, जलदी करो उपचार ल० का० १५
'दु ख नही आणा मुकता, केम आवे बीजाने देख, ल०
बगला भक्त भेगा हुआ, केटला लखु हु लेख ल० का० १६
परमेठ सिकारो नाथजी, मत करो देर लगार, ल०
ज्ञान कहे बगळ्या पछी, दुष्कर शुद्धाचार ल० का० १७



मेझर नामुं.



दोहरा.

श्री सीमधर साहेबा, महाविदेह क्षेत्र मोझार,
प्रातः उठी वदन करु, दिनमा वार हजार.
आनद घन देवचद्रजी, यशोविजय उवझाय, (उपाध्याय)
हुडी कागळ बहु लख्या, पेठ परपेठ पठाय. (मोकली)
उत्तर पाछो नहीं मळ्यो, ते पहोंच्या तुज स्थान,
कागळ हुडी वाचीआ, पेठ परपेठ सुणी कान.
ते न सिकारी नाथजी, शु कारण छे तेह;
के नाणुं जमे नथी, के नहीं पहोंची जेह
हुडी पेठ खोवाई गयी, परपेठ सीकारी न नाथ,
ते कारण मेझर लखु, जल्दी सीकारो तात

जिन स्तुति.



(ढाळ १ ली.)

वीर सुणो मारी विनती ए-देशी
सुणो सीमधर विनती, मेझर नामु हो लखी मेलु आज.
जल्दी सिकारो नाथजी, जेम सुधरे हो सब जैन समाज.
सुणो सीमधर. ... ...

स्वस्ति श्री पुष्कलावती, पुंडरीगिणी हो नगरी शुभ स्थान,
सर्वे उपमाने योग्य छो केवळदर्शी हो जो रे केवळज्ञान सु० २
आठ प्रतिहार ज शोभता अतिशय हो मोटा चोत्रीश, (३४)
इन्द्रादिक नित्य पूजता जीत्या हो जे रागने रीस सु० ३
तत्र श्री सीमधर प्रभु, करुणासागर हो मोटा कृपाळ,
अधम उद्धारण साहिबो, जगबधव हो जग दीनदयाळ सु० ४
भरतक्षेत्रना सघनी, वदना होजो हो एक हजारने आठ,
तुम कृपा अत्र कुशळ छे, दर्शनथी हो होसे अधिको ठाठ सु० ५
कागळ हुडी पैठने, परपेठ हो लखी मेली अनेक,
तेनो उत्तर मळ्यो नहीं, केम कीधी हो ! प्रभु ढील विशेष सु० ६
ते कारण लखवु पडयु, मेझर नामु हो मने आ वार,
आगळ रीत नहीं लोकमा, देजो हो प्रभु एने सीकार सु० ७

ढाळ १ लीनो तात्पर्य—वीतराग प्रभुने हमेशा वीनती करवी अने वन्दना करवी.

दुहा

अनत कल्याणी सघ छे, सघथी वडो न कोय,
समोसरण बिराजता, नमस्कार करे तोय १
हु पण सघने नमी करी, कहु मननी वात,
तोपण कोइ न सामळे, तु जाणे जगतात २
ओछो कोठो तुच्छ मति, नहीं समावे नाथ,
कहु भरतनी वारता, सामळ कृपाळु नाथ ३

सुविहित अधिकार.



(ढाळ २ जी)

उपरनी देशी चालु

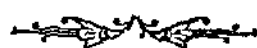
केवळ कमळा जिन लहे, गणधर हो थापे तीर्थरूप;
चारे प्रकारे सघनो, तुं तो हो ! त्रीभुवननो भूप सु०
भरतक्षेत्रनी वारता, समय समय हो जाणो जगनाथ,
तो पण मारा मन तणी, अर्ज करू हो जोडी बन्ने हाथ. सु०
मुज मन भमरो वसी रह्यो, तुम चरणे हो मुज चित्त लोभा
विषम वाट पर्वत घणा, आ भवमा हो ! नहीं मुझथी अवाय सु०
वीर शासन अति उजळु, जाणु हो ! पूनमनो चन्द्र,
साधु सुधारे आतमा, गुण गावे हो ! सुरलोके इन्द्र. सु०
अहो तपसी अहो सयमी, अहो ज्ञानी हो ! अहो ध्यानी तेह,
अहो क्षांति अहो मुत्ती, अहो त्यागी हो ! वैरागी जेह. सु०
मेरु जेम अडोल छे, सागर हो जेम होय गभीर,
दिनमणी जेवा दीपता, निर्मळ हो ! गगानु नीर. सु०
अप्रतिबध वायु परे, निरालबन हो ! जाणो आकाश,
अप्रमत्त भारड परे, कोई करे हो कर्मनो नाश सु०
क्रोधादि रिपुने दमे, पीवे हो ! मुनि उपशम रस,
शत्रु मित्रने सम गणे, व्याप्यो हो ! भूमडळमा जश. सु०

इत्यादिक बहु गुणभर्या, भाख्या हो प्रथम उपाग,
लब्धि अनेके ऊपजी, कोई मण्याहो ! पूर्वने अग. सु० ९
एवा मुनिजीने नित्य प्रति, पूजे हो ! सुर इंद्र नरेंद्र;
हु पण माथुं नमावीने, नमु नमु हो ! प्रभु तेह मुनींद्र. सु० १०
वीर पाट पर शोभता, पचम गणधर हो ! श्रीसुधर्म स्वाम,
पचम आराना अतमा, दुपस्सह सूरि हो ! लेशे तेनु नाम सु० ११
परपरा श्री पासनी, बीजो गच्छ हो ऊपकेश (कमला) कहाय,
पोरवाळ श्रीमाळ ने, ओशवाळ हो कोई जैन बनाय सु० १२
सुविहित आचार्य पाटमा, चाल्या आव्या हो ! रत्नोनी खाण,
उपळदे राजासप्रति, चद्रगुप्त हो ! पाळी ! जिनवर चराण सु० १३
निन्हव नवा नवा नीकळी, वादळ जेम हो ! गया विरलाय,
भरतक्षेत्रनी वारता, लखता हो जीवडो गभराय सु० १४
दक्षिण भरत हुडा सर्पिणी, पचम आरो हो ! कृष्णपक्षी जोय,
असयति पूजा पाचमो, कारण भव्यु हो कमती नहीं कोय. सु० १५
उदय उदय पूजा नही, भस्मग्रह हो ! बेठो वीरनी राश (राशि)
प्रभाव पड्यो तेहनो, पेहले कीधो हो ! ते प्रेमनो नाश सु० १६
मान दूत कळिकाळनो, छडी रोपी हो ! शासनमा आय,
आराधे देवी देवता दिन दिन हो ! शिथिलता थाय सु० १७
छसें नव वर्षो पछी, मोटो पड्यो हो ! शासनमा भेद,
दिगबर एकातनें, पक्ष ताणी हो ! करे भेदमा भेद सु० १८
बोलो केइ उत्थापीआ, केइ हो ! नव दीधा स्थाप,
तेनी रामायण छे घणी, केटली लखु हो ! तुम जाणो आप, १९

छसो चोराशी वर्ष हुआ, गध हस्ति हो प्रथम टीकाकार,
धीमे धीमे हवे साधुनो, शिथिल पड्यो हो ! तप तेज आचार सु० २०
काळ दुकाळ पड्या घणा, भारतमा हो ! मचीओ हाहाकार,
केई मुनि अणसण करी पहोंच्या हो ! परलोक मोझार. २१

ढाल २ जी नो तात्पर्य—जे मुनियोना गुण वखाण्या छे, तेमा प्रवृत्ति करवी यथायोग्य प्रयत्न करवो अने प्रतिदिन अनुमोदन करवु

चैत्यवासी अधिकार.



दुहा.

दुष्ट काळ अति आकरो, न मिळे फासु आहार,
निर्बळ मन मुनि राजनी, लोपे मर्यादा कार. १
केई गया पर खडमां राखवा सयमसार,
जे पाछळ मुनिवर रह्या, सुणो तेना समाचार २

(ढाल ३ जी)

देशी पूर्ववत्

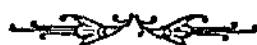
पासत्था पाछळ रह्या, जेणे कीधो हो ! जिन चैत्य (देरा) मा वास;
आरसो च्यासी वर्ष, शासन हुओ हो ! जाणे भस्मी राम. (राशि)
सु० १

तप सयम दूरे घर्यो, दूरे धर्यो हो ! साधुनो आचार,
वाडा बाध्या आपणा, तृष्णा हो लागी अपरपार सु० २
द्रव्यलिंगी द्रव्य राखवा, माडी हो देवद्रव्य दुकान,
तेहनिज द्रव्यने वापरे, अधा अध हो मच्यो अज्ञान सु० ३
वास कर्यो मुनि चैत्यमा, गृहस्थे हो छोडी सार सभाळ,
द्रव्य करे मुनि एकठु, देवनामे हो, बीछावी जाळ सु० ४
धर्मशाळाने उपाशरा नवा चैत्य हो बाध्या अनेक,
मालिकी राखी आपनी पोते हो करे जेनी देखरेख सु० ५
कल्पित क्रिया बनावीने, सावद्य हो करे उपदेश,
अजन शलाका प्रतिष्ठा विषे, सयम हो न राख्यो लेश सु० ६
काव्य बनाव्या पूजा तणा, सावध हो न आणे शक (शका,)
माया ममतामा पड्या, हाथी हो जाणे पड्यो पक सु० ७
मृदग ताल बजावता, कई खावा हो नित्य सारा माल,
गादी तकीआ बीछाववा, ओढवा हो शाल दुशाल. सु० ८
रोशनी करावे रातमा, मदिरमा हो नचावे लोक,
निरकुश दया विना, धर्म नामे हो भोगवे भोग सु० ९
पहाड तणी रचना करे, गाजे हो आवे ने जाय,
धाम धूम करे घणी, शासन हो दीधो लोपाय सु० १०
संघ साथे करे जातरा, साध्वीयो हो साथे चाले नार,
धर्म नामे अधर्मनु, पासत्था हो माड्यो प्रचार. सु० ११
तप तेलादि करावीने, उजमाणे हो, लेजे रोकड दाम,
गौतम पडघो पुरावतो, शु लखु हो जाणो आतमराम सु० १२

छसो चोराशी वर्ष हुआ, गध हस्ति हो प्रथम टीकाकार,
धीमे धीमे हवे साधुनो, शिथिल पड्यो हो ! तप तेज आचार सु० २०
काळ दुकाळ पड्या घणा, भारतमा हो ! मचीओ हाहाकार,
केई मुनि अणसण करी पहोंच्या हो ! परलोक मोझार. २१

ढाल २ जी नो तात्पर्य—जे मुनियोना गुण बखाण्या छे, तेमा प्रवृत्ति करवी यथायोग्य प्रयत्न करवो अने प्रतिदिन अनुमोदन करवु

चैत्यवासी अधिकार.



दुहा.

दुष्ट काळ अति आकरो, न मिले फासु आहार,
निर्बळ मन मुनि राजजी, लोपे मर्यादा कार. १
केई गया पर खडमा राखवा सयमसार,
जे पाछळ मुनिवर रह्या, सुणो तेना समाचार. २

(ढाल ३ जी)

देशी पूर्ववत्

पासत्था पाछळ रह्या, जेणे कीधो हो ! जिन चैत्य (देरा) मा वास;
आठसो व्यासी वर्षे, शासन हुओ हो ! जाणे भस्मी राम. (राशि)
सु० १

तप सयम दूरे घर्यो, दूरे घर्यो हो ! साधुनो आचार,
वाडा वाध्या आपणा, तृष्णा हो लागी अपरपार सु० २
द्रव्यलिंगी द्रव्य राखवा, माडी हो देवद्रव्य दुकान,
तेहीज द्रव्यने वापरे, अघा अघ हो मच्यो अज्ञान सु० ३
वास कर्यो मुनि चैत्यमा, गृहस्थे हो छोडी सार समाळ,
द्रव्य करे मुनि एकठु, देवनामे हो, बीछावी जाळ सु० ४
धर्मशाळाने उपाशरा नवा चैत्य हो बाध्या अनेक,
मालिकी राखी आपनी पोते हो करे जैनी देखरेख सु० ५
कल्पित क्रिया बनावीने, सावद्य हो करे उपदेश,
अंजन शलाका प्रतिष्ठा विषे, सयम हो न राख्यो लेश सु० ६
कान्य बनाव्या पूजा तणा, सावद्य हो न आणे शक (शका,)
माया ममतामा पड्या, हाथी हो जाणे पड्यो पक सु० ७
मृदग ताल बजावता, कई खावा हो नित्य सारा माल,
गादी तकीआ बीछाववा, ओढवा हो शाल दुशाल सु० ८
रोशनी करावे रातमा, मदिरमा हो नचावे लोक,
निरकुश दया विना, धर्म नामे हो भोगवे भोग सु० ९
पहाड तणी रचना करे, गाजे हो आवे ने जाय,
धाम धूम करे घणी, शासन हो दीधो लोपाय सु० १०
संघ साथे करे जातरा, साध्वीयो हो साथे चाले नार,
धर्म नामे अधर्मनु, पासत्था हो माड्यो प्रचार. सु० ११
तप तेलादि करावीने, उजमणे हो, लेवे रोकड दाम,
गौतम पडघो पुरावतो, शु लखु हो जाणो आतमराम सु० १२

उपधानना नामथी, नवी नवी हो क्रिया दीधी स्थाप,
रुपीआ लेवे रोकडा, शासनने हो लगाड्यो पाप. सु० १३
साधुना ऊपाशरे, स्थापे हो वीतरागी देव,
अठाई ओच्छव करावता, नाटकीया हो पाडी खोटी टेव. सु० १४
इत्यादि संक्षेपथी, विस्तारे हो तु जाणे नाथ,
सो वर्ष सुधी चालीयो, मोटो हो चैत्यवासीनो साथ सु० १५
देवगुप्त देवर्द्धि गणी, केई मुनि हो करी शासन सार,
हरिभद्रसूरि हुआ, केई मुनि हो कर्यो क्रियाउद्धार सु० १६
अज्ञान तिमिर हठावीने, तप संयमे हो थया उजमाल,
पुस्तकारूढ आगम कर्या, जेणे जाण्यो हो काई पडतो काळ. सु० १७
स्वल्प काळ क्रिया रही, चैत्यवासीनो हो वध्यो परिवार,
तेरसो वर्षो गया, प्रभु पछी, चोरासी गच्छना हो सुणीये समाचार.
सु० १८
गच्छ नाम जुदा पड्या, माहोमाहे हो घणो धर्म स्नेह,
पण कळियुगी जागता तेहना हो समाचार छे एह सु० १९
समाचारी जुदी जुदी, जुदा जुदा हो सहुना ए नाण,
मदिर उपाशरा जुदा जुदा, जुदाजुदा हो श्रावक पीछाण सु० २०
ग्रंथ रचना जुदी जुदी पाकी बाधी हो पोतानी पाळ,
केई निंदक कदाग्रही, माडी बेठा हो ममतानी जाळ सु० २१
सिद्धसूरि वल्लभसूरि, जगचद्र हो वळी हेमसूरींद्र,
पासत्थानो मद चूरता, भूमडळ हो वीचरे मुनींद्र २२

कुमारपाळ प्रतिबोधीने, जैन धर्मे हो कीधो उद्योत,
देश अढारे दया पले रे, हीरसूरि हो अकबर प्रतिबोध. सु० २३
गच्छतणा झघडा घणा, पक्षा पक्षी हो माडी दुकान;
लींगधारी शिथिल थया, पासत्था हो माच्या मस्तान. सु० २४
विक्रम पदरसे आठमा, लुपक लोके हो कीधु तोफान,
पदरसे एकत्रीसमा, चाली हो लुपक दुकान. सु० २५
प्रतिमा उत्थापी पापीए, आगम हो मान्या एकत्रीस,
शुक जेम बालक्रिया करे, दया दया हो पाडे मुख चीस. सु० २६
एक बाजु यति शिथिल थया, बीजी तरफ हो लुपकनो जोर,
सत्यविजय सत्य राखवा, लुपकना हो कीद्धा दीधा तोड सु० २७
वीर परपरा सत्यनी, सत्यविजयथी हो ! सवेगीं नाम,
लुपकथी ढुढक थया, आगळ लखु हो ! बन्नेना काम सु० २८
सवत सत्तर आठमा, लवजी हो ! लुपकनो साध (साधु),
मोढु बाधीने नीकल्या, लिंग पलटी हो ! कीधो उन्माद सु० २९
सत्य मार्ग थोडो चालीयो वध्यो हो ! पासत्था प्रचार,
प्रवृत्ति लखु बन्ने तणी, थोडामा हो ! घणा समाचार सु० ३०

ढाळ ३ जी नो तात्पर्य—जे चैत्यवासीयोनी प्रवृत्ति लखी छे तेमा काई आश्चर्य न पामवु जीव बधा कर्माधीन छे परतु खास लक्षमा राखवु के ते प्रवृत्ति अमारामा न आवी जाय अगर काई होय तो काढी मुकवानो तुरत प्रयत्न करवो

उपधानना नामथी, नवी नवी हो क्रिया दीवी स्थाप,
रुपीआ लेवे रोकडा, शासनने हो लगाड्यो पाप. सु० १३

साधुना ऊपाशरे, स्थापे हो वीतरागी देव;
अठाई ओच्छव करावता, नाटकीया हो पाडी खोटी टेव. सु० १४

इत्यादि सक्षेपथी, विस्तारे हो तु जाणे नाथ,
सो वर्ष सुधी चालीयो, मोटो हो चैत्यवासीनो साथ. सु० १५

देवगुप्त देवर्द्धि गणी, केई मुनि हो करी शासन सार,
हरिभद्रसूरि हुआ, केई मुनि हो कर्यो क्रियाउद्धार सु० १६

अज्ञान तिमिर हठावीने, तप संयमे हो थया उजमाल,
पुस्तकारूढ आगम कर्या, जेणे जाण्यो हो काई पडतो काळ. सु० १७

स्वल्प काळ क्रिया रही, चैत्यवासीनो हो वध्यो परिवार,
तेरसो वर्षो गया, प्रभु पछी, चोरासी गच्छना हो सुणीये समाचार.
सु० १८

गच्छ नाम जुदा पड्या, माहोमाहे हो घणो धर्म स्नेह,
पण कलियुगी जागता तेहना हो समाचार छे एह. सु० १९

समाचारी जुदी जुदी, जुदा जुदा हो सहुना ए नाण,
मदिर उपाशरा जुदा जुदा, जुदाजुदा हो श्रावक पीछाण सु० २०

ग्रथ रचना जुदी जुदी पाकी बाधी हो पोतानी पाळ,
केई निंदक कदाग्रही, माडी बेठा हो ममतानी जाळ सु० २१

सिद्धसूरि वल्लभसूरि, जगचद्र हो वळी हेमसूरींद्र,
पासत्थानो मद चूरता, भूमडळ हो वीचरे मुनींद्र सु० २२

हीं योग नहीं योग्यता, बनी बेठा हो आचार ज पाट,
ूरि छत्रीश गुणे क्या रह्या, क्या रही हो गणीसंपदा आठ सु० ६
ाटीदार पटेलीया, कोई हो छीपा माळी जाट,
अगहीना केइ माजरा, नहीं शोभे हो श्रीवीरने पाट सु० ७
ऊत्रो धर्यो आचारने, क्रिया हो गणे कष्ट समान,
आचारज थया अमरिया, नहीं क्रिया हो नहीं रह्यु ज्ञान सु० ८
मोटी उपाधि धरावता, सीताबो हो राखे दो चार,
क्या कोरी क्या चीतरी (शीळा), बंने डूबे हो भवनळ मोझार
सु० ९
परस्पर छापा छपावता, स्वश्लाघा हो परनिंदक तेह,
पैसा खरचे वाणीया, दृष्टिरागी हो नहीं धर्मस्नेह सु० १०
निशीथ आचारंग भण्या विना, अथवा हो भणीने जाये भूल,
पदवी देवी कल्पे नहीं, जुओ हो व्यवहारनो मूळ सु० ११
हाथी तणा बोजा लेइ, नाखे हो खर उपर मूल,
पदवी देवे अयोग्यने, नहीं जुए हो जातिने कुळ. सु० १२
पदवी देवी अयोग्यने, नहीं हो छोडावे सव,
दड तणा भागी होवे, जुवो हो व्यवहारनो रग. सु० १३
पोताना शिष्य माने नहीं, शु करशे हो शासननु काम,
आचारज घर घर तणा, रह्यो हो निक्षेपो नाम सु० १४
ज्ञानयोग उपधानना, नाम लेइ हो ! भेलु करे पाप,
लावो लावो करता फरे, मन वलद्वार ! हो ! बेटा जपे जाप.
सु० १५

मर्या पछी पुस्तक नीकळे, चेला हो! वहेंचीने खाय, (लेवे)
नहीं तो खाये वाणीया, अथवा हो! कोरटमा जाय सु० ११

चरण स्थपावे तेहना, मूर्त्ति हो घरे मदिर बीच. (वचमा)
छबीओ चीतरावे बहुमूली स्वश्लाघा हो! करे ते नीच. सु० १७

तप सयम आतम बळे, केई कीधा हो! जेणे जैन अनेक,
तेहनी खावे रोटीओ, लडावे हो! माहो माही एक सु० १८

अभिमानी झघडा करे, शु आशा हो! नवा करे जैन!
मम लजीआ कह्या नाथजी! जुओ हो! आगमना वेण सु० १९

उत्तम तो ऊंचा छोडे, नीचाने हो! लेवे आपणी पास,
कडवी दवाई गुण करे, शासनप्रेमी हो! करे अरजी खास सु० २०

लज्जा राखो पदवी तणी, शातवृत्ति हो! आपसमा प्रेम,
शासननी सेवा करो, पामो हो! जल्दी शिव जेम. सु० २१

ढाळ ४ थी नो तात्पर्य—ज्या सुधी आचार्यना गुणनी योग्यता न होय त्या सुधी आचार्य पद्वि नहिज आपवी अने लेवावाळाने पण पुरो विचार करवो अगर पदवीने योग्यता होय तो पदवी आपवी तथा लेवी अने सघने शान्त मार्गे प्रवृताववो.



गणी अधिकार



दोहा

गुण गीरवा गणी करे, गच्छतणा शुभ काम,
जिनागममा दीसे नहीं, पन्यासोना नाम १
कहेवाय सवेगी नामना, नहीं सवेगनो रग,
पदवी तणा झगडा करे, लई लई गृहस्थी सग. २

(ढाल ५ मी.)

देशी उपर प्रमाणे

समिति गुप्ति जाणे नहीं, सावद्य निर्वद्य हो ! नहि होये भान,
दोष जाणे नहीं आहारना, नहीं हो ! भाषानु ज्ञान. सु० १
हृष्ट पुष्ट साधु बन्या, माल खाइ हो ! बनीया मस्तान,
जूठा योग वहन करे, कळियुगी अहो ! माड्यु तोफान सु० २
नवतत्त्व नहीं आवडे, नहीं हो ! दशवैकालिक ज्ञान,
योग वहे भगवती तणा, भरत माहे हो ! मचीउ अज्ञान सु० ३
सूत्र क्रमसर वाचना, उत्क्रम हो ! कह्यो दड निशीथ;
पाप उदय पन्यासनु, तोडी हो ! जिनशासन रीत सु० ४
वाडा बाध्या पन्यासजी, बीजा हो ! नहीं करावे योग,
माया जाळ बेठा माडीने, शासने हो ! लगाव्या रोग सु० ५

आगमवाचना उची धरी, पासत्था हो ! क्रिया दीधी त्याग,
पुस्तक धर्या भंडारमा, कोण वाचे हो ! पन्यासनो बाप सु० ६
भेद करे गच्छ माहे ते, सत्रमा हो ! करे खेंचाताण,
दुकान जमावे आपनी, पदवी पाम्या हो ! नहीं पाम्यो ज्ञान सु० ७
पुण्योदय साधु थया, आधाकर्मी हो ! खाई करे पुण्य नाश,
पाप पुरा उदय आवीया, साधु हेवे हो ! पछी पन्यास सु० ८
शु रखुं मारा साहेबा, देखादेखी हो ! लागे चेपी रोग,
एक बीजाथी आगल पडे, नही देखे हो ! कोई योग्यायोग सु० ९
अदरनु रहस्य हवे सुणो, थइ पन्यास हो ! माडे उपधान,
मालपाणी नाणु मळे, महिला मळी हो ! करे सन्मान सु० १०
ठाणाङ्ग ठाणे आठमे, सूत्र हो ! व्यवहारनो खोल,
कहेता गुण गणी तणा, केम चाले हो ! जे पोलमपोल सु० ११
जो सत्र निर्णय नही करे, थासे हो श्री वीरना चोर,
मारी फर्जमें बजावी छे, जुठो हो ! मत करजो सोर सु० १२

ढाल ५ मी जेवी रीते आचार्य पद्वि ले छे तेवीज रीते गणी पद्वी समजवी.

योग वहन अधिकार.



दुहा

सूत्र वाचे तप करे, योगवहन तस नाम,
आगममाहे देखीलो, भाखे श्रीगुरु श्याम (जिनेश्वरदेव) १

जूठा योग वहन करे, आधाकर्मी हो ! खावे पदवी काज,
अगीतार्थ अभिमानीआ, पदवी लेता हो ! आवे नहीं लाज. सु० ९
भगवती पहेला शतकमा आधाकर्मी हो ! साधु खावे जाण,
रूले अनत ससारमा केम काढे हो ! बीजाने ताण सु० १०
जोगतणा आहारनी, लखता हो ! चाले नहीं हाथ
हा ! हा ! मरतमा शु थयु, मळीयो हो ! स्वारथीयो साथ सु० ११
राम सनेही साधुना, भोजन बने हो ! घरघरमा तेम,
कमती नहीं योग वहनमा, वनडो (वर) बेठो हो ! वदोले
जेम सु० १२
वारा बाधी आवे श्राविका, काले हो ! शु आवशे तप !
पाप उदय पन्यासना, अमुक साधुने हो ! अमुक थाशे खप.
सु० १३
तैयारी करी आवे तेडवा, लाभ देजो हो ! मारा स्वामीनाथ,
आधाकर्मीथी शके नहीं ! टेवे लेवे हो ! डुबे बन्ने साथ सु० १४
पचक्खाण करे आबीलतणा, दहींतणा हो ! करवा खाई जाय,
मीठु मरचु हींगने जीरू, दशवीस हो ! भोजन बनवाय. सु० १५
नीवी तो जाणे नामनी कलाकद हो ! खीरने दूधपाक,
तल्यु गळ्यु खपे घणु, बदाम चिरंजी हो मेवोने द्राख सु० १६
पचक्खाण करे विगय तणा, विगय खावे हो ! लागे मोटु पाप
महा मोहनीय कर्म बाधतो समवायांगे हो ! भाख्यो श्री आप.
सु० १७

काली आदि दश राणीओ, अंतगडमां हो ! आबिल अधिकार;
लेपादि विगय वरजीया, केवळ पामी हो ! गई मुक्ति मोझार.
सु० १८

छठ तप आबिल पारणे, नवमे अगे हो ! धन्नो अणगार,
लूखो आहार बे द्रव्यनो, समाचारीमा हो ! चाल्यो अधि-
कार सु० १९

साधवीओ आवे एकली, लेवे हो ! योगवहन नाम,
काल विकाल गणे नहीं, कोण जाणे हो ! पन्यासोना काम सु० २०

साधुना स्थानमा साधवी, वरजी हो ! बृहत्कल्प मोझार,
आलाप सलाप करवो नहीं, नागणपरे हो ! बतावी नार सु० २१

सघ चतुर्विध माहने, सुणवा हो ! आवे व्याख्यान,
प्रवर्त्तिनी पासे रहे, लेवे देवे हो ! आपसमा ज्ञान सु० २२

नानी दीक्षा दिन सातनी, मध्यम हो ! राखे मास चार,
उत्कृष्टी छ मासनी, जुओ हो ! सूत्र व्यवहार सु० २३

पिंडेषण अध्ययन भणवाता, हमणा हो ! छजीवणीया सार,
ते पण लुप्त करवा भणी, ज्ञानहीना हो केवळ क्रियाचार सु० २४

नानी दीक्षामा साधु रहे, वर्ष बे वर्ष हो रहे वर्ष चार,
आज्ञा नहीं वीतरागनी, पुन्य नाम हो ! थाये आज्ञा बहार सु० २५

योग करावे नहीं अन्यने, करावता हो ! पहेला करे कोल (शरत),
एटला पुस्तक आदि तणा, रखावे हो ! पहेली रोकड मोल सु० २६

केटलु लखु मारा बापजी ! लीला हो ! जेनी अपर पार;
बुद्धि सुधारो नाथजी, मारी अरजी हो ! वारवार सु० २७

ढाल ५ ठी—जिनागमोनी वाचना आपवी सिद्धान्तो नु रहस्य शिष्य मडळीने समजाववुं, परन्तु जे योगने आधाकर्मादि आत्माने अहितकारक खोटी प्रवृत्तियो छे तेने तिलानली आपवी.

उपधान–अधिकार.

दोहरा.

गुरु तीर्थ पासे करे, उपधान तप सार,
जैन विधि अनुसारथी, ते पामे भवपार
धर्म अमूल्य जिनेंद्रनो वेचाय दुकाने मोल (मूल्य)
धर्म नाम धाडा खुले, पन्यासोनी पोल

(ढाल ७ मी)

पूर्वनी देशी.

आचील प्रमुख तप करे, श्रावक हो भणे गुरुनी पास,
श्राविका गुरुणी कने, हमणा हो ! जुवो पन्यास. सु०
उपधान करावता पेहला, पेसा हो ! लेवे ज्ञानने नाम,
पेढी जमावी ब्राह्मण परे, कोई काढी हो ! पेदासनों काम. सु०
सधवा विधवा मळे घणी, भाग्ये भाई हो ! मळे दस वार,
क्रिया करावे पन्यासनी, महिला साथे हो ! भाडे प्रचार सु०

नारीना परिचय थकी, यतिये हो ! कीधो घरवास,
प्रत्यक्ष देखी केम करे, त्यागी हो ! महिला सहवास सु० ४
आरम करावे नवा नवा, भोजन कारण हो ! देवे आदेश !
माल उडावी करे मोझने, गाजे मरयो हो ! गुर्जरनो देश सु० ५
भोजन जमे वाणीया, ओत्रो लेई हो ! जावे पन्यास,
अमुक सारु न केम कर्यु (त्यारे बोले) शु खपे हो ! अने श्रावकना दास सु० ६
नाम लेवे नीवी तणो, आहार तणुं हो ! जाणो जगभाण,
बदाम तणो हलवो बने, धारी हो कलाकद पीजाण सु० ७
लाडु पेंडा बरफी बने, दूधपाक हो ! नहीं रहे दूर,
दैंथरा ने पुडला बने, जुदा जुदा शाक हो ! हाडा भरपूर सु० ८
तृपणी भरे भरे पातरा, साधुजी हो ! उडावे माल,
धर्म नामे धूर्त जागीया, पन्यासे हो ! बिछावी जाल, सु० ९
केई गृहस्थी जैनना, नहीं मळे हो ! खावाने धान्य;
उपधान नामे मुनिराजजी, माल उडावे हो ! मस्तानं सु० १०
अमुक बाईए दश दीया, तु तो हो ! मोटा घरनी बेन !
सो के बसो आपशो, धीरे धीरे हो ! बोले मधुरा वेण. सु० ११
राडीराडो ठगवा भणी, भला जाग्या हो ! धोळे दिने चोर,
ज्ञान नामे भेळु करे, पापोदय हो ! पडे चोरोमां मोर सु० १२
तृष्णा अंबर [आकाश] जेवडी, करावे हो ! मोटा धुमधाम !
वादे वधारे वाणीया, भेळा करे हो ! लोभीडा दाम सु०

सिद्ध साधक रहे वाणीया, धर्मोदीया हो ! मळे दलाल,
कळियुगीया भेगा थया, केम रहे हो ! साहुनो माल सु० १४
ओछा जीवित कारणे, सयम खोवे हो ! अज्ञानी बाळ,
जरा तो डरो परभवथ की, माथा उपर हो ! भमे छे काळ. सु १५
वणिक भडकशे वाचीने, पन्यास हो ! करशे कोई क्रोध,
भलामण करू तेहने, पक्ष छोडी हो ! करो साची शोध सु० १६
साचामा समकीत वसे, मायाथी हो ! आवे मिथ्यात,
केवा चित्र हु चीतरु, तु जाणे हो ! मारा त्रिभुवन तात सु० १

ढाळ ७ मी---गीतार्थाचार्य मुनिमहाराज श्रावकवर्गने योग्य पूर्वक जैन धर्मना खास तत्व ज्ञान नित्य धर्म क्रियानुं ज्ञान आप अने वळतो तप करावतो किन्तु जो धामधूम फोगट आडम्बर द्रव्य खरचाववा के खावा पीवा तथा पैसाना लोभे के स्त्रीयो स जे प्रचारनी प्रवृत्ति छे ते योग्य नथी माटे तेने दूर करवी

दीक्षा अधिकार.

ज्ञान गर्भित वैराग्यथी, दीक्षा लेवे जो कोय,
दीपावे जैन धर्मने, तरे ते तारण होय १

(ढाल ८ मी)

देशी पूर्व प्रमाणे

ठाणांग वृहत् कल्पमां, दीक्षा देवे हो जोइने योग्य,
एवी आज्ञा वीतरागनी, प्रवचने हो ! वरजे अयोग्य सु० १
अधिकागुण होय आपथी अथवा हो ! होवे सम तुल्य,
उत्तराध्ययन पात्रीसमा, जोवे हो ! मुनि जातिने कुल सु० २
आज्ञा नहीं मावापनी, नहीं हो ! निजमा वैराग्य,
जेवा तेवाने मुडता, पुस्तक वस्त्र हो, लेइ जाय भाग सु० ३
एकनी पासेथी नीकल्यो, पुस्तक वेची हो ! करे रोकड दाम,
अत्याचार सेवे तेहथी, वस्त्र पात्र हो ! करी दे लीलाम सु० ४
बीजा पासे ते जइ, दीक्षा हो ! लेतो बीजीवार,
गुरुजी निर्णय करे नहीं, चेलानो हो ! लाग्यो लोभ अपार सु० ५
त्रीजीवार त्रीजा कने, एम ठगे हो ! नहीं पूछे कोय !
मातापिताना पोषण करे, पुस्तक वस्त्र हो ! दाम रोकड जोय सु०६
वनी चुक्या केई दाखला, ते पण हो ! नहीं छोडे बलाय !
शासन निंदावा जनमीया, तेथी हो ! शुद्ध श्रद्धा जाय. सु० ७
आज्ञा विना दीक्षा दीये, त्रीजा व्रतमा हो ! जलाजली होय !
प्रायश्चित आवे आठमु, ठाणांग हो ! ठाणे त्रीजे जोय. सु० ८
मूल्य तणा चेला करे, देवरावे हो ! ते रोकड दाम,
माल खाय मस्तानीआ, अनाचार हो ! सेवे ठामो ठाम सु० ९
वरघोडा काढे विकाउ (परोढीया)मा, जैन नामे हो ! करे चोरीना काम,-

छानामाना दीक्षा दीये, फोकट हो ! खरचावे दाम सु० १०
मातापिता आवी करी, वेष खुची हो ! घर लइ जाय,
प्रतीति रही नहीं जैननी, लोभीडा हो ! मारग निंदाय सु० ११
सयम लई समझया नहीं, समिति गुप्ति हो ! साधुनो आचार,
सयममा रमीया नहीं, व्याकरणनो हो ! माडे प्रचार सु० १२
पहेला तो मुके मोकळा, भणो भणो हो ! गणे दोष,
कल्प क्रिया उची धरे, आज्ञा विना हो ! नहीं सतोष. सु० १३
व्याकरण भणे गृहवासमा, दीक्षा लै हो ! भणे जैनसिद्धात,
हाडे हाडे वैराग्यथी, तरे तारे हो ! करे भवनो अत सु० १४
ज्ञाता विगेरे सूत्रमा, दीक्षा लै हे ! सीखे स धु आचार,
अगादिक पाछे भणे, पेहेला रगीये हो ! पाळे शुद्धाचार सु० १५
एक चक्र चाले नहीं, क्रिया साथे हो ! होवे सम्यग् ज्ञान,
प्रथम क्रिया व्यवहारमा, निश्चयमा हो ! होये ज्ञान प्रधान. सु० १६
कातो दु खी दरिद्रीओ, पेट भरवा हो ! लेवे सयम भार,
कातो पूजाववानी लालचे, मोहगर्मी हो ! देखादेखी प्रचार. सु० १७
गुरु पण तेवा मळ्या, वधारवा हों ! पोतानो परिवार,
जीवता भूत बनावी दे, भगावी हो ! लेइ जावे बार. सु० १८
दीक्षाना केम कोरट चढे, जुओ हो ! जैनोनी रीत,
गादी बेठा जुओ वीरनी, केम रहे हो ! सूरिनी प्रतीत सु० १९
गृहस्थीपणे एक घर तणो, मुशकेले हो । चलावे कारभार,
साधु थया घर हजारना, लाबा लेखा हो ! नहीं आवे पार. सु० २०

जेम जेम पोप गुरु वधे, तेम तेम हो ! नबळी पडे समाज,
गणी गाडरीयो शुं करे ? सिंह हो ! करे एकलो राज सु० २१
वकील बेरीस्टर महेनत करी, मुस्केलथी हो ! परीक्षा पास,
अधिकार मळे कोरट तणो, दीर्घ दृष्टि हो ! विचारो खास सु० २२
राजा गादीपर बेसतो, केटली हो ! जोइए गुंजास ?
पूजनीक बने राजा तणा, जोइए हो ! केटलो प्रकाश ! सु० २३
पदर (१९) प्रकृति क्षय हुए, अथवा हो ! होवे उपशात,
चडते वैराग दीक्षा लीए, करे हो ! मन इंद्रिय दात (दमन) सु० २४
एकात पक्ष नहीं खेंचवो, रहे हो शुद्ध लोक व्यवहार,
ते जैन धर्म दीपावशे, तरे तारे हो ! जाये मोक्ष मोझार सु० २५
मोटा घरनी स्त्री हुए, दीक्षा लेवे हो ! साधवी पास,
पाच दश हजारना, जमे करावे हो ! नामे ज्ञानने खास सु० २६
दीक्षा लेइ पछी साधवी, मालिकी हो ! राखे पोते आप,
लेणु देवु करावतो, केम छुटे हो ! जो पाप सताप सु० २७-
साधु करता साध्वी तणी, लीला हो ! प्रभु अपरपार,
उद्धार करो आ भरतनो, थारी पन्टणना हो ! आ छे
समाचार. सु० २८

ढाळ ८ मी—अयोग्यने दीक्षा न आपवी अने योग्यने पण दीक्षा लेवावाळानी पाछळ सगा सबन्धीनी आज्ञा होय तोज आपवी.

आहार अधिकार.

समिति गुप्ति चित्त धरे, छे निर्दोषित आहार;
ते गुरुतारे जगतने, वदु वारवार. १

फासु निर्वद्य जे मळे, तेथी करे संतोष,
नहीं मळता तप आचरे, पण नहीं सेवे दोष २

(ढाल ९ मी.)

देशी पूर्व प्रमाणे

आहार पाणी लेवे सूझतो, श्रावक हो ! देवे दातार,
वंन्ने जाय मोक्षमा, दशवैकालिक हो ! पाचमे अधिकार. सु० १

छट्टे उद्देशे शतक आठमा, फासु हो ! देवे मुनिने आहार,
एकांत होवे निर्जरा, भगवती हो ! नहीं पाप लगार सु० २

फासुक आहारज भोगवे, भावे भावना हो ! धन्य तप करे तेह,
आप तरे पर तारता, मोक्ष जावे हो ! जिन भाखे एह सु० ३

आधाकर्मी आहार भोगवे, आयु छोडी हो ! बांधे कर्म सात,
रुळे अनंत संसारमा पंचम अंगे हो ! भाखी आ वात सु० ४

वळी नहीं छ कायने, वळी भागी हो ! ते जिनवर आण !
समवायांगे सवळो कह्यो पिंडनिर्युक्ति हो ! गुणदोष पीछाण.

सु० ५

पूतीकर्म जो भोगवे, सुयगडांगे हो ! सेवे बे पक्ष,
द्रव्य साधु भावे गृहस्थी, नहीं हो ! जेने आतम लक्ष सु० ६
कृतगडे कल्पे नहीं, भूले लाव्यो हो ! साधुने काज,
अणजाणे आवे तो परठवुं, नहीं खावे हो ! मोटा मुनिराज, सु० ७
सामे लाव्यो भोगवे, तेह्या जाये हो ! जेम चारण भाट,
मुनि मत्तगज वेगळा, नहीं लागे हो ! सोनाने काट सु० ८
भक्तिवान श्रावक होवे, नहीं जाणे हो ! मुनिनो आचार,
दोषसहित देतो बाधे, अल्प आयु हो ! ठाणांग मोझार सु० ९
त्रीजे स्थाने एम कह्यो, पथ्यकारी हो ! देवे फासुक आहार,
शुभ दीर्घ आयु बाधतो, पंदर भवे हो ! पामे भवपार. सु० १०
दोषित आहार देता थका, आठ जणा हो ! भेळा बाधे पाप,
सहाय देवे शीतळ करे, कोण काढे हो ! ए पापनु माप सु० ११
ध्यान ध्यावे रातना, अमुक घेरे हो ! मळे अमुक माल,
पडिलेहणा पूरी कोण करे ! लै तृपणी हो ! थवे उजमाल सु०१२
श्लोक गणे गौतम तणो, वाछिन हो ! भरी लावु माल !
शुद्धाशुद्ध कोण गणे ? कोण गणे हो ! जे काळ विकाळ सु० १३
गृहस्थी सुता होय खाटले, धमक विजय हो ! देवे धर्मलाभ,
काढे गौतम पातरुं, पूर्ण पात्र हो ! तृष्णा जाणो नाम. सु० १४
दशवैकालिक छट्ठे कह्यो, एक वखत हो ! भोजननु मान;
उत्तरा ध्ययन छवीसमा, सुणो हो ! समाचारीनु ज्ञान सु० १५
पहेले पहोरे स्वाध्याय करे, बीजे पहोरे हो ! विचारे ध्यान,

त्रीजे पहोरे भीक्षा करे, चोथे पहोरे हो ! भलो स्वाध्याय ज्ञान
सु० .... १६

पहेले पहोरे चा दूधनी, बीजे पहोरे हो ! उडावे माल,
त्रीजो पहोर निंद्रा तणो, चोथे पहोरे हो ! वळी चोखाने टाल. सु० १७

दशवैकालिक पाचमेरे, मुनि जाणे हो ! क्षेत्रने काळ;
काले काळे समाच रे, कल्पमा हो ! भिक्षा एकज काळ (वखत) सु० १८

दूध दही घृत वापरे, तप करता हो ! जो धुणे शीष,
उत्तराध्ययन सत्तरमा, पाप श्रमण हो ! कह्या जगदीश सु० १९

मोटु कारण मुनिने होवे रे, सयम जाये रो ! के जावे प्राण,
दोष सहित देता थकारे, अल्प पाप हो ! बहु निर्जरा जाण सु० २०

हृष्ट पुष्ट साधु हेवे रे, सिंह जेम हो ! वाचे व्याख्यान,
विहार करे दश कोसनो, दोषित हो ! केम खाये जाण सु० २१

दोषित आहार लेता थका, आणा भागी हो ! जे छे मुनिराज,
दातार भेगो डुबशेरे, जेणे दीधो हो ! चोरने साज (सहाय) सु० २२

विना भण्या जावे गोचरी रे, भण्या हो ! विराजे पाट,
शुद्धाशुद्ध जाणे नहीं, आयु साथे हो ! बावे कर्म आठ सु० २३

अतिशयवत जावे गोचरी, आचारांगे हो ! नव बोलनो जाण,
उत्साह वधे ग्रहस्थी तणो, आठ कर्म हो ! तोडे चतुर सुजाण सु० २४

शेठाणीओ बेसी रहे, काम करावे हो ! दासीओने पास,
एवी दशा साध्वी तणी रे, शु लखु हो ! जाणो स्वामी खास सु० २५

इद्रिय स्वादने छोडवा, घर छोडी हो ! लीधो सयम भार,
स्वाद करे जुदा जुदा, भगवती हो ! कह्यो दोप अपार सु० २६
जीभने स्वाद कारणे,-मोटी राखे हो ! पातरानी जोड,
जुदा जुदा गृहस्थो परे, पुद्गलानदी हो ! नहीं सके छोड. सु० २७
पलग बीछाना छोडीया, छोडी हो ! सुख शय्या नार;
मोटा ओशीका बीछावया, वरज्या हो ! आवश्यक मोझार सु० २८
विशेप योगना आहारनी, आगळ लखी हो ! आ मेझर माय,
आश्चर्य पामे नहीं केवळी, रही हो ! नहीं कमती काय सु० २९
पाणी जेसी वाणी रहे, अन्न जेवु हो ! नित्य रहे मन,
निभाववा सयम यातरा, फासु भोजन हो ! पोपण करे तन सु० ३०
सुकोमलपणु छोडी दो, दशवैकालिक हो ! श्री वीरनु ज्ञान,
मोक्ष किल्लो कायम करो, उठो जागो हो ! थाओ सावधान.सु० ३१
जे श्रद्धा घर छोडता, राखो हो ! जीवनपर्यंत,
यथाशक्ति खप करो, तेथी हो ! थाय ससारनो अत. सु० ३२

ढाळ ९ मी—श्रावकवर्गने जोइये के मुनिने दोपिताहार न आपवो अने मुनिने पण परिसह सहन करवा परन्तु दोपित आहार नहीं लेवो निर्दोपित आहार लेवो ते पण छ कारणथी, कोई कारण होय तो

रात्रि भोजन अधिकार.



अशन आदि सचे नहीं, अजाणे रहे कोय,
तल मात्र नहीं भोगवे, परठे स्थडील जोय

ढाल १० मी.

(देशी पहेलानी)

रात्रिभोजन वरजीयो, भागे चार हो ! निशीथ मोझार;
दशवैकालिक देखीलो, बृहत्कल्प हो ! नही साधु आचार सु० !
वातु खाखने औषधि, चुरण हो ! मुख साफ कराय,
गोळीओनी गणतरी नहीं, पारसल हो ! केई वी पी मा आय.सु०
ग्रीष्मरुतु गुलाबना, सीसा हो ! लावी दे बे चार;
तेल रहे मर्दन कारणे, मर्दनी या हो ! नित्य रहे तैयार सु०
पहेला पहोरमा वहोरीउ, औषध पाणी हो ! अथवा कोइ आहार,
चोथे पहोरे कल्पे नहीं, रात्रि भोजन हो ! कह्यो भ्रष्टाचार सु०
राते दवाइ राखता, भ्रष्ट कह्या हो ! छठे अध्ययन,
दंड कह्यो निशीथमां अनाचारी हो ! त्रीजे अध्ययन सु०
बीजी जगे मळे नहीं, मोटु कारण हो ! मुनिवरने होय,
अणाहारी वस्तु रातनी, अपवादे हो ! राखे अवसर जोय सु०
अनिष्ट वस्तु अरुचामणी, खाता हो ! अरुची थाय;
आगम अक्षर देखीलो, ते वस्तु हो ! अणाहारी कहेवाय. सु०

चाध्या मळे हो पोटला, गाधीए हो ! जाणे माडी दुकान;
शु लखु मारा साहेबा, निर नायक हो ! मच्या मस्तान सु० ८
मायाचारी केई हुए, नहीं राखे हो ! जे पोते पास,
गृहस्थी पासे रखावता, मायाथी हो ! पामे समकीत नाश सु० ९

ढाळ १० मी—मुनिने रात्रि वासी कशी पण वस्तु न राखवी जोइए जावाआववाना थोडाक प्रमादने लीधे औषधादि वस्तु राखी मोटा नुकशानमा उतरखु योग्य नथी

वस्त्र पात्र अधिकार·



दुहा

नग्न मुद्रा जे रहे, जिन कल्पी मुनिराय,
स्वल्प अल्प मूल्यना, स्थिविर कल्पी कहेवाय १
जीर्ण गच्छाचारमां, मानोपेत सफेत (श्वेत)
दशवैकालिक एम कह्यो, लज्जा राखण हेत २

ढाल ११ मी.

(देशी पूर्वनी)

दूषण टाळे आहारना, तेवा हो ! वस्त्रना जाण,
आचारांगे कह्या पाचमे, विस्तारे हो ! निशीथ पीछाण सु० १
बृहत् कल्प दीक्षा समे, पूर्ण हो ! वस्त्र ले तीन,

शीत परिसह सहन करे, सजममा हो ! मुनि रहे लीन सु० २
बहु मूल्य वस्त्र कामळी, पोटला हो ! बाधी मुके भडार,
जोडीओ राखे पात्रातणी, परिग्रहधारी हो ! दशवैकालिक मोझार.सु० ३
भर्यां कपाटने पेटीओ, पडिलेहण हो ! कोण करे देख,
पछी मळशे के नहीं मळे, मूर्छा घणी हो ! पन्नवणानो लेख सु० ४
गृहस्थीने परिग्रह तणी, होवे हो ! स्वल्प मर्याद,
वस्त्र पात्र पुस्तक घणा, लावो लावो हो ! करी रह्या मुनिराज सु० ५
नाम लेवे पुस्तक तणो, ज्ञान नामे हो भरे भडार;
पुठीया चदरवा पाटी ठवणी तृष्णा हो ! लागी अपरपार सु० ६
सो हजारथी आवे नहीं आवे नहीं, हो ! पाच पचीस;
एक बे चार लाखना पुस्तक हो ! भरीया भडार सु० ७
आवेज रस्ते चालता, यतियो हो ! थया फजीत,
सत्यविजय बधुं छोडीयु, तो पण हो ! हवे आ चाली रीत. सु० ८
पोते आप वाचे नहीं, नहीं देवे हो ! वाचणकाज,
कर्म जोगे चोरी होवे, रोवे बेठा हो ! जुवो काळने दाझ सु० ९
अधिकी उपाधि राखता, प्रायश्चित हो ! निशीथ मोझार,
चौद उपकरण भाखीया, सूत्र हो ! प्रश्नव्याकरण सार सु० १०
अधिकी उपाधि राखता, मजुरो हो ! जोइए बे चार,
पारसल ने वी पी तणा क्या लगी हो ! लखु समाचार. सु० ११
हुकम करे गृहस्थी उपरे, एने हो ! देजो जीमाय (जमाडी),
आटलो रुपिया दो रोकडा दड चोमासी हो ! कह्यो निशीथ माय.सु० १२

कपडा धोवे रगे नहीं, आचारांगे हो ! पाचमे अध्ययन,
टीकाकार जिन कल्पीने, स्थिविरकल्पी हो ! कारणमा लीन. सु० १३
जीव उत्पत्ति कारणे, अथवा हो ? असूत्री नाण,
फासुक पाणीथी धोवतां, अपवादे हो ! रहे जिन आण सु० १४
कारणथी पीळा कर्यां, कारण मट्यु हो ! केम राखे एह ?
शेठ बिलाडी सबधथी, गाडरीया हो ! करे बें बें तेह सु० १५
साधु लेवो कल्पे नहीं, नहीं कल्पे हो ! सोडा साजीखार,
शासनथी श्रद्धा उतरे, दुर्लभबोधी हो ! अनत ससार. सु १६
जीव अनता निगोदमा, कुण राखे हो ! तेनी दरकार,
आगळ साधु टाळता, सघट्टे हो ! नहीं लेता आहार सु. १७
घसी घसी साधु दीये, काई जाणे हो ! जानमा जाये साथ,
विषय वासना उपजे पट्ठा मट्ठा हो ! अनुयोगमां वात सु. १८
उपदेश देवे गृहस्थी बनी, घृत जेम हो ! वापरजो नीर !
पोते धोबी घाट माडता, केम पामे हो ! भवजल तीर. सु. १९
गृहस्थनु मोटु घर होये, तो साधु हो ! लावे सेर पाच !
मोटा साधु चोमासु करे ! साधु हो ! लावे मण पाच. सु २०
राखे राखोडी मायने, निऊण फुल्ण हो ! उपजे निगोद,
गृहस्थीथी आगळ वध्या, पाटे बेठा हो ! करे प्रमोद सु २१
कदाचित कारण पडे, अपवादे हो ! सेवे साजीखार,
सचय करी नित्य वापरे, जावे हो ! जन्मारो हार सु २२
ढुढक वापरे मातरु, सवेगी हो ! पड्या साधु लार (पछवाडे)
आपसमां निंदा करे ! केनो केवो हो ! शुद्धाचार सु २३

विहार करे मुनिराजजी, साथे हो ! घणा पातरा लोट,
आन्या वीरना पोठीया, नहीं उचके हो ! गृहस्थीने देवे पोठ सु.२४
दिगम्बरथी चर्चा करे, जीर्ण वस्त्र हो ! ते नग्न समान !
स्वल्प वस्त्र राखशु, ते बधु हो ! पोथीनु ज्ञान सु २५
झीणा कपडा मलमल तणा, रग्या हो ! केसरीये रग,
ओढे तरुणी साधवी, जेना दीसे हो ! उघाडा अग. सु २६
मलाघरनी नारी होवे, राखे हो ! लोकोनी लाज
मोक्ष कारण माथु मुडीयु, सुख शीलीया हो ! बगाडे काज सु. २७
ओघनिर्युक्तिमां कह्यु, वस्त्र पात्रनु हो पूरु प्रमाण,
सत्र परीक्षा जो लेवे, भला मुडा हो ! करे पीछाण सु. २८
सोमा पाच टका नहीं, मळे हो ! जिनाज्ञा धार,
आडम्बरी भेळा भल्या, आणाखडे हो ! केम पामे पार सु. २९
आणा पाळवी दूर रहीं, थोडा हो ! जाणे आगम वात,
उत्सूत्र बोले अज्ञानथी, तेथी हो ! लागे मिथ्यात्व. सु. ३
जेवी वात छे वस्त्रनी तेवी हो ! पातरानी जाण,
केटलु लखु बापजी ! नहीं छानु हो ! तमने केवळ ज्ञान सु ३
परमाणु देखाडे पात्रा तणु, मूल्य हो ! करावे आप;
दडा उतरावे तरपणी, ज्ञानीये हो ! कह्यो वज्र पाप. सु ३
जीरण वस्त्र पातरा नाखी हो ! नवा लेवे मोल;
वस्त्र क्रिया पहेलो अंगमा टड कह्यो हो ! निशीथ देखो बोल सु ३
एक जोडीने वापरे बीजी हो ! राखे भडार;
तीजी जोडी देवे रगवा, पेला पेली हो ! कोण करे विचार सु. ३

हवे हो हाथ थाकी गयो, नहीं हो ! कोई लीलानो पार;
मुनि मडळ उद्धारजो, खोटो खरो हो ! तमारो परिवार सु ३९

ढाल ११ मी—मुनिने वस्त्र तथा पात्र दोषित न लेवा अने निर्दोषित पण प्रमाणोपेत राखवा अने राखे ते उपर पण ममत्वभाव न राखवो अने सचय पण न करवो, केवल सयमयात्रा निभाववा माटेज राखवा

सावद्य निर्वद्य अधिकार

दोहरा.

सावद्य योग तजी करी, लीधो सयमभार,
जाव जीव नहीं आचरे, वीर वचन अणगार १
सावद्य भाषा बोले नहीं, जेहथी लागे पाप,
आदेश उपदेश जाण्या विना, करवो नहिं आलाप २

ढाळ १२ मी

निर्वद्यक्रिया आचरे, करे हो ! निर्वद्य उपदेश,
मुनि गणमाहे शोभता, नहीं लागे हो ! जेने पापनो लेश मु० १
गृहस्थ योग सावद्य कह्या, नहीं कल्पे हो ! आवो नाओ उठ,
अहीं बेसो अमुको करो, सावद्य बोल्या हो ! सत्यने कह्यो झुठ
मु० २

चीठी तार देई करी, बोलावे हो ! गृहस्थ राखे संग;
पाचक्रिया आगम कही, होवे हो ! सयमनो भग सु० ३
बदोवस्त पगारनो, खाणु पीणु हो ! करे मुनि सार;
रोकडीयो रहे वाणीयो, देखादेखी हो ! वध्यो प्रचार सु० ४
रचना करावे पहाडनी, उभा हो ! रहे पोते आप,
अमुको लबो पहोळो करो अज्ञानी हो ! रहे सेवे बहु पाप. सु० ५
बधावे उपासरा करावे हो ! जीर्णोद्धार;
गृहस्थ जेम उभा रहे, परभवनो हो ! नहीं डर लगार सु० ६
पौषधशाळा उपासरा, निशक हो ! दीये आदेश,
अहीं चोकी आलिउ करो ! अहीं वाचशे हो ! व्याख्यान हमेश.सु०७
अमुकी बारी मेडो करो, भडारीयु हो ! करो पुस्तक काज;
ओछा जीवन कारणे, आज्ञा मुकी हो ! नहीं आवे लाज सु० ८
अणु मात्र पृथ्वीकायमां, जळबिंदु ए हो ! कह्या जीव असख्य,
त्रस थावर हणावता, लज्जा छोडी हो ! हुवा नि.शक सु० ९
लीपे साधु कारणे, छवावे हो ! छापरां केइ छाण;
आचारांगमां वरजीया, दड कह्यो हो ! निशीथ पिछाण. सु० १०
मारा गच्छनो उपासरो, नहीं उतरे हो ! बीजो एनी माह;
घर छोडी मठ बांधीया, सूयगडांगे हो ! कह्या गृहस्थ
तेह. सु० ११
उपर लगावे पाटीउ, जेमा हो ! पोतानु नाम;
एक देखी बीजो करे, एम बगड्यु हो ! इण भरतनु काम सु० १२

स्वाध्याय ध्यान वर्यु त्रुटीए, उभा भणावे हो ! पूजाना पाठ;
सावद्य निर्विध नहीं गणे, आणा लोपी हो ! करी मनना ठाठ.
सु० १३

चैत्यवासी पेहला कोइ, नहीं भणाइ हो ! कोई पूजा साध,
आगम पाठ दीसे नहीं, पासत्या ए हो ! मुकी मर्याद. सु० १४

साधु गावे रागथी, जेम जेम वागे हो ! मृदग ताल;
द्रव्य स्तव जेणे सेवीयो, द्रव्यलींगी हो ! भावे कह्या बाल सु० १५

अमुको करो अमुको करो, लावो मुको हो ! वळी बोले एम;
चैत्यवासी बनी रह्या, स्वाहा ! हो ! साधु बोले केम सु० १६

मुख आगळ राखी मुहपत्ति, यत्ना पूर्वक हो ! बोले अणगार,
उघाडे मोढे बोलता, सावद्य लागे हो ! भगवती मोझार सु० १७

मोढु बाधी ढुढके, कुलिंगी हो ! जाणे आयाढक,
कमरमा राखे पीलीया, उघाडे मोढे हो ! बोले निशक सु० १८

प्रतिष्ठा अविधि करे, अजन शलाका हो ! करे आरभ घोर,
कल्पित ग्रथ बनावीने, साहु थोडा हो ! मळ्या बहु चोर सु० १९

उभींओ चीतरावे आपनी, फोटा पडावे हो ! देवे आदेश,
लूटे प्राण छकायना, गाडा गृहस्थी हो ! नही समजे लेश सु० २०

आगळ कागळ मोकले, अमुक दिने हो ! अमुक घडीवार,
अमुक रस्ते आवशु, भेगो करजो हो ! वरघोडो तैयार सु० २१

कदाचित प्रमादथी, कारण पामी हो ! नहीं आवे लोक,

गाम बहार थै नीकळे (अथवा) बहार उतरे हो ! करे घणों
शोक. सु० २२

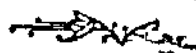
गच्छ श्रावक बोलावीने, कोप करी हो ! बोले ऋषिराय,
गच्छनु सारू लागे नही, मडदा जेम हो ! नहीं आवे
मुनिराय. सु० २३

शासननी उन्नति हुए, उलटो हो ! देवे उपदेश,
क्रोध करे दडे रमे (लडे), वर घोडामा हो! धुळ पडे विशेष सु० २४
देशकाल देखे नही, आडम्बर हो ! करे देखादेख,
गुणहीना गर्वे चडे, मोटा मोटा हो ! लखावे लेख सु० २५
चरित्र छपावे आपणा, जेमा हो ! नहीं (लखे) अवगुण एक,
सोमो टको साचो होवे, पोलमा पोल हो ! छपे अनेक. सु० २६
कदाचित आ भारतमा, आडम्बरी हो ! धुतीने खाय,
आपथी वात छानी नहीं, परमाधामी हो ! देशे समजाय (जावी)सु २७
उत्तराध्ययन पात्रीशमा, नहीं वाछे हो पूजा सत्कार
आदेश देवे कइ विधि, आचारांग हो ! नहीं साधु आचार. सु०२८
दीवो रखावे उपाशरे, लेवे हो गृहस्थीनु नाम,
उज्जेइमा फरता फरे, मायाचारी हो ! तु जाणे स्वाम सु० २९
घडीयाळ राखे टाइमनी, चावी देवे हो ! ते पोते आप;
परिग्रहने आरभ करे, नहीं डरे हो ! कोण गणे पाप सु० ३०
चप्पु राखे बहु मुला, सूई कातर हो ! केइ ओजार;
कर्म विटम्बणा शु रखु, नोटो गिन्नीए हो ! सेवे अत्याचार सु० ३१

जेवा साधु तेवी साधवी, वदे हो ! वळी [illegible]
शामाटे घर छोडीउं, आश्चर्य हेवे हो ! [illegible]
साधु समाजनी आ दशा, साध्वीओनी हो [illegible]
गुप्त गोटाळा छे घणा, बहुलो हो ! [illegible]
खोटी आचरणा देखीने, केइ जीव हो ! [illegible]
तेनु कारण साधु साधवी, तेयी हो ! समकित [illegible]
श्रावकनी साधु उपरे श्रद्धा, भक्ति हो रहे [illegible]
हालनी 'आचरणा' देखीने, केवी श्रद्धा हो ! [illegible]
धात छानी नहीं आपथी, मारु स्वत्व हो ! [illegible]
उद्धार करो मारा बापजी, बनी रहे हो [illegible]

ढाळ १२ मी—मुनि हमेशा निर्वद्य [illegible]
तथा प्रवृत्ति पण निर्वद्य राखे, सावद्य [illegible]
थाथी वीतरागनी आज्ञानो भग थाय [illegible]
राखवो तथा पोताना नवदीक्षितोने पण [illegible]

विहार अधिकार



दुहा.

प्रति बध मुनिने नहीं, करे [illegible]
विचरे देशो देशमा, तेरे [illegible]

ढाळ १२ मी.

देशी पूर्वनी.

शीत उष्ण एक मासनो, चोमासे, हो ! रहे मास चार,
आचारांग बीजा क्षेत्रमां, वमणु तमणु हो ! रहे काळ बहार सु० १
भोळा ग्रहस्थ समजे नहीं, अधिकी विनती हो ! करे करजोड,
बने आज्ञा बहार ते, रहे राखे हो ! जिन आज्ञा तोड सु० २
आचारागमां वरजीयु, वृहत् कल्प हो ! नहीं कल्पे एम,
दोष कह्यो निशीथमां, जबरदस्ती हो ! कल्प उलघे केम. सु० ३
नाव बेसी नदी उतरे, नहीं रहे हो ! मुनि एकज ठाम,
अधिक रहे ममता वधे, मारो हो ! उपाश्रय गाम. सु० ४
मारा श्रावक मारी श्राविका, मारु हो ! पाठशाळे नाम,
मारो गच्छ क्रिया करो, एम बगडयु हो ! साधुनु काम सु० ५
पीयरमा नारी रहे, जमाइ हो ! करे सासरे वास,
एक स्थाने साधु रहे, होवे हो ! बहु मान नाश सु० ६
मारडपक्षी उपमा, विचरे हो मुनि देश विदेश,
पळे चारित्र निर्मळु, श्रावकने हो ! नवो मळे उपदेश सु० ७
अगोपाग हीणा थता अथवा हो ! रोग होवे तन,
स्थिविर भूमि पामीया, एक स्थाने हो ! करे स्थिरमन सु०
कारण रहावो उपधानने, अठाईओच्छवे हो ! पूजामा रग
योग करवु शिष्यने, बीजे स्थाने हो ! नहीं पडित सग सु०

वम आज्ञा वीतरागनी, आज्ञा लोपी हो करे गणी धर्म;
आचारांग पहेला अगमा, नही जाण्यो हो! तेणे धर्मनो मर्म सु० १०

मोटी ममता बाधता, स्त्रीओ साथे हो! करे अधिक स्नेह;
संचय परिचय राखे घणो, सयम खोवे हो! नहीं तेमा संदेह
सु० ११

रस वृद्धि सुखशीलीआ, मठवासी हो! केम छोडे स्थान,
रडापो मोटा घरतणो शु लखु हो! जाणो भगवान सु० १२
ज्ञान भडार नामथी, माहे राखे हो! पात्रानी जोड;
गृहस्थीथी आगळ चडे, ममता लागी हो! नहीं शके छोड सु० १३
भ्रष्ट कह्या आचारथी **दशवैकालिक** हो! छठे अध्ययन,
समवायांग सबळो कह्यो दंड ते तो हो न देखे **निशीथने**
नयन सु० १४

चोमासानी विनति, तुर्त हो! बोले स्वामी एम,
आगेवान कहो कोण छे, बदोबस्त हो! खरचनो केम सु० १५
अमुक गामना श्रावको, कही गया हो! बे चार हजार;
काईक अधिकु तमे करो, पीळी पल्टणना हो! आवा समाचार
सु० १६

पदवी देवा पन्यासनी, करावबा हो साधुने योग,
लहीया पंडित चार छे, बे त्रण हो! मजुरीया लोक सु० १७
कोईक पुस्तक मंगाववा लखाववा हो! सूत्र बे चार,
ईत्यम पीत्थम आशरो, खरच हो! थशे आठ दश हजार. सु० १८

योग्यने न दे वाचना, अयोग्यने हो ! देवे सूत्र ज्ञान;
गुरुजी भागी होवे दडना, जुओ हो ! निशीथ दे ध्यान सु० ३
साध्वीओ भणे ब्राह्मण कने, क्या रही हो ! जैनशासन रीत;
बृहत्कल्प चिलमीली कहीं, अन्यतीर्थे हो केनी प्रतीत. सु० ४
गणी उपाध्याय पन्यासजी, बेठा हो ! कचेरी माड;
अन्यतीर्थी पासे भणे, निशीथ हो ! कह्यो चोमासी दड सु० ५
पोते प्रमादी थै रह्या, केम करे हो ! शिष्यनी सार;
शिष्य अविनीत बनी गया, ब्राह्मण पासे हो ! नहीं विनय
विचार सु० ६
ब्राह्मण पासे भणता थका, लघुता हो ! शासननी थाय,
द्रव्य खरचाये ज्ञाननु, गुरुभक्ति हो ! दीधी उठाय सु० ७
एकथी बीजा गच्छमा, ज्ञान कारण हो ! जावे मुनिराय;
बृहत्कल्प व्यवहारमा, अन्य तीर्थी हो ! गुरु नहीं कराय सु० ८
देशकाळ देखीने, अपवादे हो ! करेलु काम,
ते हमेशा करवु नहीं, पडित राखी हो ! व्यर्थ करे नाम सु० ९
गुरुगमथी भणता थका, जाणे हो ! आगमनो रहस्य;
गुण घणा लखु केटला, शासन शोभा हो ! वधे विशेष सु० १०
एक साधु भण्यो होये, भणावे हो ! ते पाच पचीस;
पचीस भणावे पाचशो, पाचसो हो ! होवे जग ईश सु० ११
पण पुरुषार्थ कोण करे, पैसा देवा हो ! श्रावक मजबूत;
पटेलाई पड्या करे, एम बगड्या हो ! साधुना सूत सु० १२

जैन शैली जाणे नहीं, नहीं जाणे हो ! द्रव्यक्षेत्र काळ;
बीजाने केम तारशे, पोते हो ! बनी बेठा बाल. सु० १३
क्रिया करे योगनी, पदवी हो ! मळी जाये राज,
पछी आगम कोण भणे, अज्ञाने हो ! एम रही समाज. सु० १४
मोटा मोटा पन्यासजी, वह्या हो ! भगवती योग;
अर्थ नहीं जाणे आवश्यके, थावे हो ! केम पदवी योग्य सु० १५
पाना लीधा हाथमा, करावे हो ! मोटा उपधान;
आगे सुणजो नाथजी, लघु हो ! साधुना व्याख्यान. सु० १६

ढाळ १४ मी—मुनिए आपणा शिष्यने विनय भक्तिमा प्रवृत्ति करावत्री जैनागमनो सारी पेठे ज्ञानाभ्यास करावत्रो परन्तु पोते प्रमादी थई अन्यतीर्थी पासे भणावी स्वच्छंदी नहि बनावत्रो

व्याख्यान अधिकार.

दुहा.

गीतार्थ जे मुनिवरा, आगममा प्रवीण,
स्वाध्यायमा नित्य रमे, जिम जळ माहे मीन १
परषदा आवे पासमा, देवे मधुर उपदेश,
घर घरमा फरवु नहीं, जैन सिद्धातनु रहस्य. २

(ढाल १५ मी.)

देशी पूर्वनी.

नय निक्षेप प्रमाणथी, स्याद्वाद हो ! जाणे सप्त भंग,
उत्सर्ग अपवादने ओळखे, चित्ते हो ! वैराग्यनो रग सु० १
वचन अपेक्षा ज्ञाता हुए, दश बोल हो ! सोळ बोलनो जाण,
उत्पातिकी बुद्धि होये, पाटे बेसी हो ! वाचे व्याख्यान. सु० २
गुरुकुळ वासो सेवे नहीं, नहीं लीधु हो ! गुरुगमथी ज्ञान,
एकान्त विद्या ब्राह्मणी, वध्यो हो ! बहुलो अज्ञान सु० ३
क्रिया प्रतिक्रमणु शुद्ध नहीं, नहीं हो ! नव तत्वनो जाण,
स्याद्वाद नहीं ओळखे, एवा गुरु हो ! केम वाचे व्याख्यान सु० ४
बे चार चरित्रने, कल्प वाचे हो ! ब्राह्मणनी पास,
गुरुनी परवा कोण करे, सुठ गाठीये हो ! बने गाधी खास सु० ५
निशीथ आचारांग भण्या विना, नहीं कल्पे हो ! वीचरे आगेवान,
हमणा पदवीधरनी वारता, जाणे हो ! महारो भगवान. सु० ६
मोटा मोटा पदवीधरा, तेनो हो ! सुणीए व्याख्यान,
उपदेश उजमणा तणा, अमुको अमुको हो ! साधुने दान. सु० ७
पुस्तक लखावो साधुना, उपकरण हो ! देजो अनेक,
ज्ञानभंडारमा आपो रुपिया, लावो लावो हो ! करे विशेष सु० ८
तप अठाइ पारणे, गुरु तेडी हो ! केइ देवे दान,
फळ बतावे पर्वत जेवो, तृष्णा हो ! लागी जुओ अज्ञान. सु० ९

ब्राह्मण वाचे पुराणने, सर्व छोडो हो ! दो अमने दान,
सीधा जावुं वैकुंठमा, एम बगडयु हो ! साधुनु मान सु० १०
मुनि तेड्या जावे नहीं, नहीं कल्पे हो ! कीधो मुनिने काज,
मूल्य देइ न लखाववुं, एम भाख्यु हो ! श्रीजिनराज सु० ११
आचारांग वाचे नहीं, दशवैकालिक हो ! वाचे केम,
प्रश्न व्याकरण वाचे नहीं, छेद सूत्रनो हो ! न लेवे नाम. सु० १२
कदी कोई वाचतो, जाणे हो ! साधुनो आचार,
उत्सर्ग अपवाद लगावीने, वधारे हो ! अनत ससार सु० १३
गुरु जेवा चेला मळ्या, कोण काढे हो ! आ वातनो तोल,
साधु आचार बतावता, खुली जावे हो ! पोतानी पोल सु० १४
महिला परिचय अति घणो, सधवा विधवा हो ! मळे मस्तान,
सेवा करो स्वामी तणी, स्वामी बेठा हो ! जाणे गोपीमा कान
(कृष्ण) सु० १५
साधुना स्थाने साधवी, वरजी हो ! वृहत् कल्पमा नाथ !
व्याख्यान अथवा वाचना, आवे हो ! सत्र चउविव साथ सु० १६
अगीतार्थ पासत्था होवे, केम वाचे हो ! साधुनो आचार,
आण रही नहीं कोइनी, अधोअध हो ! मचीयो अधकार सु० १७
साधु जाणे श्रावक जाणशे, तो करशे हो ! वशी खेंचाताण,
श्रावक पण ढीला थया, अधा उदर हो ! थोथा धान सु० १८
हानि होवे छे ज्ञाननी, श्रावक हो ! नहीं पूछे सार,

कान तणा रसीया थया, शु करवा हो ! सुणे साधु आचार सु० १९
मोटा मोटा मापण करे, कोरा हो ! पोते रहेवे आप,
पोथीना वेंगण थया, केम पडे हो ! बीजापर छाप. सु० २०
पाटे बेसी साधवी, पुरुष आगळ हो ! वाचे व्याख्यान,
दुराचार वध्यो घणो, कलियुगना हो ! ए छे अनाण सु० २१
श्रृंगार हास्यादि घणा, व्याख्यान हो ! आवे नवनव रग,
स्वपर मति बहु जन मले, काम पड्या हो ! होवे शीलनो भग
सु० २२
जुओ आज्ञा वीतरागनी, दीर्घ दृष्टि हो ! देइने ध्यान,
नाक अणी एडी पग तणी, नहीं दीसे हो ! शुणवा व्याख्यान
सु० २३
आचारांगमा साध्वी, व्याख्यान सुणवा हो ! जावे त्रण सग,
चार हाथ पना तणी, चादर थी हो ! ढाके अग उपाग. सु० २४
दशाश्रुत स्कंधमां ओपमा, नारीनो हो ! जोवो अधिकार,
घरनी झुपडी बाळीने, बीजानो हो ! केम ठंड निवार सु० २५
निरयावलीका ज्ञातासूत्रमां, बाईओने हो ! दीधो उपदेश,
एवी विधिए दे साधवी, जाणी हो ! सिद्धातनु रहस्य सु० २६
श्रावक पण समजे नहीं, जोई हो ! प्रत्यक्ष दृष्टात,
फूटी नाव अवो नाविक, केम पामे हो ! भवजलनो अंत सु० २७
उपदेश देवे द्रव्यनो, फड करे हो ! टीप गामोगाम,
सस्था स्थापे नवी नवी, जेमा हो ! पोतानु नाम सु० २८

एक सस्था सीने नहीं, तोडे हो ! करे आपणु काम;
ऋषभ कुट चक्री देखीने, भुसाडी हो ! करे आपनुं नाम सु० २९
केशव प्रतिकेशवा, कलियुगी हो ! जागीआ सेतान,
एक बीजानु खडन करे, नोटीसो हो ! देवे मस्तान सु० ३०
एकने शिष्यनी लालसा, बीजाने हो ! हृदयमा मान,
स्वार्थथी शुद्ध रहे नहीं, किम मळे हो ! समाजने ज्ञान सु० ३१
समय नहीं झगडा तणो, आपसमा हो ! राखो धर्म स्नेह,
एक बीजाने मदद करो, मार्ग हो ! सुधारानो एह सु० ३२
शासन उपदेशकों उपरे, लाभ हानिना हो ! थाशे जोखमदार,
उठो सभाळो समाजने, रात गई हो ! उग्यो दिनकार सु० ३३

ढाळ १५ मी—मुनि गुरुकुलवासी सेवन करी स्वसमय पर-समयना सारी पेठे जाणकार थाय, तर्क वितर्क अने समाधान करवाने सारो अभ्यास करे अने पोते अन्त करणथी वैराग्य दृष्टि, शुद्धाचरण राखे एवा मुनिए व्याख्यान आपी भव्यात्माओनुं अवश्य कल्याण करवु जोइए परन्तु जेणे जैनसिद्धान्तो न वाच्या होय अने गुरुगमथी ज्ञान न मेळव्यु होय अने अदरमा स्वार्थनी लालसा बनी होय तो पछी तेवा व्याख्यान वाची दुनीयानो शु उद्धार करनार ? तेओने तो मौन धारण करी गुरुसेवामा–गुरु आज्ञामाज पोतानु संयम पाळवुं जोइए

तप अधिकार.



दोहा

आठमु लक्षण साधुनु, तप करी शोषे तन,
पुजा सत्कार वाछे नहीं, निर्मळ राखे मन १
बागवाडी वनमा रहे, करे समाधि ध्यान,
लब्धि अनेके उपजे, निर्मळ केवळ ज्ञान. २

(ढाल १६ मी.)

देशी पूर्ववत्

जेम जेम तप मुनि आचरे, तेम तेम हो ! वधे अधिकु तेज;
क्षात्यादिक गुण गण वधे, निकाचित हो ! कर्म तोडे सहेज. सु० १
रगी अभ्यतर आतमा, जाणो हो ! जेने मुक्ति मोझार,
वाल क्रीडा आ भरतनी, एक पक्षी हो ! लखुं समाचार. सु० २
मास खमण मुनिवर करे, त्रीश गामे हो ! मेले समाचार,
अमुक दिने होसे पारणु, छपावे हो ! पत्रोंमें जाहेर. सु० ३
टेक्ष पडे गृहस्थी उपरे, मेळा थाए हो ! घणा गामना लोक,
महोत्सव वरघोडा काढता, करे हो ! आडंबर फोक (व्यर्थ) सु० ४
घर घरमा तैयारी थती, भात पाणीनो ! हो स्वामी देनो लाभ,
भूखे मरी भेगी करी, कमाई हो ! उड जाये आभ (आकाश) सु० ५
कदाचित गृहस्थ नहीं करे, कोप करी हो ! तपसी बोले एम,

शु अमने जाणो नहीं, मन वधे हो ! तप खोवे तेम सु० ६
तपसी नाम धरावीने, पीए हो ! अध वलोइ छास,
सुठादिक केई वापरे, दूध तणो हो ! मीठु घोवण खास. सु० ७
लाबा लाबा कागळ लखे, ढुढकनी हो ! कीधा मास चार,
गुप्त वात खोले नहीं, अभिमानी हो ! सेवे माया चार. सु० ८
धर्मीनु नाम धरावीने, लेवे हो ! तपस्यानु नाम,
काम करे अधर्मना, शु लखु हो ! जाणो आतमराम सु० ९
क्रोड वर्ष सुधी तप करे, करे हो ! कोई क्रोध लगार,
मान मायाने लोभथी, वधारे हो ! उलटो ससार सु० १०
समवायांग बत्रीशमा, वाची हो ! करे आतम खप,
अज्ञात कुलनी गोचरी, अजाण्यो हो ! मुनि करे तप सु० ११

ढाळ १६ मी—रागद्वेषनु शान्तपणु अने मात्र कर्मक्षय निमित्ते घणु करी गुप्तपणेज तप करवु जोईए, किन्तु मानपूजा—सत्कार माटे न करे तेम तप करी क्रोध पण न करवो जोईए

स्त्री परिचय निषेध अधिकार.



दोहरा

नारी होय चित्रामनी, नहीं रहे मुनिराय,
दशवैकालिक आठमें, उदर बीलाडी न्याय

ढाल १७ मी

देशी पूर्ववत्

सर्व व्रतमा दुष्कर कह्युं, उत्तराध्ययनमां हो ! कही नव वाड;
दशमो कोट गणो जापतो, मुनि रहे हो ! वनवाडी के पहाड. सु० १
श्राविका तो दूर रही, साध्वीनो हो ! केटलो बदोबस्त;
साधु स्थाने साधवी, नहीं आवे हो ! निशीथनो मत. सु० २
अठाई ओछव उपाशरे, ज्या रहे हो ! श्रीवीरना साध;
मृदग ताल वीणा तणा, हारमोनीयम वाजा हो ! नवा नवा साद सु० ३
गायन मडळी बोलावीने, नचावे हो ! करी नारीना रुप,
करे विषय उदीरणा, तु जाणे हो ! मारा त्रिभुवन भूप सु० ४
गरबो गावे रातमा, ताली दवे हो ! नारी मळी साथ,
भक्ति नामे लोक भोळवा, इद्रिय पोषे हो ! तुं जाणे नाथ. सु० ५
राते दीवो कल्पे नहीं, जिन मदिरे हो ! कह्यो वीतराग,
धर्म नाम अधर्म करे, शासने हो ! लगान्यो दाग. सु० ६
गौतम स्वामी आगळे, नाटक कर्यो हो ! सूर्याभदेव,
वाणिक समजावे कुहेतुथी, पासत्थाए हो ! पाडी खोटी टेव. सु० ७
स्थुलिभद्र वेश्या घरे, चित्र शाले हो ! कीधु चोमास,
तो केम उतरो उपाशरे, वीरे वरज्यो हो ! वेश्यानो वास सु० ८
क्या गौतम क्या गीदडा(शियाळ), बाळ हृदय हो! शु जाणे अज्ञान;
क्या नवगजो सिंह केसरी, क्या खर हो ! कोण करे पीछाण. सु० ९

क्रिया करावे केई मुनि, आलोचन हो ! देवे केई साध,
प्रतिक्रमण करावता, नारी साथे हो ! मेली मर्याद सु० १०
नारीने साधु कागळ लखे, वधे परिचय हो ! तु जाणे नाथ,
अशुद्ध व्यवहार लोकमा, विहारमां हो ! रहे बाईओ साथ. सु० ११
बाधी दृष्टिरागमा, करे हो ! चोमासा साथ;
माल पाणी मुनिने मळे, आधाकर्मी हो ! तु जाणे नाथ सु० १२
साधु गौतम सारखा, नारी हो ! चदनबाळा जो होय,
तो पण परिचय खोटो हुवे, प्रत्यक्ष दशा हो ! यतिओनी जोय.सु० १३
अग्नि पासे घृत मुकता, लींबु नामे हो ! व्यापे मुखे नीर,
सूयगडांग चोथे कह्यो, नारी नागण हो ! मुके कामना तीर.सु० १४
नारी सग निवारसे, आतम हो ! इंद्रिय करे दम,
नारदनी पेरे पामशो, रस हो ! आतम उपशम सु० १५

ढाळ १७ मी—साध्वी के श्राविका गमे ते होय परन्तु ब्रह्मचारी पुरुषोने नारी साथे बिलकुल परिचय नहिज करवो.

एकलविहार अधिकार.

दोहा.

कळिकाळमा एकलो, नहीं विचरे अणगार,
गुरुकुळ वासो सेवता, तुरत तरे ससार. १

(ढाल १८ मी.)

देशी पूर्व प्रमाणे.

निशीथ आचारांग भण्या नहीं, नहीं भण्या हो ! ते जैन सिद्धात,
गुरु कुळवास छोडीने, अभिमानी हो ! विचरे एकात. सु० १
ढाळ चोपाइ कथा कहाणीयो, रीझावे हो ! अज्ञानी लोक,
मन मानी मोझो करे, अनाचारी हो ! सेवे केइ दोष सु० २
स्वच्छदे अकुश विना, कोण रोके हो ! कहो केनी काण,
रेल विहारी मुनि केइ, मला भुडा हो ! कोण करे पीछाण सु० ३
श्रावक पण भोळा घणा, नेठे मळ्या हो ! माने गुरुराज,
बंने आज्ञा बारणे, जाणे दीधो हो ! चोरोने सहाज, सु० ४
पासत्था कुशीलीया, प्रशसता हो ! चोमासी दंड,
स्वच्छदाना गुण कहे, निशीथे हो ! कह्या गुरु (भारी) दड.सु०५
अगीतार्थने एकलो, नहीं कल्पे हो ! बृहत्कल्पनो पाठ,
कहेवु किशु एकनु, नहीं कल्पे हे ! जो भेला रहे साठ सु० ६
केइ ध्यानी मुनि भणे, केइ हो ! तपस्या करे पूर,
कठ कळा गायन करे, आज्ञा विना हो ! शासन रहे दूर. सु० ७
ठाणांगठाणे आठमे, आठ गुण हो ! होवे जेने साथ,
सिंह जेम विचरे एकलो, आज्ञा दीधी हो ! जेने जगनाथ, सु० ८
उत्तराध्ययने ओगणतीसमे, गच्छ छोडे हो ! जो होवे वीर,
तीजे ठाणे भाने भावना, क्यारे विचरू हो ! एकाकी धरी धीर.सु०९

भलु होवे साधु सिद्ध थयो, नहींतर हो ! उठे प्रतीत,
तेथी श्रद्धा शिथील थई, हासी हो ! करे लोकनी रीत. सु० १०
पूर्वे पाप वाणिये कर्यां, उदय आवे हो ! पहोंचे मुनि पास,
माला मत्र बतावी दो, जेम मळे हो ! धननी मोटी रास. सु० ११
झगडो जीतु राज्यमा; पुत्र हो ! होवे एक बेज
पदवी देवरावु आपने, जगमा हो ! जस मोटो छेज. सु० १२
गृहस्थी धनना लोभीया, साधुने हो ! पदवीनु जाण,
बने आणा उची धरी, ए छे हो ! कलियुगना ए धाण सु० १३

ढाळ २० मी—छदमस्थ मुनियोने माटे आगममां कह्युं छे के भूत भविष्य के वर्तमान काळना निमित्त न बोलवा, तेथी घणी जातना नुकशान थाय छे माटे जिनाज्ञा पालक मुनिने कदी पण निमित्तादि ससार विधिना कार्यो नज करवा जोइये

तार टपाल अधिकार.



दोहरा

छोड्यो जगत स्नेह,
समाचार सुण एह

(ढाळ २० मी.)

देशी पूर्वनी

मानपूजाने कारणे, वाछे हो ! आदर सत्कार,
पुद्गलानदी जीवडा, खाली खोवे हो ! नरनो अवतार. सु० १
यत्र मत्र तंत्र करे, भाखे निमित्त हो ! करे भूति कर्म,
कामण टुमण दोरा करे, नहीं जाण्यो हो ! ते धर्मनो मर्म. सु० २
झाडा झपटा करे घणा, मादळीया हो ! मरे मजुर,
अक लीलाम बतावता, तेजी मदी हो ! केई साधे सुर सु० ३
वासक्षेप केइ करे, धरे हो ! केइ माथे हाथ,
केइ मूहुर्त्त बतावता, तु जाणे हो ! मारा कृपानाथ. सु० ४
पुण्य विना सिद्धि नहीं, फोकट हो ! खोवे प्रतीत;
उत्तम तो झळके नहीं, जाणो हो ! ए नीचनी रीत. सु० ५
भ्रष्ट कह्या आचारथी, दड कह्यो हो ! निशीथ मोझार,
विरोधी आज्ञा तणा, भगवतीमां हो ! जुओ अधिकार. सु० ६
सो वार साचु पडे, एक वार हो ! कदी पडे जूठ,
प्रतीति रहे नहीं जैननी, लोभी वणिक हो ! सयम लेवे लूट. सु० ७
आगम विहारी कारणे, सेवे हो ! कोइ अपवाद,
ओठु लेवे तेहनुं, नहीं शक्ति हो ! जुठो हठवाद. सु० ८
कष्ट के रोग आवे थका, धन कारण हो ! वाछे कोई मान;
शाति स्नात्र भणावता, ओठीं आबिल हो ! सिद्धचक्र ध्यान. सु० ९

धर्म लामना नामथी, लखे हो ! कर्मनी वात;
क्या सुधी लखु बापजी, पाखड माडच्यु हो ! धोळे दिने रात. सु० १०
गरज नहीं ग्रहस्थ तणी, स्वतन्त्र हो ! मस्यु जाणे राज,
शका रही नहीं कोइनी, एम बगड्यु हो ! भरतनु काज. सु० ११
पर्युषणनी क्षमापना, नहीं मळे हो ! भोजननो टाइम,
नहीं जोये नहीं देखता, क्षमापने हो ! लखे कुशळ क्षेम. सु० १२
मोटा मुनि चोमासु करे, सो पचास हो ! जोइए टपाल,
आचारज पन्यासनु, शुं कहेवुं हो ! ए तो मोतीनी माळ. सु० १३
टपालना पैसा तणु, थातो हशे हो ! केवो उपयोग,
विचार करे कोण तेहनो, सरखा सरखो हो ! मम्यो संयोग सु० १४
कमती नहीं कोइ ढुंढका, तेरा पंथीनी हो ! वळी अधिकी वात,
गुप्त गोटाळा छे घणा, नहीं छाना हो ! तु जाणे वात सु० १५
पार नहीं केटलु लखु, जाणो हो ! तमे जगदाधार,
करुणानिधि कृपा करो, भरतनो हो ! करो जल्दी उद्धार सु० १६

ढाळ २१ मी—संजोगा विपमुक्कस्स, आ न्यास्याने हमेशा स्मरणमां राखवु अने कागळ पत्र ना लिखवाथी गृहस्थ साथे घणा प्रकारनो परिचय वधी पडे छे ते पण रागद्वेषनु मूळ छे आर्तध्याननु वृक्ष छे तेथी बने तेटेलु दूर रहेवु जोइये.

(ढाल २१ मी)

देशी उपरनी

गच्छ नायक गीरुवा होवे, मोटुं कारण हो ! शासननु जाण;
समाचार लखावता, अपवादे हो ! रही जिन आण. सु० १
छोटा होवे साधु साध्वी, पत्र लखे हो ! पोताने नाम,
आवे पोताना नामथी, कोण जाणे हो ! शु करे काम. सु० २
दुकानदार गृहस्थी होवे, चिठी आवे हो ! नित्य बेज चार;
एक घर छोडी नीकन्या, थया हो ! केइ घर हजार. सु० ३
मोटी ओफीसमा सो पचास, नानीमा हो ! आवे दश वीस,
तार सुणी तुटी पडे, प्रतिक्रमणे हो ! पाडे बेठा चीस. सु० ४
कवर कार्ड टीकीट घणा, नोटो हो ! राखे मस्तान;
पारसल वी. पी तणा, गणता हो ! कोण राखे ज्ञान सु० ५
मोटा मोटा मुनिराजना, माडे हो ! दफतरमा नाम,
मन मानी मोजो करे, सोगणु हो ! गृहस्थथी काम. सु० ६
पारसलमा कपडा कांबळी, दवा हो ! साबुने तेल,
हुक्म करे रुपिया तणो, शु लखु हो ! आ भरतना खेल सु० ७
गाडा गृहस्थी पूछे नहीं, देवे हो ! ते रोकड दाम;
मनीओरडर मोकलावता, वळी आवे हो ! श्रावकने नाम. सु० ८
साधु स्त्रीओने कागळ लखे, साध्वी लखे हो ! पुरुषने नाम,
ऋशुद्ध व्यवहार लोकमा, कोण जाणे हो ! अतरना काम सु० ९

धर्म लाभना नामथी, लखे हो ! कर्मनी वात;
क्या सुधी लखु बापजी, पाखड माडयु हो ! धोळे दिने रात.सु० १०
गरज नहीं ग्रहस्थ तणी, स्वतत्र हो ! मरयु जाणे राज,
शका रही नहीं कोइनी, एम बगडयु हो ! भरतनु काज सु० ११
पर्युपणनी क्षमापना, नहीं मळे हो ! भोजननो टाइम,
नहीं जोये नहीं देखता, क्षमापने हो ! लखे कुशळ क्षेम. सु० १२
मोटा मुनि चोमासु करे, सो पचास हो ! जोइए टपाल,
आचारज पन्नासनु, शुं कहेवुं हो ! ए तो मोतीनी माळ. सु० १३
टपालना पैसा तणु, खातो हशे हो ! केवो उपयोग,
विचार करे कोण तेहनो, सरखा सरखो हो ! मल्यो संयोग सु० १४
कमती नहीं कोइ ढुढका, तेरा पंथीनी हो ! वळी अधिकी वात,
गुप्त गोटाळा छे घणा, नहीं छाना हो ! तु जाणे तात सु० १५
पार नहीं केटलु लखु, जाणो हो ! तमे जगदाधार,
करुणानिधि कृपा करो, भरतनो हो ! करो जलदी उद्धार सु० १६

ढाळ २१ मी—संजोगा विपमुकस्स, आ व्याख्याने हमेशां स्मरणमां राखवु अने कागळ पत्र ना लिखवाथी गृहस्थ साथे घणा प्रकारनो परिचय वधी पडे छे ते पण रागद्वेषनु मूळ छे आर्तध्याननु वृक्ष छे तेथी बने तेटेलु दूर रहेवु जोइये.

प्रतिक्रमण अधिकार.



दोहरा.

निरतिचार व्रत पाळता, कदाच लागे दोष,
शुद्ध उपयोग आलोचना, करता होय निर्दोष. १

(ढाल २२ मी)

देशी उपरनी

छ आवश्यक उपयोगथी, करता हो ! जीव थाय विशुद्ध,
जेम जेम अधिकी क्रिया भरी, तेम तेम हो ! उपयोग अशुद्ध सु०
छ आवश्यक सहुना एक छे, अधिकी क्रिया हो ! थता छेद भेद,
तीन चार थुइ तणा, चैत्यवदन हो ! काउसगना भेद सु० २
भावार्थ जाणे नहीं, क्रिया करे हो ! ते काळोकाळ,
द्रव्य आवश्यक अण उपयोगमा, ज्ञानी हो ! कहे तेहने बाल. सु०
प्रतिक्रमणना अतमा, मोठे शब्दे, हो ! बोलवे शात,
गाडरी प्रवाह जीवडा, कोण जाणे हो ! कहे तेहनो तत सु० ४
मोटी शात मुनिवर कहे, पक्खी चोमासी हो ! कर्यो प्रतिबंध,
सतिकर शरु थयु, भविष्यमा हो ! थाशे निबध. सु० ५
मोटा उपसर्ग कारणे, बनावी हो ! जाणी ते काळ,
हमेशा उपसर्ग नहीं, देवी कोपे हो ! समजे नहीं बाळ. सु० ६

निवृत्ति निर्वाण पाठमा, देवी पासे हो ! मागे निर्वाण,
भरत क्षेत्रना लोकनी, दशा बगडी हो ! नहीं रह्यो ज्ञान सु० ७
देव वीतराग जैनना, नहीं पूजे हो ! सरागी देव,
ते मार्ग लुप्त करे, सरागी हो ! पूजे नित्य मेव सु० ८
कयवली कम्मा पाठनो, कुळदेवी पूजी हो ! कहे ढुंढक एम,
श्रावक सरागी पूजे नहीं, उत्तर आपे हो ! गीतार्थ तेम सु० ९
सम्यग् दृष्टि जो सुर होवे, गुण कर्त्ता हो ! सुलभ बोधि जाण,
अवगुण बोले उलटुं थता, पूजनीय हो ! वीतराग पीछाण सु० १०
मोटा उपद्रव सघमा थता, स्मरण करे हो ! सम्यग् दृष्टि देव,
प्रतिक्रमण करता थका, उपद्रव हो ! नहीं होवे सदैव सु० ११
कामदेव चुलणी पिता, अरण कहो ! श्रावक पीछाण,
उपसर्ग सह्या मोटका, सरागी हो ! पूज्या नहीं जाण. सु० १२
अतिहिज्जा, श्रावक थया, तुंगीया तणो हो ! जुओ अधिकार,
मोक्ष कारण मार्थु मुडीयु, नहीं वाछे हो ! कोइ सहाय लगार. सु० १३
नहीं कहे तो उपद्रव करे, यतिओ हो ! एम घाले भर्म,
नहीं कहेवा वाळा सघमा घणा, अमे पड्या हो ! समजो तमे
मर्म सु० १४
अजितशांतिना अनमा, गाथा हो ! मिलावी साथ,
उदेपुरमा लघुशांतिने, शरु करी हो ! नहीं छानु नाथ सु० १५
छानु प्रतिक्रमणु गुपचुप करे, मोटु हो ! करे परखदा वीच,
अग्नि रुपा छूवे नहीं, मायाचारी हो ! ज्ञानी कहे नीच. सु० १६

रात्री प्रयाण करे नहीं, नहीं आये हो ! चोमासे बहार,
खाण रत्ननी सच होवे, हालना हो ! सुणीए समाचार. सु० ६
भूल उठावे ढुंढीया, पासत्था हो ! करे अधिकुं थाप,
ओछु अधिकुं बोलता, लागे हो ! मिथ्यात्वनो पाप सु० ७
नहीं करता गुरु कह्यु, अविधि हो ! लघु प्रायश्चित जाण,
विधि करता भवजल तरे, एवी हो ! श्रीजिनवरनी आण सु० ८
मर्यादा मुनिवर तणी, सत्र तणी हो ! करे कोशीश,
उचो धर्यो आचारने, शु लखु हो ! जाणो जगदीश सु० ९
नाम लेवे यात्रा तणो, साथे राखे हो ! गाडीने माल,
दाल वाटीने चूरमा, अहींथी हो ! लाग्यो मशनो ताल सु० १०
साधवीओ साथे रहे, विधवा हो ! रहे दश वीस,
माग्ये माई मळे कोई, शु लखु हो ! जाणो जगदीश. सु० ११
स्त्रीओ साथे साधुने, वरजे हो ! आचारांगे एम;
उत्तराध्ययने सोळमें, वाड भागे हो ! शीयळनी तेम सु० १२
साधु कारण तबु रहे, तबु कारण हो ! गाडीने उट,
जीव हणाय छ कायना, पूछेथी हो ! वळी बोले जूठ. सु० १३
आज्ञा चोरी वीतरागनी, महिला साथे हो ! [illegible] वाड,
ममता तो खुल्ली दीसे, पात्रमु [illegible] हो ! [illegible] गाड
(नाथ) सु० १४
उठे पाछली रातना, सव चाले हे ! [illegible] गामो गाम,
साधु-साध्वी रातें चालता, निंदा हो ! हेते ठामो ठाम.

उनु पाणी करे रातना, घडा भरी हो ! बाईयो रहे लार,
तेहज पाणी वापरे, यात्रा नामे हो ! संयम जावे हार. सु० १६
नीलण फूलण कोण गणे, कोण करे हो ! जीवोनी सार,
निरनुकपा अनुयोगमां, भक्ति नामे हो ! करे अत्याचार. सु० १७
सो जणा संघमा होवे, उनो पाणी हो ! पीवे दश वीस.
आधाकर्मी ए आरोगतां, साधु साध्वी हो ! भेगा पचवीस. सु० १८
सो पचास के बसो रहे, माल मळे हो ! सुणो तीर्थ नाथ;
मार्गमा मुक्ति नहीं, हाथ पकडी हो ! लै आवे साथ सु० १९
देवसूरिजीने तेडीआ, कुमारपाळे हो ! कढाव्यो संघ;
स्त्रीओ साथे कल्पे नहीं, उत्तर दीधो हो ! आगमनो रंग सु० २०
गुरु गौतम करी जातरा, अष्टापद हो ! एकला आप,
ते वखते संघ नहीं कह्यो, पासत्थाए हो ! पाछळ दीधु स्थाप सु० २१
यात्रा कीधी पाडवे, जाली आदि हो ! घणा मुनिराज,
पांचमां आठमा अंगमां, मुक्ति गया हो ! साधी
आतम काज सु० २२
चोमासे गामातरे, श्रावक हो ! जावे नहीं बीजे गाम,
संघ कढावे, जावे वंदवा, करे हो ! पोतानु काम. सु० २३
केई तो धनना लोभीया, केई हो ! जुओ पुत्रने काज,
केई रोगादिक काढवा, यात्रा करवा हो ! मळे समाज. सु० २४
वणिक ठगे बधा जगतने, नहीं मूके हो ! वीतराग देव,
तेने पण ठगवा भणी, नहीं छोडे हो ! अनादिनी टेव. सु० २५

भाग घाले दुकानमा, मीलोमा हो ! राखे कोइ भाग,
भाग राखी सट्टा करे, उजवलने हो ! लगावे दाघ. सु० २६

लोकोत्तर पक्ष क्रिया करे, वाछे हो ! लौकिकना सुख,
विष क्रिया मिथ्यात्वनी, एम भाख्यो हो ! आपे श्री मुख. सु० २७

धर्मशाळामा उतरे, पत्ते चोवट हो ! रमे कहेवा संघ,
राजा राणीने मारता, जुओ हो ! जातरानो रग सु० २८

अनार्य भाषा बोलता, गाली गुप्ता हो ! करे कलेश,
केइ धर्माढु चोरता, गीदड हो ! पहेरे वाघनो वेष सु० २९

केइ तीर्थ पण एवा थया, माडी बेटा हो ! दुकानोना काम,
मुनीम रोकडीया मळ्या, भेला करे हो ! फरीने दाम सु० ३०

पछी एकठु नाणु थता, शेर लेवे हो ! मीलोनु पाप,
के जमा राखे बेंकमा, वणिक लीलानु हो ! केम थाये माप सु० ३१

जीर्णोद्धार करावे नहीं, नहीं देवे हो ! बीजे तीर्थे दाम,
ट्रस्टी जाणे मारा बापनु, मोटा मळ्या हो ! थोडु करे काम सु० ३२

जैन सघ कहावता, ढुढक हो ! जावे वदन काज,
तेरा पंथी जावे पूजकने, आडबरथी हो ! एम बगडी समाज सु० ३३

धमाधमीमा धर्म नहीं, धर्म रह्यो ! निज आतम माह,
ते तो वीरला ओळखे, देखादेखी हो ! वाजात्रथे वनाह सु० ३४

यात्रा कारण जन मळे, नहीं हो ! जैन धर्मनो रग,
जो यात्रा तारक कही, दूरे मुक्यो हो ! सवेगनो सग सु० ३५

रामायण तो छे घणी, लीला हो ! जेनी अपरपार,
मेझरनामु वाचीने, भरतनो हो ! करो जल्दी उद्धार. सु० २६

ढाळ २३ मी—तीर्थयात्रा मोक्षनु कारण छे परन्तु धामधुम मोक्षनो कारण नथी माटे पौद्गलीक इच्छा-छोडी यत्नपूर्वक जिनाज्ञा सहित यात्रा करवी जोइये.

मंदिर उपाश्रय अधिकार.



दोहरा

मंदिर श्री वीतरागना, करे जो तेहनी सार,
जीर्णोद्धार करावता, पामे भवनो पार. १
कलिकाळमा मोटको, भविजनने आधार,
जिन प्रतिमा जिन सारिखी, कही ते सूत्र मोझार २
श्रावक मळी पोसह करे, पौषध शाळा नाम,
चाहे कहो उपासरो, उपासकनो काम. ३

(ढाल २४ मी).

देशी पूर्ववी.

अष्टापदनी उपरे, आदीश्वर हो ! पहोंच्या निर्वाण,
चैत्य बनाव्या तेहना, शक्रेंद्र हो ! रत्नोना जाण. सु० १

ए अधिकार आगम तणो, जंबुद्वीप हो ! पन्नति जाण,
ते परपरा आज छे, शुद्ध श्रद्धा हो ! राखे चतुर सुजाण. सु० २
राजा राणी शेठीया, भक्ति भावे हो ! दणो धर्मनो राग,
चैत्य बनावे नवा नवा, बिंब थाप्या हो ! लीधो स्वर्गनो मार्ग सु० ३
देहरानो खरचो नहीं, पोते हो ! करता जीर्णोद्धार,
ताळा कुची रहेता नहीं, नहीं हो ! गोठी मजुर प्रचार. सु० ४
श्रावक पोते पूजता, करता हो ! ते सार सभाळ,
पडतो काळ आरो पाचमो, पड्या हो ! केइ काळ दुकाळ सु० ५
चैत्यवास साधुए कर्यो, श्रावके हो ! छोडी सभाळ,
जरुर पडी मोटा द्रव्यनी, श्रावके मळी हो कर्यो एकठो माळ. सु० ६
तेनु नामज पाडीयु, देव द्रव्य हो ! ग्रथे कर्या लेख;
भडार बनाव्या जुजुआ, करे हो ! एक बीजाने देख सु० ७
जेम जेम द्रव्य वधतो गयो, तेम तेम हो ! वधे अधिक क्लेश,
घरेणा दागीना प्रभुने वध्या, तृष्णा हो ! वाधे हमेश सु० ८
पडतो काळ थाये चोरीओ, लडे झगडे हो ! माया मस्तान,
ताळा कुची वीतरागने, चलावी हो ! वाणिके दुकान सु० ९
मदीरने उपाशरा, मोक्ष कारण हो ! भाख्या वीतराग,
ते कारण कर्यो अन्यथा, शासनने हो ! लगाव्यो दाग. सु० १०
एक मदिरनी आशातना, बीजे मदिरे हो ! द्रव्य रहे अनेक,
एक बीजाने आपे नहीं, कोई देवे हो ! उपर लखावी लेख सु० ११
व्याज लेवे आकरु, पाछा हो ! आप आटले काळ,

मुदत उपर नहीं मळे, तेना हो ! प्रभु सुणो हेवाल. सु० १
त्रष्टीओ कोरट चटे, देव नामे हो ! माडे फरीयाद,
दिगंबर श्वेतांबरा, माहो माहे हो ! मुकी मर्याद. सु० १
झघडातो घरना होवे, नाखे हो ! मंदिरमा आप,
देव द्रव्यने वापरे, कोरटे चडे हो ! करे मोटु पाप सु० १
ममत्वना मदिर बन्या, अवदनीक हो ! कहे आगम आप,
अवदनीकने वादता, आज्ञा भागे हो ! लागे मोटु पाप. सु० १
देव द्रव्यनी वार्त्ता, सुणो हो ! प्रभु वणिकना काम,
शेर लेवे मीलो तणा, व्याजे धरे हो ! बेंकोमा दाम सु० १
मोटा आरभ मीलो तणा, श्रावकने हो ! कह्यो कर्मादान;
भाग घाले वीतरागनो, ए छे हो ! कलियुगना नाण. सु० १
दुकान मकान वधावीने, माडे देवे हो ! करे वेपार,
शु भगवान भुखे मरे, के पाळवो हो ! तेने परिवार; सु० १
जीर्णोद्धारनी टीपणी, मडावे हो ! फरे गामो गाम,
खरच आवक केटली थई, हीसाब हो ! जाणे आतम राम. सु० १९
टेक्स पडे गृहस्थ उपरे, धर्म छोडी हो ! अन्य धर्म जाय,
निर्धनता अज्ञानता, विना खर्चे हो ! धर्मे पेसी आय सु० २०
पेढी चलावे देवनी, व्याज वटो हो ! राख्या मुनिम,
केई बेंको वाणीया, खाई गया हो ! जेनी नही सीम. सु० २१
जीर्णोद्धार करे नहीं, नवा मंदिर हो ! करे पोताने नाम,
मोटा आरंभ अन्यायनुं, नही खपे हो ! देवद्रव्यमां दाम. सु० २२

न द्रव्य वधारवा, ज्ञानोपकरण हो ! स्वपरना सुणो स्वाम,
ह गौतमथी नहीं टळे, करी देवे हो ! बधानु लीलाम. सु० २३

ळा पहेरावे पैसा लुटवा, अधिक हो ! एक एकनु मान,
व बापडा शु करे, जेवा गुरु हो ! तेवा जमान. सु० २४

हेला पर्व आराधता, हमणा हो ! करे वेपार,
द्रव्यनु शु होवे, सुणजो हो ! तेना समाचार. सु० २५

पडा तो आखा वर्षना, काढे हो ! पर्युषण काल;
र्वे व्याख्या क्या रही, माहो माहे हो ! आवे गालमगाल सु० २६

नाम कीर्त्ति अभिमानथी, बोली बोले हो ! बीजो लेवे तोड,
वाजा वागे रण तुरना, ईनत राखे हो ! नहीं शके छोड सु० २७

ज्यारे पैसा देवा पडे, वावा काढे हो ! वळी अमुका एम,
कोरट चडे घरणा देवे, फजेती हो ! वळी करे तेम सु० २८

देव ज्ञान द्रव्य तणा, पोतु राखे हो ! केई गृहस्थी पास,
पोते पैसा वापरे, काम काचो हो ! होवे देवद्रव्य नाश. सु० २९

प्रवृत्ति चैत्यवासी तणी, सत्यविजये हो ! बधी दीधी छोड,
यतिये मळी सरु करी, हजी सुधी हो ! नहीं सके तोड सु० ३०-

निषेध नहीं विधि तणो, अविधिए हो ! लागे मोटु पाप;
केटलु लखु मारा बापजी, नहीं छानु हो ! बधुं जाणो आप सु०३१

ढाळ २४ मी—भगवानना देरासर खरेखर मोक्षना दातार छे अने तीर्थ के देरासरनो रक्षण करे छे ते शासनना रक्षण करवा जेवु

छे, कलीकाळमा देरासरो कल्पवृक्ष तुल्य इच्छित सुखना देवावाळा छे परन्तु जे मन्दिरोने नामे लडवु, जगडवु, के ममत्व भावथी अपणायत करवु, ए दुःखदाई थई पडे छे, माटे तेने त्याग करवु.

ढुंढक अधिकार.

दोहा

सवे ढुंढकनी वारता, लखता न चाले हाथ;
मुलज कापे वृक्षनु, तु जाणे जगनाथ. १
जिन आगम जिन प्रतिमा, कलियुगमा आधार;
जे उत्थापी लुंपके, सुण तेना समाचार. २

ढाल २५ मी उपरनी.

अमदावाद गुजरातमा, लुपक लहियो हो ! लखे जैन सिद्धात,
पापाचारी जाणी करी, काढी मुकयो हो ! सघ मळी एकात सु० १
विरुद्ध उपदेश सुणावता, हिंसा हिंसा हो ! पूजा जातरा स्थान,
उदय कर्मना योगथी, वे त्रण हो ! मळीया अज्ञान. सु० २
बकरीने गया काढवा, घरमां पेठो हो ! मोटो सिंह;
खडन तो हिंसा तणु, आगम हो ! लोप्या अविध. सु० ३
लिंग तो राख्यु जैननु, श्रद्धा हो ! थइ विपरीत,
लवजीथी ढुंढक थया, तोडी हो ! लुंपकनी रीत. सु० ४

अधश्रद्धालु अज्ञानथी, गडबड हो ! चाले लोटमलोट;
जिन प्रतिमा जिन सारिखी, उत्थापे हो ! सिद्धश्रीमा खोट सु० ५
वंध्या पुत्र जेम बापडा, बाह्यक्रिया हो ! करे बक जेम बाळ;
सूत्र सुयगडांगमां कह्यु, आज्ञा बहार हो ! वधु आळ पपाळ. सु० ६
आहार वस्त्र पात्र तणा, स्थानक तणा हो ! सेवे दोष अपार,
कमती नहीं काई वातनी, उपर ल्ख्या हो ! बधा समाचार. सु० ७
प्रतिमा पुजा कारण मोक्षनु, भाख्यु हो ! बीजे उपांग,
प्रत्यक्ष पाठ मरोडता, लाग्यो हो ! कुगुरुनो रग सु० ८
अनेक श्रावक श्रावीका, द्रव्य भावे हो ! पूज्या जिनराज,
खुल्ला पाठ आगम विषे, उत्थापे हो ! नही आवे लाज सु० ९
सर्व आगम उत्थापीने, बत्रीस हो ! राख्या प्रमाण,
ते पण माने मूळने, काम पडे हो ! तेमा खेंचाताण. सु० १०
नंदी सूत्र बत्रीशमा, आगम हो ! तोंतेर (७३) नाम;
चौद हजार प्रकरण कह्या, मूळ पाठे हो ! नहीं माने श्याम सु० ११
पंचांगी कही मानवी, समवायांगे हो ! भगवती मोझार,
मोळा पड्या ते भर्मंमा, तेथी वधे हो ! अनत ससार. सु० १२
दिन भर मोढु बाधवु, कुलिंग हो ! लागे मिथ्यात्व,
भक्षा भक्ष टाळे नहीं, नहीं टाळे हो ! कोइ कुळने जात सु० १३
वासी पाणी सचित होवे, लावे हो ! भरीभरी लोट;
उपाधि राखे घणी, देवे हो ! गृहस्थ शीर पोट सु० १४
साधु नामे स्थानक बंधावता, ताळा कुची हो ! करे सार समाळ;

आहार पाणी साधवी तणा, भोगवे हो ! अज्ञानी बाळ. सु० १५
पडिकु ठकुल वरजीओ, दश वैकालिक हो ! पाचमे अध्ययन;
दड कह्यों निशीथमां, सर्व भक्षी हो ! नहीं लेन अलेन सु० १६
सुवो सुतक गणे नहीं, नहीं गणे हो ! नारी रुतु धर्म,
लोक विरुद्ध आचरण करे, केइक करे हो ! छाना कुकर्म. सु० १७
चेला लेवे मूल्यना, नानी उमरे हो ! पोते करे सभाळ,
टोळे टोळे निंदा करे, लडे झघडे हो ! केइ विकराळ. सु० १८
जीव अजीव पर्यायतणा, आठ छ कोटी हो ! केइ पथापथ,
केइ कपडा काळा करे, बुगला हो ! केइ वाजे संत सु० १९
क्रिया कल्प पुस्तक बाधीने, धर्या हो ! भडार मोझार,
शील धर्युं छे पेटीमा, ज्या त्या हो ! करे भ्रष्टाचार सु० २०
देशमाथी नीकळ्या, उत्कृष्ट हो ! परदेशी नाम,
माया अधिकी केळवे, हु जाणु हो ! सौ तेहना काम. सु० २१
स्थानक छोडी नीकळ्या, भाडे हो ! लेवडावे मकान,
के ग्रहस्थी रहेवासनु, खाली करे हो ! फोकट तोफान सु० २२
अथवा गृहस्थी भेगा उतरे, महिला परिचय हो ! रहे हरदम,
पुत्र तो लेवाने गइ, खोइ बेठी हो ! पोतानो खसम (पति) सु० २३
तपसी नाम धरावीने, पीवे हो ! अडधी वलोई छाश,
मोटा मोटा कागळ लखे, स्वामीए हो ! कीधा छे मास छमास.सु० २४
धोवण पीए दूधनु, घणी धोई हो ! साकर रहे साथ,
खाटु मीठु अथवा राखनु, शु लखु हो ! जाणे जगनाथ सु० २५

बेले बेले एकातरे, पारणे हो ! नहीं सतोष,
विगय माटे ममता फरे, लावुं खावु हो ! असमाधि दोष सु० २६
खट पट घणी छानी करे, गृहस्थी हो ! रहे आधिन;
पुस्तक चेला लेवे मूल्यना, सिद्ध साधक हो ! भलया प्रवीण, सु० २७
मोटा दोष साधु सेवता, गुपचुप हो ! घरमा दे ढाक,
लेण देण समाचारनी, गृहस्थ नामे हो ! चलावे डाक. सु० २८
पूज पुजने पग धरे, गाममाहे हो ! नीची राखे दृष्टि,
विहार करे दश कोशनो, मायाचारी हो ! ज्ञानी कह्यो भ्रष्ट सु० २९
व्याकरण व्याधिकरण मानता, सस्कृतनो हो ! उलटो करे अर्थ,
सूत्र उत्सूत्र जाणे नहीं, लोपे हो ! केई ग्रथाग्रथ सु० ३०
टोले टोले श्रद्धा जुदी, जुदा जुदा हो ! सहुना ए धाण,
एक बीजाने उत्थापता, निंदा करे हो ! माडी खेंचाताण सु० ३१
म्लेच्छपणु राखे घणु, मलमूत्रनी हो ! नहीं राखे शुद्ध,
शासनने निंदावता, विपरीत हो ! आचरण बुद्ध सु० ३२
केटलु लखु बापजी, लीला हो ! तेनी अपरंपार,
केटलेक अशे मुझने, एनो हो ! मोटो उपकार सु० ३३
ते कारण लखवु पडयु, ढुढकनो हो ! प्रभु करो उद्धार,
जिनागम जिन प्रतिमा, वादी पूजीने हो ! तरे ससार सु० ३४

ढाळ २५ मी—केश (बाल) ने बदले माथे (शीर) काटवु ए केवल मूर्खाई जेवु छे अथवा अविधियी हिंसा थाती जोईनेज तेओ पोकार करता होय तो तेओने विधि पूर्वक प्रभुनी भक्ति करे

तो कोण रोके छे परतु आ समे राग द्वेप करवा के जिनागमोने छोपवा एतो मोटु पाप बंधननु कारण छे माटे तेओने दीर्घ दृष्टि थी विचारवु जोइए

तेरापंथी अधिकार.



दोहरा.

प्रतिमा उत्थापी ढुंढके, माने दया और दान,
अढारे पद्रोतरे, भीखम उदय अज्ञान.
प्रतिमाने पत्थर कहे, वीर प्रभु गया चुक,
पाप कहे दया दानमा, अज्ञानी बेवकुफ.

(ढाल २६ मी.)

देशी उपरनी.

तेरापथीनी वारता, लखता हो ! दु.ख आवे अथाग;
शासन चद्र जेम उजळु, पथीडे हो ! लगाव्यो दाग सु॰
दया दान जड जैननी, जेमा हो ! बतावे पाप,
श्रावक बटको (टुकडो) झेहरनो, आज्ञा बहार हो ! धर्म दीधो थाप. सु

मळतो जीव बचावता, वध्यो केवे हो ! अनत ससार;
जीवमार्या पाप एक छे, बचावता हो ! कहे लागे अढार सु

धर्मरुची करुणा करी, बचायो हो ! पारेवो शांतिनाथ,
नेमजी जीव बचावीया, नाग बचाव्यो हो ! श्रीपार्श्वनाथ सु० ४
पथी साधुने फासी देवे, पथणीयोंथी हो ! सेवे अत्याचार,
बळती गायो ए ऋणने, बचावता हो ! कहे पाप अपार सु० ५
सर्व जीवोनी रक्षा कर बीजे अंगे हो ! भाख्यु भगवान;
पहले शतक शतक आठमे, भगवती हो ! देखीलो प्रमाण सु० ६
पथी साधु छोडीने, कोई देवे हो ! बीजाने दान,
डुब्यो कहे ससारमा, जुओ हो ! दुष्टोनु अज्ञान सु० ७
वरपीदान जिनवर देवे, ते वखते हो ! नहीं पथी साधु;
पकडयु पूछ गद्धा तणु, लातो खावे हो ! करे हठवाद. सु० ८
अभग द्वार गृहस्थी तणा श्रावक हो ! होवे चित्त उदार;
विमुख कोई जाये नहीं स्थानांगे हो ! भाखे पुण्य अपार सु० ९
बीजा दशमां अंगमां, निषेध हो ! कोई सावध दान,
चोरी लागे वीतरागनी, निन्हव हो ! नहीं छोडेमान सु० १०
भगवती पाठ बतावता, उपासकनु हो ! लेवे जुठ नाम,
अन्य तीर्थने गुरु जाणीने, देता हो ! लागे पापनु ठाम सु० ११
अबड श्रवक सो घरे, पारणु हो ! करे वीरना वेण,
दान दइ श्रावक तरे, नहीं देखे हो ! जेना फुट्या नेण सु० १२
प्रदेशी राजा थयो, केशी श्रमणे हो ! दीधो प्रतिबोध,
दानशाळा चोथा भागनी, धर्म धारी हो ! करे घणी शोध सु० १३
सतियो लावे गोचरी, जमाडे हो ! गृहस्थी पेरे साधु,
भक्षा भक्ष गणे नहीं, पुदगलानदी हो ! पड्या जीभने स्वाद. सु० १४

पडदे बेठा पूजजी, साध्वीओ हो ! रहे पडदा बीच;
भोजन नव नवी जातना; अघारे हो करे आखो मीच सु० १५
शु लखु कर्म विडबना, शुं लखु हो ! पंथणीओना काम
दुराचार वध्यो घणो, नहीं छानु हो ! जाणे आतमराम सु० १६
पूछे साधुने शु खाशो, दूघ दहीं हो ! घी मीठाइ माल,
ग्रहस्थी आगळ कहे पूजजी, मारा साधु हो ! त्यागी उजमाल सु० १७
आधा कर्मीनी भावना, भरी लावे हो ! जेम पातरा पूर,
काचुं पाणी राखोडी तणु, माल खाइ हो भ्रष्ट होवे कूर सु० १८
खोटी करे प्ररुपणा, निन्हव कह्या हो ! आगमवाद,
लिंग पण जुदो जैनथी, नहीं ग्रहस्थी हो ! नहीं होवे साधु सु० १९
तेरापंथी नाटक वाचजो, जेमा हो ! नहीं होय बाकी कोय;
मोला पड्या छे भ्रममा, पथी उपर हो ! अनुकुपा जोय सु० २०
शीक्षा देदे पुत्रने, नहीं करे हो ! प्रकाशीत पाप,
लोकयुक्ति न्यायथी, एटलु लखु हो ! आगळ जाणो आप. सु० २१

ढाळ २६ मी—बधुओ ! तमारा माटे मने घणीज अनुकपा आवे छे कारण तमे जैन नाम धरावो छो अने जिनाज्ञाथी विरुद्धाचरण करो एटलुज नथी परतु अन्य लोकोमा जैननी दया अने उदारतानी मोटी छाप पडे छे छता तमे दया दाननो निषेध करो छो ए केटली भुल भरेली छे परतु ज्यारे निर्णय बुद्धिथी विचार करशो ते तमने सत्य मार्गनी प्राप्ती थासे माटे पक्ष छोडी न्यायनो रस्तो लेवो जोइए.

उत्सर्ग अपवाद अधिकार.

दोहरा.

उत्सर्ग मार्ग ओळखे, जाणे द्रव्यादि काळ,
एकात खेंचे तेहने, ज्ञानी कहे छे बाळ १
त्रणे फीरका एम कहे, हमणा पाचमो काळ,
अपवाद मार्ग चालशु, उत्सर्ग शके न पाळ २

(ढाल २७ मी).

देशी उपरनी

उत्सर्ग मार्ग राखवा, कारण पामी हो सेवे अपवाद,
ते कारण मट्या पछी, नहीं सेवे हो ! श्री वीरना साधु सु० १
नाम लेवे अपवादनो, मद सघयण हो ! पचम आरो तेम,
ते कारण पळे नहीं, लेख्यु हो ! आगममा जेम सु० २
इद्रिय पोषण कारणे, लेवे हो ! अपवादनु नाम,
छती शक्ति खप करे नहि, सुख शीलीया हो ! करे एशआराम सु० ३
जैन कहे आरो पाचमो, अन्य लोकोने हो ! केम चोथो कहाय,
शीतोष्ण वनवासमा, नहीं वस्त्र हो मळे तो रहेवाय सु० ४
रेहवु तो रग महेलमा, खावाने मीले हो चगा (पुष्ट) माल,
गप्पा सुणवा ग्रहस्थी मळे, वस्त्र हो ! मळे सुकुमाळ सु० ५

जगलमा लेता आतापना, तपस्या हो करता छ मास,
पडिमा अभिग्रह धारता, अपवादे हो ! करे उपवास. सु० ६
घर घणा गोचरी तणा, नित्य पिंड हो दोषिलो खाय,
नव कल्प विहार करे नहीं, उपाधि हो ! मोटी पोठ बंधाय सु० ७
विहार करे वेळा उठीने, पोटळीया हो ! राखे मजुर,
पगचपी करावता, मर्यादा हो ! जे मुकी दूर. सु० ८
शतक आठ उद्देशो छठो, कारण विना हो ! सेवे अपवाद,
सहाय देवे कोई तेहने, बने चोर हो ! मोटी पडे खाद. सु० ९
ग्रहस्थ करता तो भला एमे, बोले हो ! पास त्या एम,
नाम साहुकार करे चोरीओ, अधिक हो चोरोथी तेम. सु० १०
पगे पहेरे मोजा मोजडी, शक्त असक्त हो ! नहीं विचार,
घडा उपाडे ग्रहस्थीओ, दश वैकालिके हो ! लागे अनाचार सु० ११
ग्रहत्कल्पे दिक्षा समे, प्रश्न व्याकरण हो दसमे अध्ययन,
चौद उपकरण साधुने, वधता जावे हो ! दिनने रेन (रात) सु० १२
जबरजस्ती दिक्षा नहीं, कोण देवे हो ! जबरीथी आप;
जो पळे ते आदरो, नहीं तो पालो हो श्रावक व्रत जाण सु० १३
आराधक श्रावक होवे, पनर (देशविरति लो) भवे हो पामे निर्वाण,
विराधक साधु होवे, केटला भव हो नहीं परिमाण. सु० १४
नाम लइ अपवादनु, वेप माहे ! सेवे अनाचार,
शासन कलक लगावता, दुर्लभ बोधि हो ! अनंत ससार सु० १५
उत्सर्गमा अपवादनी, कमल प्रभ हो ! सूरिए कीधी थाप,
महानिशीय पाचमे, अनत ससारी हो भाख्यो श्री आप; सु० १६

सयम पूरो न पळे, नहीं पळे हो श्रावक वृत बार,
शासननी सेवा करो, पामे हो ते भवनो पार सु० १७

ढाल २७ मी—मात्र पाचमो आरो मंद सहनन अने देश-कालनु नाम लइ छुटवानो नथी पण यथा शक्ति खप करी अमूल्य मनुष्य जन्मने सफळ करवानु छे

पासत्था अधिकार



दोहरो

पास त्था कुदर्शनी, कुलिंगी भ्रष्टाचार,
गुरु जाणी वदन करे, रुले अनत ससार. १

(ढाल २८ मी)

देशी उपरनी

पासत्थाने वादता, कर्म बाधे हो । कह्यो आगमसार,
आहार पाणी साधु देवे, दड कह्यो हो । निशीथ मोझार सु० १
पासत्थानी प्रशसा करे, परिचय करी हो । देवे आदरमान,
वस्त्र पात्र देवे वाचना, दड कह्यो हो । श्री वीरनु ज्ञान सु० २
पासत्थाने कुशीलीया, उसन्ना हो । नित्य पिंडिया होय,
गामनगर पडोलीया, ससक्ता हो । मन खडीया जोय सु० ३

पासणीयाने कथा ग्या, ममईया हो ! निन्हव जोय,
आभोगीया किल्बेषीया, बहु रुपीआ हो ! निमीतिया होय. सु० ४
कुतुहल काम कीडीया, चारण जेम हो ! जस बोले कोय,
केइ दास ग्रहस्थी तणा, एटला हो ! अवदनीक होय. सु० ५
सर्प अग्नि विष, सेवता, शस्त्रथी हो ! मरे एकजवार,
कुगुरु तेथी अधिको कह्या, भमाडे हो ! अनती वार. सु० ६
पाच छ सात आठ नव, नवनवो हो ! दुर्गति जावे अक,
आचारजने चौ सघना, महानिशीय हो ! तुमे वाचो निःशक.सु०७
सजम पुरोनवी पळे, रुडो कह्यो हो ! प्रभुए ग्रहस्थावास,
उभय भ्रष्ट महापापीआ, करे हो दुर्गतिमें बास सु० ८
यतिपरिग्रह धारी हुआ, तो पण हो ! रही करामात,
जोतिष वैदिक निमीतथी, शासन कार्य हो ! केइ कीधा हाथ सु० ९
साचा रह्या लगोटना, काम पडे हो ! बताव्या हाथ,
सूत्र सिद्धात लख्या घणा, हुआ हो राजा राणीना नाथ (पूज्य)सु० १०
पासत्थानी प्रशसा नहीं, गुण लीधा हो जे जाणी सबध,
हमणाना साधुनी वारता, तेहनो हो ! प्रभु सुणो प्रबध सु० ११
पेट दु खे पोता तणु, डाक्टर हो ! आवे हकीम;
रुपिया देवे फी भरे, विद्वानोनी हो ! आवी छे सीम सु० १२
दीक्षा देवी शिष्यने, ब्राह्मण हो ! बोलावे मुहुर्तकाज,
लघुता लागे लोकमा एवा गुरुथी हो ! केम सुधारे समाज. सु० १३
आगम लखवु जाणे नहीं, जे जाणे हो ! ते करे प्रमाद;
रुपिया देवे वाणीया, कोण करे हो ! पुरुषार्थ साधु सु० १४

यतिने पासत्था जाणीने नहि करी हो ! सघे सार समाळ,
एवी रीते हवे पासत्था तणी, करता हो केवाथासे हाल सु॰ १५
पुरुषार्थ रह्यो नहीं, नहीं रही हो ! कोई करामात,
रोटी मळवी मुश्केल थशे, नहीं छानु हो ! तुं जाणे तात. सु॰ १६
थोडु लख्युं घणु जाणजो, मारा साहेब हो ! तमे चतुर सुजाण,
कांप करशे मेसर वाचता, पासत्था हो ! ते लेजो पीछान. सु० १७
पक्ष करी पासत्था तणो, सुमतिनागीलनो हो ! जुओ अधिकार,
महानिशीथ चोथे कह्यो, रुल्या हो ! अनत ससार सु॰ १८
पक्ष छोडी पासत्था तणो, पुरी हो ! करशे पीछान,
ते तुज चरणे आवशे, देजो हो ! प्रभु केवळ ज्ञान सु॰ १९

ढाळ २८ मी—पासत्थाओनी प्रशसाके अलाप सलाप करवानी प्रभुए ना पाडी छे तेनु कारण—जेमके सुशील बेहन जो कदी वैश्यादिना गुणगान करे के तेने साथे परिचय राखे तो लोकोमा ते सुशीला पण निंदानो पात्र थई पडे तेम गलाचार वाळा मुनिके श्रावक वर्ग पासत्थाओना परिचयथी पोते निंदाना पात्र थाय छे अने पासस्थाने बहु मान मळवाथी उचरिने पोपण थाय छे एटला माटे पासत्था थावाज न देवा जोईए कदाच कर्म योगे थाय तो पछी सब तेने आदर न करे तोज शासनने हितकारी थाय

श्रावक अधिकार.



दोहरा.

जिन शासन भूपण समा, दीपावे जैन धर्म;
जीवादिक नव तत्वना, साचो समजे मर्म १
दयादान उदारता, हृदय स्फाटिक समान,
जिनवर पूजे भावथी, श्रावक गुणनी खाण २
रसीया जैन सिद्धातना, नवी नवी धारे वात;
एक तरफ साधु उपासका, एक तरफ जनकने मात ३
आलभिक तुगीया तणा, शख पोख्खली सार;
आनदादिक मोटका, एक लख गुण सठ हजार. ४
श्रीमुख वीरे वखाणीया, मडुकने कामदेव;
दृढ श्रद्धा वीतरागनी, सदा करे गुरु सेव ५
मात पीता सरखा कह्या, ठाणांगे उजमाल,
भगवती शतक सोळमे, कह्या रत्नोनो माळ. ६
जेवा साधु तेम श्रावको, शासन तुज जयवत,
वर्त्तमान वीतक लखु, सामळ महिमावत. ७

(ढाळ २९ मी.)

देशी उपरनी

श्रद्धालु श्रावक घणा, राखे हो ! शासनथी प्रेम,
जाणी अभ्यतर आतमा, रुडा पाळे हो ! लीधा व्रतने नेम सु० १
बहु रत्ना वसुधरा, नहीं करे हो ! खाली डफाण,
हमणा श्रावकनी वारता, सुणीये हो ! प्रभु दै ध्यान सु० २
जेवी दशा साधु तणी, तेवी हो ! श्रावकनी जाण,
मेला हृदय मायाऽणी, सब्रमा हो ! माडी खेचा ताण. सु० ३
श्रद्धा छोडी देवनी, सरागी हो ! पूजे देवी देव,
मिच्छामि दुककड कुपारनु, पाखी चोमासी हो ! देवे नित्य
नित्य मेव सु० ४
देव द्रव्य गणे सुखडी, ज्ञान द्रव्य हो ! गाठे करी जाय,
हिसाब किताब जाणे रामनी लागी हो ! जळमाहे लाय सु० ५
भक्षाभक्ष आरोगता, होटलमा हो ! पीवे चाहने दूध,
आचार डुब्यो जैननो, मोह ऽाक्या हो ! नहीं रहे शुद्ध सु० ६
स्वगच्छनो पासत्थो हुवे, वडे पूजे हो ! करे बहुमान,
परगच्छनो गीतार्थ होवे, क्रिया पात्रनो हो ! करे अपमान सु० ७
ध्वजा पताका सम बनी, पवन जेम हो ! फरी जाये आप,
मोढु देखी टीलु करे, जुठी साची हो ! करे आपणी स्थाप सु० ८
पक्ष करे पासत्या तणो, ठेवे हो ! शीथिळने सहाज,
अवगुण गुण जाणे नहीं, एम बगडी हो ! आ जैनसमाज सु० ९

धर्मी नाम धरावता, केइ हो ! करे अत्याचार;
जैन निंदावाने जनमीया, मळ्यो हो ! बहुळो परिवार. सु० १०
स्वामी वात्सल्य नामथी, माल पाणी हो ! उडावे खुब;
स्नान करे भागो पीवे, चोथु व्रत हो ! भागे बेवकुफ. सु० ११
स्वामी वात्सल्य कर्यो पोखली, पोपध शाळाए हो ! करे धर्मने पुष्ट,
माल खाई धर्म नहीं करे, कृतघ्नी हो ! वळी कह्या दुष्ट सु० १२
लुद्धडा कह्या, गुरुगमथी हो ! जाणे आगम रहस्य;
प्रश्न पूछी निर्णय करे, जाण पणुं हो ! करे विशेष सु० १३
पोते पंडित बनी रह्या, स्वच्छंदे हो ! वाचे ग्रंथाग्रंथ,
आज्ञा नहीं वीतरागनी, अर्थ तणो हो ! करे अनर्थ सु० १४
पोते पड्या प्रमादमा, गोठी पासे हो ! पूजावे देव;
भक्ति आशातना कोण गणे, पैसा खातर हो ! करे नित्य सेव सु० १५
प्रभु पूजा करे नहीं, करे तो हो ! न जाणे विधि,
उपदेश सुणे नहीं कानमा, पोते हो ! बनी बेठा सिद्ध सु० १६
स्नान करे मंदिर माहे, वापरे हो ! अणगळ्यो नीर,
नीलण फूलण कोण गणे, कोण गणे हो ! त्रस जीवोनी पीड सु० १७
पोते तन पोषण करे, लगावे हो ! साबु भेठ ने तेल,
कपडा धोवे मोझो करे, शु लखु हो ! भरतना खेल सु० १८
दाढी मुछ जमावता, तिलक करता हो ! लागे घडी एक;
प्रभु पूजा करता थका, पाच मिनिट हो ! लागे विशेष. सु० १९
दशत्रिक कोण साचवे, अभिगमनी हो ! क्या रही वात;

चोराशी आशातना कोण गणे, काम पडे हो ! आवे चाथम चाथ.
सु० २०

फेंटा टोपी सुथण पेहरीने, जुला उतरी हो ! लकडी लेइ जाय,
क्रोध करे गाली देवे, पुजा करता हो ! रागद्वेष कराय सु० २१
रोशनी करे रातना, मंदिरमा हो ! लेवे भक्तिनु नाम,
अणगणता त्रस जीवना, प्राण जाये हो ! जुओ वणिकना काम सु० २२
आणा नहीं आगम तणी, चैत्यवासी हो ! नचाव्या नाच,
इंद्रिय पोषण कारणे, नहीं करे हो ! गाडरीया जाच (शोध),
सु० २३

गाममा गुरु वदे नहीं, दृष्टिरागी हो ! जाये सो कोश;
चोमासामा फरता फरे, आज्ञा मागे हो ! नहीं गणे दोष सु० २४
मोटा मोटा आरभ करे, करे हो ! विश्वासनो घात,
अधर्मना द्रव्य खर्चीने, निकाले हो ! मोटा सघनो साथ सु० २५
अन्याय द्रव्य भोजन करे, पीवे खावे हो ! चउविध सघ;
हृदय न्याय रहे नहीं, श्रावक साधुनो हो ! जाणो एक ढग सु० २६
दयावत श्रावक रहेवे, चोमासे हो रहे एकज ठाम,
जस कीर्तिना बानेथी, सघ काढी हो फरे गामोगाम सु० २७
वहेला उठे रातना, होवे हो त्रस जीवोनो नाश,
वीर आज्ञा उची धरी, दील माहे हो नहि दयानी वास सु० २८
साधु मरे करे टीपणी, नवकारशीए हो करे नवा नवा माल,
जाणे आव्या मसाणीआ, चेला चेली हो जमे बाळगोपाळ सु० २९

धर्मी नाम धरावता, केइ हो ! करे अत्याचार;
जैन निंदावाने जनमीया, मळ्यो हो ! बहुळो परिवार सु० १०
स्वामी वात्सल्य नामथी, माल पाणी हो ! उडावे खुब,
स्नान करे भागो पीवे, चोथु व्रत हो ! भागे बेवकुफ. सु० ११
स्वामी वात्सल्य कर्यो मोखली, पोषध शाळाए हो ! करे धर्मने पुष्ट,
माल खाई धर्म नहीं करे, कृतघ्नी हो ! वळी कह्या दुष्ट सु० १२
लब्धट्ठा कह्या, गुरुगमथी हो ! जाणे आगम रहस्य;
प्रश्न पूछी निर्णय करे, जाण पणुं हो ! करे विशेष. सु० १३
पोते पंडित बनी रह्या, स्वच्छंदे हो ! वाचे ग्रंथाग्रंथ,
आज्ञा नहीं वीतरागनी, अर्थ तणो हो ! करे अनर्थ सु० १४
पोते पड्या प्रमादमा, गोठी पासे हो ! पूजावे देव;
भक्ति आशातना कोण गणे, पैसा खातर हो ! करे नित्य सेव सु० १५
प्रभु पूजा करे नहीं, करे तो हो ! न जाणे विधि,
उपदेश सुणे नहीं कानमा, पोते हो ! बनी बेठा सिद्ध सु० १६
स्नान करे मंदिर माहे, वापरे हो ! अणगळ्यो नीर,
नीलण फूलण कोण गणे, कोण गणे हो ! त्रस जीवोनी पीड सु० १७
पोते तन पोषण करे, लगावे हो ! साबु भेठ ने तेल,
कपडा धोवे मोझो करे, शु लखु हो ! भरतना खेल सु० १८
दाढी मुछ जमावता, तिलक करता हो ! लागे घडी एक;
प्रभु पूजा करता थका, पाच मिनिट हो ! लागे विशेष. सु० १९
दशत्रिक कोण साचवे, अभिगमनी हो ! क्या रही वात;

चोराशी आशातना कोण गणे, काम पडे हो ! आवे आथम बाथ
सु० २०

फेंग टोपी सुथण पेहरीने, जुता छतरी हो ! लकडी लेइ जाय,
जोर करे गाळी देवे; पुजा करता हो ! रागद्वेष कराय सु० २१

रोशनी करे रातना, मंदिरमा हो ! लेवे भक्तिनु नाम;
अणगणता त्रस जीवना, प्राण जाये हो ! जुओ वणिकना काम सु० २२

आणा नहीं आगम तणी, चैत्यवासी हो ! नचाव्या नाच,
इंद्रिय पोषण कारणे, नहीं करे हो ! गाडरीया जाच (शोध),
सु० २३

गाममा गुरु वदे नहीं, दृष्टिरागी हो ! जाये सो कोश,
चोमासामा फरता फरे, आज्ञा भागे हो ! नहीं गणे दोष सु० २४

मोटा मोटा आरभ करे, करे हो ! विश्वासनो घात,
धर्मना द्रव्य खर्चीने, निकाले हो ! मोटा सघनो साथ सु० २५

अन्याय द्रव्य भोजन करे, पीवे खावे हो ! चउविध सघ;
हृदय न्याय रहे नहीं, श्रावक साधुनो हो ! जाणो एक ढग सु० २६

दयावंत श्रावक रहेवे, चोमासे हो रहे एकज ठाम,
मम कीर्तिना वानेथी, सघ काढी हो फरे गामोगाम. सु० २७

बैरा वठे रातना, हेते हो त्रस जीवोनो नाश,
वीर आज्ञा उची धरी, दीठ माहे हो नहि दयानो वास सु० २८

साधु मरे करे टीपणी, नवकारशीए हो करे [illegible] मत्र;
जाणे आन्या मसाणीआ, वेश मेली हो जमे [illegible] सु० २९

अठाई महोत्सव मडावीने, पादुका हो ! स्थपावे त्रिव;
रीत करे कल्याणनी, क्या अमृत हो ! क्या रह्यो लींब
(लींबडो). सु० ३०
मदिरमा भगवाननी, मूर्तिओ हो ! मळे पाच साथ,
साधुतणी स्थापना, केटली मळे हो शु लखु नाथ. सु० ३१
मार्गानुसारपणु किहा, किहा हो सम्यक्त्व आचार,
क्या शासन प्रेमी पणु, दीर्घ दृष्टि हो क्या रह्यो विचार सु० ३२
रात्रि भोजन वरजीयु, आगममा हो ! कह्यु मोटु पाप;
सो माहे एसी टका, मळे तो हो ! रात्रे खाय धाप (धापीने)सु० ३३
मीलो जीन चरचा तणा, मोटा आरंभे हो ! करे अत्याचार,
विश्वासघात कुडी साखमा, लाचो लेवे हो ! नहीं शरम लगार. सु० ३४
कन्या वेचे आपकी, दमडालोभी हो ! देवे परणाय,
साठ वरसनो डोसलो, लाडी लावता हो ! नहीं शरमाय सु० ३५
वाडा वाध्या गच्छ तणा, तडा हो ! गामे गाम देखाय,
एक बीजाने जुठो कहे, काम पडे हो ! कोरटमा जाय. सु० ३६
वेश्या बोलावे लग्नमा, वरघोडा हो ! काढे वादावाद,
हारमोनीयम वाजातणा, सुणे हो ! विषयना नाद सु० ३७
पैसा जाये निजतणा, घणा जीवो हो ! बाधे कर्म;
जाण्यो नहीं जिन धर्मने, भोळा हो ! जीव पड्या भर्म. सु० ३८
एक दिनना नाममा, खर्चे हो दशवीस हजार,
स्वधर्मी भूखे जो मरे, कोण राखे हो ! तेनी दरकार सु० ३९

जान जमाडे आवे प्राहुणा, राते राधे हो ! पडे जीव असख्य,
शु केवु ससारनु, स्वामीवात्सल्य हो ! जमे नि शक सु० ४०
बाल नाना परणावता, जाणे हो ! ढींगलानो खेल,
बालविधवा सख्या घणी, वध्यो हो ! अनाचारनु मेल सु० ४१
वासी आहार राखे रातना, जीमे दिन हो ! उनो करी ग्वाय,
शुद्ध बुद्धि रहे केणी रीते, दुढकने हो ! केम आवे दाय सु० ४२
अकबार अरडाटा करे, भाषणे हो ! केई करे पोकार,
जैन कोम कमती तणा, मोटा मोटा हो ! लखे समाचार सु० ४३
पाठशाळा गाम गाममा, स्कुलो हो ! स्थापे अनेक,
केळवणी कुकवा करे, नहीं क्रम हो ! करे देखादेख सु० ४४
व्यवहारिक विद्यामणी, भणे हो ! इग्लीशनु ज्ञान;
भूगोळ खगोळ मणावता, फेल्यु हो ! बहुलु अज्ञान सु० ४५
पाच कलाक अग्रेजीमा, धर्ममा हो ! मळे अर्धो कलाक,
धर्म असर ते केम पडे, श्रद्धा हो ! छेवट जावे थाक सु० ४६
मदिरने उपाशरा, आगम हो ! गणे गप्पा समान,
गुरुने गणे रमतीओ, हम तुम हो ! देव गुरु धर्म, सु० ४७
मात पिताने नहीं गणे, नहीं गणे हो ! केर तोफान,
प्रत्यक्ष प्रमाणज मानता, नास्तिक हो ! केई पड्या भ्रम सु० ४८
पास थयाने पूछता, सोमा हो ! नीकळे दशवीश,
एसी टका अलगा पड्या, नहीं छाना हो ! जाणे जगदीश सु० ४९
स्थिर सूर्य पृथ्वी चले, जीवाजीव हो ! पुण्य पापमा फेर,
पहेलो असर खोटी जमे, बन्ने उद्धत हो नहीं लागे देर सु० ५०

अन्य कोम वधती रहे, जैन कोम हो ! घटती रहे नाथ;
तेना कारण छे घणा, उपर रह्या हो ! आ मेझर साथ. सु० ५१
ज्ञान सिवाय उन्नति नहीं, होवु जोईए हो ! ते क्रमसर ज्ञान,
क्रमसर भणावता, शासनमा हो ! पामे बहुमान सु० ५२
पहेला अक्षर भणाववा, पछी हो ! सख्यानुमान,
पछी धर्म भणावता, पामे हो ! ते सम्यग् ज्ञान सु० ५३
धर्म तणी क्रिया करे, जाणो हो ! ते पुण्यने पाप,
देव गुरुने ओळखे, काम वडे हो ! मडन करे आप. सु० ५४
द्रढ अक्षर जाम्मा पछी, भले भणे हो ! इग्रेजी ज्ञान,
राजभाषा पण शीखवी, जेथी हो ! मळे धर्मने मान सु० ५५
पहेला श्रद्धा पाकी होवे, भले सीखे हो ! मिथ्यात्वी ज्ञान;
नदी सूत्रमा एम कह्यु, सम्यग्दृष्टि हो ! होवे सम्यगज्ञान. सु० ५६
एक उपाय उन्नति तणो, बीजो लखु हो ! आ मेझर साथ,
साधु वर्ग सुधारवो, आ काम छे हो ! श्रावकने हाथ सु० ५७
मुनि वर्गनी उपरे, रह्यो हो ! शासननो भार;
ज्या सुधी ते सुधरे नहीं, त्या सुधी हो ! नहीं थाय उद्धार सु० ५८
ममता छोडे गच्छनी, छोडे हो ! स्थानक धर्मशाळ,
शिष्य तणी छोडे लोभता, चाहा दूध हो ! छोडे भातदाळ. सु० ५९
अधिक उपाधि पोटला, छोडे हो ! पुस्तक भडार,
विचरे देशो देशमा, क्रिया हो ! करे शास्त्रानुसार सु० ६०
गृहस्थनो परिचय तजे, नहीं हो ! कोई राखे पक्षापक्ष,
सत्य मार्ग निःशकथी, वैराग्ये हो ! पोते आतम लक्ष सु० ६१

सम्नेता मळी एकठा सुविहित हो मळे साधु समाज,
समयानुकुळ चालवु नहीं देवो पासत्थाने माज. सु० ६२
मुनि उपदेश श्रावकने करे, श्रावक हो लावे मुनिने ठाम,
बगड्याने सुधारता बाधे हो तीर्थंकर नाम सु० ६३
छती शक्ति खप करो, काई करो हो शासन उद्धार,
मनुष्य जन्म सफल करो, वारंवार हो नहीं अवतार सु० ६४
सात क्षेत्र आगममा कह्या, ज्ञान हो कह्यु सर्वनु मूल,
उत्तेजन दई तेहने मोक्ष जाये हो काढी कर्मशूल सु० ६५
धैर्य गुण धारण करो, मेम्बर वाची हो मनमा करी विचार,
ठीक लागे तो आचरो, दु खथी हो में कर्यो पोकार सु० ६६

ढाळ २९ मी —शासननी अदर श्रावक पण उच्च कोटीमा गणाय छे कारण के छ क्षेत्रने पोषण करवा ते श्रावकथीज बनी शके छे माटे श्रावक वर्गने पोतानो शील, (आचार) न्यायपणु, सत्यता परोपकारता, सर्वजन मैत्रीक भावना अने आत्मदशामा प्रयत्न करी शासन सेवा बनाववा तत्पर थवु जोइए जे अज्ञानवश कोइ स्थले कोइ व्यक्तिमा दुर्गुण जोवामा आवे तो मधुर वचनथी हित शिक्षा आपी गुण वधारवा जोइए परतु अध श्रद्धाथी एक तारे बीजाने डुबी मरवु के कलेश कदाग्रह करवो ते वीर पुत्रोने छाजतो नथी, माटे यथा नाम तथा गुण प्राप्त करवो

आराधिक विराधिक अधिकार.



दोहरा.

जिन आणा विराधतां रुले अनत ससार,
आणा आराधी जे हुआ, शिवरमणी भरतार. १
काळ अनतो हु भम्यो, भवमडलना वीच (वचे)
मुज सरखो पापी नही, नीच नीचथी नीच २

(ढाल ३० मी)

देशी उपरनी

सूक्ष्म निगोदमा हु वस्यो, वादरमा हो वळी काळ अनत,
काळ असख्य सत्व घरे, वनस्पति हो नहीं भवनो अत. सु० १
विकलेंद्रीने भमता थका, असज्ञी हो पचेंद्री मोझार;
संज्ञी पचेंद्रीने घरे, भव कीधा हो गणतरी वहार. सु० २
नर्क तणा दु ख में सह्या, आगमथी हो जाणीये वात,
तीर्यंच पाच प्रकारना, योग नियोग हो जुदी जुदी जात सु० ३
आर्य अनार्य मनुष्यमा बाल तपथी हो सुरनो अवतार,
व्यतर आसुरी कायमा, चउगति हो ! भम्यो वारवार सु० ४
जे सबंधी मुज तणा, गया हो ! प्रभु मोक्ष मोझार,
हु अधन्य अभागीओ, तु जाणे हो ! भव्याभव्य विचार. सु० ५

मनुष्य पणु हवे पामीओ, आर्यक्षेत्र हो ! उत्तम कुळ जात,
चाल अनादिनी मुझ तणी, लखु हो ! संक्षेपे वात सु० ६
बाळपणु खोयु खेलीने, तरुणवये हो ! घणा विषय कषाय;
शुं लखु कर्म विटबना, जुठी हो ! कोइ जाळ रचाय सु० ७
जीवहिंसा जुठु बोलवु, चोरीथी हो ! लीधो परमाल,
रमणीरूपे मोहीयो, परिग्रहे हो ! लेवा उजमाल सु० ८
क्रोधादिक मिथ्यात्वना, सेव्या हो ! अढारे पाप,
कर्मादान न छोडीया बनी बेठो हु पापनो बाप. सु० ९
दुःख गर्भित वैराग्यथी, घर छोडयु हो ! नहीं छोड्यो काम,
स्थानकवासीमें दीक्षा लीधी, पूज्य हो ! श्रीलालजी नाम सु० १०
दीक्षा लेई पूज्यथी, केइ वाच्या हो ! अगोपाग,
विरूद्ध रस्तो जाणीने, छोड्यो हो ! ढुढक सग सु० ११
कारण निमित्त मलु थयु, मानु हो ! पूज्यनो उपकार,
कदाचित बुरो होवे, उपादान हो कारण विचार सु० १२
नगर ओशीए भेटीया, वीर प्रभु हो ! गुरूरत्नना पाय,
समाचारी जुदी जुदी, वाचीने हो जीव अकळाय सु० १३
काइक लीला सामळी काइक हो ! नजरे लीधी देख,
उत्पत्ति जोइ आपणी, वाच्या हो ! प्राचीन लेख सु० १४
पार्श्वनाथ तेवीसमा, शुभदत्त हो थया तेनी पाट,
हरिदत्त आर्यसमुद्रनी, केशीश्रमण हो ! थया चोथे पाट सु० १५
स्वय प्रभ पाट पाचमे, श्रीमाल कीया हो ! पोरवाळ जैन,
छठे पाट रत्नप्रभसूरि उएस पटण हो ! आव्या पचसे लेन सु० १६

उपलदे राज आदि करी, तीन लाख हो ! चोरासी हजार;
पवार राजाना वशमा, हू पण जन्म्यो हो ! आ वार सु० १७
ते उपकार जाणी करी, ते गच्छमा हो कर्यो क्रियाउद्धार,
जाणो छो मुज साहेबा आगळ हो ! आराधक विचार सु० १८
चोथे आरो वीर विराजता, तोपण हो ! नहीं पाम्यो धर्म,
भलो आरे मारे पाचमो, सक्षेपे हो ! जाण्यो धर्मनो मर्म. सु० १९
मुळ उत्तर गुण तणो, देस सर्व ! विराधक होय,
दश प्रकारे आलोचना, लेता हो ! आराधक जोय सु० २०
व्यवहारसूत्र एम कह्यो, साधुने हो ! केइ लागे दोष,
गीतार्थ अथवा चैत्यमा सिद्ध साखे हो ! होवे निर्दोष सु० २१
दर्शन आराधे चरणविराधना, चरण आराधे हो दर्शन विराधक होय,
त्रीजो बन्ने आराधतो, चोथे भागो हो बन्ने विराधीक जोय सु० २२
शुद्ध प्ररूपक जे होये, शुद्ध चारित्र हो शके नहीं पाळ,
काढे दूषण निज तणा, पहेलो भागो हो नहीं मायाजाळ. सु० २३
चारित्र पाळे उजळो, न्युनाधिक हो प्ररूपे जेह,
जमालि जेम जाणवो, बीजो भागो हो थाये जाणो एह सु० २४
शुद्ध प्ररूपे शुद्ध आचरे, गुरू गौतम हो भागे त्रीजो जाण,
हमणा मारा जेवा बाळमा, भागो हो ! चोथो पीछाण सु० २५
न्युनाधिक कोई पद कहे, कहे हो कोई अक्षर एक,
चारित्रथी शीथिल होवे, चोथे भागे हो भव करे अनेक सु० २६
एक बीजाने जूठो कहे उत्सूत्र हो ! बोले करता वाद,
आगम उत्थापे अभिमानथी सत्यने हो ! कहे मिथ्यावाद सु० २७

मेरू जेटला ओवा पातरा, लीधा हो एम वृद्धना वेण,
आराधकपणु आव्यु नहीं, जेथी हो नहीं भवनी चैन सु० २८
चोर करे जो चोरीयो, राजा पासे हो जो बोले साच,
साफ ने माफ मळे सदा, कसोटी हो ! लेवे सोनु जाच सु० २९
एक मारी नहीं विनतीं, विनती हो, करे भरतनो संघ,
आराधक पद दे नाथजी लगावो हो ! प्रभु आपनो रंग सु० ३०
रागद्वेष त्हारे नहीं, तेथी लखु हो ! प्रभु वारवार,
अनतवार आगळ रखी, नहीं सगी हो ! प्रभु गरज लगार सु० ३१
सकीर्णता न करो साहेबा, काइ करो हो ! प्रभु चित्त उदार,
खरच लागे नहीं आपने, मत मुको हो ! मुजने निराधार. सु० ३२
हवे तो पुरो धापी गयो, कटाज्यु हो ! ससारथी मन,
मत तरसावो बापजी, नहीं मागु हो ! कोइ राज के धन सु० ३३
निर्गुणी तो पण आपनो, क्या जाउ हो ! नहीं बीजो नाथ,
अनेक भक्तोने तारीया, हमणा हो ! वारो आव्यो मुज तात
सु० ३४
मेह आवो मेह आवो करे मोरीया, वर्षवु हो ! ते तो ईन्द्रने हाथ,
मारे तो जोर लखवा तणु देवु लेवु हो ! जाणो जगनाथ सु० ३५

ढाळ ३० मी—मारो जीव अनत काळथी ससारमें भ्रमण करतो पण कोइ काले आराधीकपद नथी मिल्यो, आ वखते पण सीमधर स्वामीथी प्रार्थना करी छे जे मीळे ते खरू.

पूर्णता.

दोहरा.

साधु नहीं सौ सारीखा, श्रावक नहीं सब तुल्य,
सामान्य विशेष क्रिया करे, पामी धर्म अमूल्य १
जे कल्प जेमा चले तेनु थाय व्याख्यान,
राग द्वेष करशो नहि, पामी निर्मळ ज्ञान २

(ढाल २४ मी).

देशी उपरनी.

मुख्यतामा ए कह्या, गौणतामा हो ! घणा गुणवान,
तप सयम क्रिया करे, वदना होजो हो ! उगते (माण) सूर्य सु० १
तीर्थोद्धार केइ मुनि करे, केइ करे हो ! आगम उद्धार,
शासन प्रेमी केइ मुनि, केइ हो ! करे क्रिया उद्धार सु० २
श्रद्धालु श्रावक घणा, शासन पर हो ! झाझो प्रेम,
देव गुरू भक्ति करे, रुडा पाळे हो ! लीधा व्रतने नेम सु० ३
जेनामा समकीत वसे, स्वलिंगी हो ! अन्य लिंगी होय,
ते तो जाशे मोक्षमा, ढोंगी हो ! रोलशे जगमांय सु० ४
आणा पाळी शके नहीं, तो पण हो ! काढे निजना दोष,
ते दिन रुडो उगशे, पाळु हो ! सयम निर्दोष सु० ५
समकीत शुद्ध कह्यु तेहनु, आयु बाधे हो ! उंची गति जाय,

ते तुज चरणमा आवशे, मोक्ष देजो हो ! प्रभु महेर कराय सु० ६
पोते पूरु पाळे नहीं, बीजानी हो ! करे निंदा पूर,
भवाभिनदी जीवडा जिन मार्ग हो ! तेथी रहेशे दूर. सु० ७
जो तेने रुचशे नहीं, ते तो हो ! कुडा करशे तोफान,
ते मुजने परवा नहीं, मारे माथे हो ! मोटा भगवान सु० ८
सूई तो जाये शोधवा, नीकळ आवे हो ! मोटा उटना उट,
काने सुणी जुठी होवे, नजरे देखी हो ! नहीं होवे जुठ. सु० ९
कदाचित पासत्था मळी, साचाने हो ! करी देवे जूठ,
पण परभवे छुटे नहीं, परमाधामी हो ! करशे नही छुट सु० १०
मेझर थाचो बापजी, मत देजो हो ! गादी नीचे मेल,
अघारु फेल्यु भरतमा, नहीं हो ! दीवामा तेल सु० ११
तारो हुकम माने घणा, ईंद्रादिक हो ! रहे कोडो देव,
राजा राणा नित्य पूजता, करता हो ! तारा चरणनी सेव सु० १२
कातो मोकलो देवने, नहीं तो हो ! मोकलो समाचार,
मारू जोर लखवा तणुं तु जाणे हो ! प्रभुतारो आचार सु० १३
वेपारी लोकोने पूछीयु, मेझर आगे हो ! नहीं लोकमा रीत,
उत्तर लखजो कृपा करी, बनी रहे हो ! तारे मारे प्रीत सु० १४
सिद्ध क्षेत्रनी यात्रा, कारणे हो आव्यो गुजरात,
सुणवाथी अधिकु देखी, आपथी हो ! नहीं छानी वात सु० १५
मारो हेतु खोटो नहीं, नहीं हो परनिंदाथी काम,
द्वेष बुद्धि मारी नहीं, जाणो हो ! श्री आतमराम सु० १६
जेवो रस्तो कल्पनो, लख्या हो ! मेझरमा जोय,

न्युनाधिक मति दोषथी, मुझने हो ! मिच्छामिदुक्कड होय, सु० १९
संघ रज मुज शीर चडो, हु छोटो हो ! सब चरणोनी रज,
अवगुण भर्यो मुज आतमा, मत जाणो हो ! मुजमा कशु धज सु० १८
मारी मने खबर नहीं, भव्या भव्य हो ! जाणो जगनाथ,
तो पण मन जिम गाजशु, मारे माथे हो ! प्रभु तारो हाथ, सु० २२
हजार दुर्जन नबला होवे, सबळो हो ! होवे एकज नाथ,
कुण गजे तारा दासने, तारे हो ! हजार छे हाथ सु० २३
ज्ञानसुदर गरीबडो, एकलडो हो ! पड्यो तुज पाय,
बीजु शरणु कइ नहीं, मारे तो हो ! तु बापने माय सु० २४
ओगणीसे पचोतरमे, सुखे हो सुरत चोमास,
मेझरनामु शरु कर्यु, पूर्ण कीधुं हो ! सिद्धाचल खास सु० २५

कळश.

सीमधर स्वामी अतर जामी, मोक्ष कामी जग जयो,
आगम सगे, मने चगे, मेझर रगे में लह्यो,
नित्य वाचो हृदय जाचो, श्रद्धो साचो सुखमयो,
रत्नपायो, ज्ञान गायो, सुख सवायो, शिवगयो.

ढाळ ३१ मी—पूर्णतामे बधा साधु के सरखा नथी थात तो पण जे अमूल्य रत्नोनी अदर काचना कटकाने तुरत जुदा पाडवानी जरुरत छे पछे रत्न आप एथी प्रकाश करशे. मारी भावना दर्शावी छे भुलनी क्षमा याचना प्रदान करशे इति.
